बात-विचार

अशोक

बात-विचार

अशोक

BAAT-VICHAR : CRITICISM

BY ASHOK

ISBN : 978-93-82828-10-5

पहिल संस्कारण : 2015

प्रकाशक  : मैलोरंग प्रकाशन, मैथिली लोक रंग
651, चारिम तल, अग्रवाल चैम्बर-III
26, वीर सावरकर ब्लॉक
विकास मार्ग, शकरपुर, दिल्ली-92
mailorang@gmail.com
मो. 09811774106

मूल्य : 150/-

पुस्तक प्राप्ति स्थान : केशव पुस्तक केन्द्र
पुराना पोस्ट ऑफिस रोड
पुनाईचक पटना-23
मो.-9304010596

मुद्रक : सरस्वती प्रेस
सिसोदिया प्लेस, गोरखनाथ कम्पाउण्ड
पूर्वी बोरिंग केनाल रोड, पटना
मो.-9304625963, 8002347276

प्रकाशकीय

मैलोरंग (मैथिली लोक रंग) मूलतः रंग-संस्था रहितो, मिथिलाक कला, संस्कृति ओ साहित्य-केंद्रित कृति सभक प्रकाशन पिछला लगभग एक दशक सँ करैत आबि रहल अछि। मैलोरंगक प्रयास रहैत छै जे एहन कृति, जे एखन धरि अलक्षित अछि, आ जकर ऐतिहासिक ओ दस्तावेजी महत्व छै, आ ओ कोनो कारणे प्रकाश मे नहि आबि सकल अछि, अथवा अतीत मे छपल आ आब अनुपलब्ध भ' चुकल अछि, हर्षक संग प्रकाशित करय।

नाटक संबंधी सामग्री सभक प्रकाशन त' एकर मूल उद्देश्य मे सँ एक छैके। अभिप्राय ई जे नाटक, नाट्य-सिद्धांत, नाट्य-चिंतन, लोककला, लोक-संस्कृति समेत मैथिली साहित्यक विभिन्न विधा; यथा-कथा, कविता, नाटक, उपन्यास, बालसाहित्य, शोध-समीक्षा अनुवाद आदिक प्रकाशन समय-समय पर क' समाजक सोझा प्रस्तुत करब एकर लक्ष्य अछि। अपन एहि लक्ष्य-पूर्तिक दिशा मे मैलोरंग एखन धरि दर्जनाधिक्य पोथीक प्रकाशन क' चुकल अछि, जाहि मे प्रमुख अछि-मैथिली लोकनाट्यक विस्तृत अध्ययन एवं विश्लेषण (महेन्द्र मलंगिया), डाक-दृष्टि (मोहन भारद्वाज), ई भेटल त' की भेटल (तारानंद वियोगी), व्यक्तिवाचक (अशोक कुमार मेहता), माटिपरक लोक आ सुफाटि जतरा, जे हारय से नाक कटाबय (ऋषि वशिष्ठ), छुतहा घैल (महेन्द्र मलंगिया), आब मानि जाउ (अनिल चंद्र ठाकुर), रूपा दीदी (श्याम चंद्र), पुलोमा (श्रीदेव), रावी सँ वागमती

धरि पंजाबी कथाक अनुवाद : (वैद्यनाथ झा), सुरुजक छाहरिमे (मनोज शांडिल्य), महेन्द्र मलंगियाक सात नाटक, अभिनय (विभूति आनंद) आदि।

एहि क्रमक मैलोरंग प्रकाशनक टटका प्रकाशन अछि—बात-विचार। ई आलोचनाक पोथी थिक। एहि मे मैथिली साहित्यक विभिन्न विधा ओ पोथीक ऐतिहासिक-सामाजिक दृष्टि सँ आलोचना कयल गेल अछि। रचनाकार ओ कवि सभ पर लिखल गेल अछि। मैथिली नाटक ओ रंगमंच पर सेहो निबन्ध अछि। अत्यन्त पठनीय एहि पोथीक लेखक छथि प्रसिद्ध कथाकार अशोक।

बात-विचार नामक ई पोथी अपने लोकनिक समक्ष प्रस्तुत करैत अपार हर्ष भ' रहल अछि। विश्वास अछि जे ई पोथी अपन बात-विचार सँ अहाँके सोचबा-विचारबाक लेल प्रेरित करत।

-प्रकाश झा
निदेशक
मैलोरंग प्रकाशन
मैथिली लोक रंग,
दिल्ली

:: अनुक्रम ::

■

सांस्कृतिक उपनिवेशवाद
आ
लोक संस्कृतिक महत्व

कहल जाइत अछि जे विश्व एक ध्रुवीय भ' रहल अछि। एक ध्रुवीय हेबाक निहितार्थ कें अनेक प्रकारें बूझल जा सकैत अछि। ई जँ एक ऐतिहासिक घटना थिक त' राजनैतिक, सामाजिक आ सांस्कृतिक घटना सेहो। सोझ अर्थ मे एहि विचारक हल्ला-गुल्ला सोवियत संघक विघटन के बाद बेसी भ' रहल अछि। त' की ठीके विश्व एक ध्रुवीय अथवा एक भगाह भ' रहल अछि? प्रथम दृष्टियें जँ देखल जाय त' से यथार्थक नजदीक लागि सकैत अछि। से एहि कारणें जे सत्ता आ सामर्थक जे मापदण्ड अछि ताहि हिसाबें अमेरिका आइ मातबर बनि गेल अछि। ओकर प्रभाव विश्व मे जोरगर आ व्यापक भेल अछि। ओकर रूप कारपोरेट संरचना मे निहित छैक। ई आब कारपोरेट कल्चर रूप मे विश्व-बाजार के छापि लेलक अछि। ई व्यापारी संस्कृति मानवीय प्रवृतिक दुर्बलता के नीक जकाँ बूझैत अछि। मनोविज्ञान ओकर व्यवसाय बुद्धिक मुख्य साधन अछि। ई व्यवसायी ओही स्थल पर अपन लक्ष्य करैत अछि आ अपन शिकार मारि लैत अछि। मुदा एहन अभ्यास आ सिद्धि एक दिन मे उत्पन्न नहि भेल अछि। एकर जड़ि बहुत पुरान छैक। ईस्ट इण्डिया कम्पनीक जमानो मे प्रसिद्ध साहित्यकार प्रेमचन्द व्यापारी बुद्धिक एहि सामर्थ के बूझि गेल रहथि।[1] व्यापारी बुद्धिक सैह सामर्थ आइ बेसी भकरार रूप मे नव साम्राज्यवाद अथवा बाजारवादक रूप मे नंगटे नाचि रहल अछि। लेकिन जँ सत्ता आ सामर्थ के सभ दिन चुनौती भेटैत रहबाक परम्परा सत्य थिक त' ओही अखाड़ा मे अमेरिका के सेहो चुनौती भेटब प्रारम्भ भ' गेल अछि। चीन के रूप मे एहने शक्तिक उदय भेल अछि। तें नव साम्राज्यवाद अपनहि अस्त्र सँ अपन कब्र खोधबाक इंतजाम शुरु क' देने अछि।

सत्य पूछी त' जाहि समाजक सामर्थ कम रहैत छै तकरा पर राजनीतिक रूप सँ शक्तिशाली देश अपन संस्कृति के थोपबाक प्रयास करैत अछि। औद्योगिक रूप सँ अथवा आर्थिक रूप सँ समृद्ध देश सम्पूर्ण विश्व मे सामान्य सांस्कृतिक मूल्य आ मानकीकृत सभ्यता निर्धारित क' तकर आधिपत्य कायम करैत अछि। एहि प्रकारक काज के सांस्कृतिक साम्राज्यवादक संज्ञा देल गेल अछि। विद्वानलोकनि एकरा उत्तर उपनिवेशवादक स्थितिक रूप मे देखैत छथि। शक्तिशाली देश द्वारा एहि प्रकारक सांस्कृतिक आधिपत्य कायम करबाक उद्योग कें एक खतराक रूप मे देखल जाइत अछि। से एहि कारणें जे कम सामर्थवान देशक बाजार तथा संस्कृति पर ओहि सँ धक्का पहुँचैत छै। एहि प्रकारक आधिपत्य सँ पारम्परिक सांस्कृतिक मूल्य नष्ट होइत अछि। एहि प्रक्रिया मे साम्राज्यवादी समाजक सामान्य भूमण्डलीय संस्कृति बेसी प्रमुखता प्राप्त क' लैत अछि। एहि सांस्कृतिक एकरूपता सँ विभिन्न संस्कृति समाप्त भ' सकैत छैक आ संसार सांस्कृतिक रूपसँ कम विविध आ कम सम्पन्न रहि जा सकैत अछि। सांस्कृतिक विविधता कें संरक्षित करबाक उद्देश्य सँ सांस्कृतिक साम्राज्यवाद के विरोध जरुरी अछि। ई विविधता अपना आप मे मूल्यवान अछि से एहि कारणें जे ई मनुक्खक ऐतिहासिक धरोहरि एवं ज्ञान के संरक्षित रखैत अछि। संगहि सांस्कृतिक विविधता एक उपकरणक रूपमे सेहो मूल्यवान थिक किएक त' समस्या सभक समाधान मे बहुतो रस्ता उपलब्ध करबैत अछि।[2]

वस्तुतः उपनिवेशवाद, साम्राज्यवादेक एक रूप थिक जाहि मे उपनिवेश बनल देशक सरकार सेहो विदेशी द्वारा चलाओल जाइत अछि। मुदा सांस्कृतिक साम्राज्यवादक लेल आब उपनिवेश बनाएब जरुरी नहि रहि गेल अछि। उपनिवेशवादक उद्देश्य रहैक उपनिवेशक प्राकृतिक संसाधनक दोहन, नव बाजारक निर्माण तथा अपन राष्ट्रीय सीमा सँ बाहर उपनिवेशी सत्ताधारीक जीवन-दर्शनक प्रसार। ई उपनिवेशवाद वर्ष 1500 सँ 1900 ई० धरि कायम रहल। यूरोपक देश सभ अमेरिका, आस्ट्रेलिया, अफ्रीका आ एशियाक विभिन्न देश सभ कें अपन उपनिवेश बनौलक। एहि क्रम मे अपन जनता के ओत' बसाओल गेल अथवा सरकारक नियंत्रण लेल गेल। ई

उपनिवेशक युग क्रमशः द्वितीय विश्वयुद्धक बाद लगभग समाप्त भ' गेल। विद्वानलोकनिक तर्क छनि जे अफ्रीका मे यूरोपीय उपनिवेशीकरणक कारणें बहुतो संस्कृति, विश्वदृष्टि ओ ज्ञान-शास्त्रक लोप भ' गेल। आदिवासी, अफ्रिकन लोकनिक भाषाक स्थान यूरोपियन भाषा ल' लेलक। समाज-सत्ताक सामूहिक मूल्य के अवमूल्यित कयल गेल। परिचिति के विस्थापित कयल गेल। एहि सँ लोकक आत्म-सम्मान कम भेल। आत्म-विश्वास आ क्षमताक प्रति समाज आ व्यक्ति मे सन्देह उत्पन्न भेल।[3]

अपन देश भारतवर्षक सन्दर्भ मे जँ देखल जाय त' कमो-बेस सैह स्थिति अहूठामक कहल जा सकैत अछि। मुदा लगैये जे एहिठाम विभिन्न क्षेत्र मे, विभिन्न भाषायी समुदाय पर तकर प्रभाव भिन्न-भिन्न तरहें पड़ल अछि। जे समुदाय एहि प्रकारक आक्रमण सँ जतेक चेतना सम्पन्न भ' क' लड़ल, जाहि प्रकारक हथियार सभक उपयोग करैत लड़ल से अपनाके ततेक सुरक्षित राखि सकल आ अपना के आगुओ बढ़ौलक। अपन आर्थिक आ सांस्कृतिक विकास क' सकल। सामूहिक चेतनाक निर्माणक क्रम मे एहन भाषायी समुदायक लोक सभ अपन समाजक बहुलतावादी संस्कृतिक मूल्य सँ परिचित भेल। अपन उत्पादक, खेतिहर, श्रमिक, कारीगर, आ सामान्य लोकक सामूहिक चेतना सँ, लोकतान्त्रिक मूल्य सँ, विविधता सँ परिचित भ' आत्मीयतापूर्वक अपन सामूहिक व्यक्तित्वक निर्माण मे, समाज आ संरचनाक निर्माण मे योगदान करब प्रारम्भ केलक। एहि सभ समुदाय कि क्षेत्र मे सांस्कृतिक उपनिवेशवाद कि साम्राज्यवादक खतरा ओहेन महसूस नहि कयल जा रहल अछि जेहेन ओहि समुदाय मे जकर जीवन-शैली आत्मीयता सँ रहित आ कट्टरता सँ परिपूर्ण एक बन्द कोठली मे औनाइत रहल अछि। जत' सभ समस्याक समाधान लेल एक मसीहा, एक अवतारक जरूरति महसूस कयल जाइत अछि ओत' सांस्कृतिक उपनिवेशवाद कि साम्राज्यवादक खतरा बेसी बुझाइत छैक। हमरालोकनि जनैत छी जे सांस्कृतिक उपनिवेशवाद कि साम्राज्यवादक खतरा बाजार आ संस्कृतिक क्षेत्र मे वर्चस्व अथवा आधिपत्यक खतरा थिक। से आधिपत्य उपनिवेशवादक समय मे पाश्चात्य आधिपत्यक छल आ साम्राज्यवादक

समय मे अमरीकी वर्चस्वक अछि। उपनिवेशवादक समय मे जेना समाजक अभिजात्य वर्ग अंग्रजी अथवा अंग्रजियत सँ कट्टरतापूर्वक बचबाक मानसिकता प्रदर्शित केलक से ओकर बन्द कोठली मे औनायबे थिक। एहि मानसिकता सँ प्रतिकार सम्भव नहि अछि। से तहियो सम्भव नहि भेल छल। वस्तुः कट्टरता सँ प्रतिकार कहियो सम्भव नहि भेलैक अछि।

अजुका स्थिति मुदा दोसर तरहक अछि। तैं खतरो दोसर तरहक अछि। आइ 'परधर्मो भयावहक' मानसिकता सँ एकरूपताक संस्कृति सँ एकदमे लड़ल नहि जा सकैत अछि। आइ वर्चस्वक मानसिकता राखि क' सेहो सांस्कृतिक वर्चस्वक अश्वमेघ यज्ञक घोड़ा के पकड़ल नहि जा सकैत अछि। आइ सांस्कृतिक राष्ट्रवादक समर्थक भ' क' सांस्कृतिक साम्राज्यवाद अथवा नव साम्राज्यवादक औजार बाजारवाद सँ नहि लड़ल जा सकैत अछि। कतहु ने कतहु सँ ई अपन सनातनधर्मक ध्वजवाहक मिथिलेशक गौरांग महाप्रभु सँ लड़बाक कल्पना सन लगैत अछि। तैं अभिजात्य संस्कृति जे अपना-आप मे वर्चस्वक संस्कृति थिक, अपना सँ पैघ सांस्कृतिक वर्चस्वक अभियान के कोना रोकि सकैत अछि?

एहीठाम लोक संस्कृति दिस ध्यान जाइत छैक। ओकर महत्व बुझबा मे आब' लगैत अछि। एहि प्रकारक सज्ञान लेल अजुका ई विषय हमरा एक सुखद घटना सन बुझि पड़ैत अछि। हमरालोकनि लोक-साहित्य आ लोक-संस्कृति दिस ध्यान द' रहल छी से महत्वपूर्ण बात थिक। मुदा महत्व देबाक महिमा पर सेहो कने विचार क' लेबाक चाही। आइ धरि जे काज सभ भेल अछि से बहुलांश मे अपने महिमा बढ़ेबाक लेल भेल अछि। लोक संस्कृतिक लाली चोरा क' हम सभ अपना के स्वरूपवान बनबैत रहलहुँ अछि। लोक साहित्यक मोरपंख के अपन माथक पाग मे लगा क' पागेक महत्व बढ़बैत रहलहुँ अछि। तैं लोक संस्कृति आ लोक साहित्य या त' अत्यधिक उपेक्षाक शिकार रहल अछि अथवा एतेक अपेक्षित भ' गेल अछि जे ओकर मौलिकते नष्ट भ' गेलैक अछि।

लोक-संस्कृतिक मौलिकता ओहि लोकक जीवन-शैली, जीबाक ढंग मे तकबाक चाही जे परिष्कृत, रुचि सम्पन्न तथा सुसंस्कृत बूझल जाइबला

लोकक अपेक्षा अधिक सरल आ अकृत्रिम जीवनक अभ्यस्त होइत छथि। जे परिष्कृत रुचि रखैबला लोकक समस्त विलासिता और सुकुमारता के जीवित रखबाक लेल जे वस्तु सभ आवश्यक होइत छैक, तकर उत्पादन करैत छथि। एक शब्द मे कही त' उत्पादक आ श्रमिक वर्गक संस्कृति। जाहि मे स्त्री सेहो अबैत छथि जे कोनो वस्तुक उत्पादन आ ताहि हेतुएँ श्रम सँ जुड़ल छथि। जिनकर व्यावहारिक ज्ञानक आधार पोथी नहि थिक। जिनकर ज्ञानक आधार आँखिक देखल होइत अछि। जीवनक अनुभव होइत अछि। जिनकर संस्कृति लोक जीवनक समष्टिगत चेतनाक प्रतिफलन थिक।[4] जे आर्य चेतनाक अपेक्षा लौकिक चेतना सँ अधिक अनुप्राणित रहैत छथि। जिनकर जीवन-दर्शन लोकायत परम्पराक जीवन-दर्शन थिक। जाहि जीवन दर्शन के, जाहि संस्कृति के संरक्षण एहि कारणे आवश्यक अछि जे हमरालोकनि अपन सामूहिक परिचिति सँ विच्छिन्न नहि भ' सकी। हमरा भीतर आत्मीयता, उदारता, साम्प्रदायिक सौमनस्य, टकराहटि आ हिंसक मनोवृत्तिक परित्याग, सामूहिकताक भावना, विभिन्न संस्कृतिक प्रति आदर भाव, रहन-सहन, भेष-भूषा, पर्व-त्योहार, खान-पान आदि सभ प्रकारक आचार-व्यवहार मे ने कट्टरताक समावेश हो आ ने एकरूपताक मानसिकता बनय। विविधताक प्रति सम्मान जकर जड़ि मे रहय आ बहुरंगी जीवन-राग जकर फूल-पात हो।

सांस्कृतिक एकरूपता अथवा वर्चस्व के बाजारवादक माध्यम सँ प्रसार आ तकर व्यापारिक उपयोगक सम्बन्ध मे किछु उदाहरण सँ बुझबा मे सुगमता भ' सकैत अछि। नवसाम्राज्यवादक आ उपनिवेशवादक निहितार्थ के गमल जा सकैत अछि। कारपोरेट कल्चर के सेहो जानल जा सकैत अछि। संगहि प्रतिपक्ष मे ठाढ़ लोक संस्कृतिक महत्व के सेहो रेखांकित कयल जा सकैत अछि। आइ-कालिह चमक-दमक आ भव्यता-दिव्यता जेना सभक आँखि मे बसि गेल अछि से वस्तु के देखबाक नजरिए बदलि देलक अछि। प्रत्येक वस्तु के अपन खास गुण होइत छैक, स्वाभाव होइत छैक। वस्तु के ओकर खासियत मे देखबाक बदला ओहि मे चमक-दमक नीक लागब वस्तुक निजत्वक अनादर थिक। संसार मे कारी, गोर, गेहुआँ अनेक तरहक मनुक्ख अछि। मुदा आइ उजरी गोराइक डाक बजैये। सभ गोर, बेसी गोर हुअ' चाहैत अछि। फेयर एण्ड लवलीक जोर चलि रहल

अछि। एहि गोराइक प्रति उन्माद एतेक बढ़ल अछि जें चेहरा टा नहि सम्पूर्ण देह गोर चाही। कपड़ाक भीतरको अंग सभ। एहना मे कारी आ पिण्डश्यामक सौन्दर्य के देखत? सांवलिया बिहारी मडुआ लालक सौन्दर्य, बच्चा सभ सँ अगरायल सुगरनीक मातृत्वक सौन्दर्य देखबाक आँखिए जेना चोन्हरा गेल अछि। संस्कृति लेल सरलता, सहजता आ सुमतिक जे सौन्दर्य छै से अलंकरणक अत्यधिक व्यामोह मे हकन्न कान' लागल अछि। सोना खाली सोना आ सोन सन रंगक प्रति उन्मादी आकर्षण अन्य धातु के विपन्न बना देलक अछि। ताम्बा, पित्तरि, कासा, टिन, फूल, गिल्लट, चानी एहि घोड़-दौड़ मे एकदम पाछू छूटल जा रहल अछि। प्रतियोगिता मे प्लैटिनम आगू बढ़ि गेल अछि। विभिन्न अस्मिताक टकराहटि बढ़ि रहल अछि, हिंसक भ' रहल अछि। आतंकवाद बढ़ि रहल अछि। अस्त्र-शस्त्रक प्रति बतहपन्नीक हद धरि संग्रहणक मानसिकता बढ़ि रहल अछि। एना मे शांत आ सहज सुखी जीवन एक दुस्वप्न बनि रहल अछि। सुन्दर रूप आ भोगवादी जीवन-शैलीक प्रति झुकाओ सामान्य मनुक्खक प्रति लोक के निर्मम बना रहल अछि। खान-पान मे सेहो एकरुपता बढ़ि रहल अछि। पिज्जा, बर्गर, मोमोक डंका बाजि रहल अछि। बगियाक संग बगियाक गाछबला लोक कथा बिला रहल अछि। आमो मे केवल मालदह। आन आम कियो खाय नहि चाहैत अछि। खेबो चाहब त' बजार मे भेटत नहि। जे वस्तु ब्राण्ड बनि गेल तकरे मोल, तकरे स्वागत। आर ओहि सँ नीको वस्तु झाम गुरैत रहथु। विविधताक सम्मान आब नहि रहि गेल अछि।

मनोरंजनो मे कर्ण-कुठार मनोरंजन, जीह सँ पानि खस'बला दैहिक सुख सँ ओत-प्रोत मनोरंजन। पोथियो मे केवल कैरियर सम्बन्धी अथवा बहुराष्ट्रीय कम्पनीक कुशल नोकर बनबाक सभ इलम जनबाक पोथी। साहित्यो मे बिना कोनो दिमागी अथवा हार्दिक संघर्ष-संस्पर्शक विकृत नग्नता, देहवादी, कलावादी, व्यक्तिवादी साहित्य। फूलो मे केवल कैपटलिस्ट गुलाब। बेली, चम्पा, कटहरी चम्पा, हरसिंगार आदि विभिन्न रंगक फूलक प्रति तिरस्कार भाव। आब त' जनताक चुनल सरकारो एहि एकरूपक सौन्दर्य-चेतनाक शिकार भ' गेल अछि। कारपोरेट लुकक नाम पर सामान्य

लोक मे आर बेसी हीनताबोध बढ़ाब'बला साज-सज्जा क' रहल अछि। टाइल्स लगा रहल अछि। जनता सँ दूरी बढ़ा रहल अछि।

एहि प्रकारें एकमुखी, एकभगाह आ एकरूपी होइत मानसिकताक निर्माण बाजारवादक माध्यमे भ' रहल अछि। बाजारवाद नव साम्राज्यवादक प्रमुख हथियार थिक। बाजारवाद के तकनीक, मिडिया, नेट-इण्टरनेट सभ सहयोग क' रहल अछि। ओना बाजार ककरो बपौती नहि रहि गेलैक अछि। जे शक्तिशाली अछि सैह बाजार मे मुदा टीकि सकैत अछि। जे अपन माल बाजार मे उतारि सकैत अछि से अपन माहौल सेहो कायम क' सकैत अछि। एहन शक्तिशाली लोक सभक लग सरकार-सत्ता निरुपाय भ' गेल अछि। से अमेरिकाक सरकार हो आ कि भारतक सरकार। ई कोनो एक दिन मे नहि भेल अछि। व्यापार आ सभ्यता-संस्कृतिक सम्बन्ध आपस मे सभ दिन जुड़ल रहल अछि। संस्कृति नहि त' उत्पादन नहि। उत्पादन नहि त' इतिहास नहि। मुदा बाजार आइ उत्पादकक हाथ मे नहि अछि। बाजारक खेलाड़ी बदलैत गेल अछि। तैं संस्कृति सम्पन्नताक लेल उत्पादनक रीति परिवर्त्तन आ तैं सांस्कृतिक परिवर्त्तन आवश्यक भ' गेल अछि। जे सामान्य उत्पादक, श्रमिक जनताक लोक-संस्कृति सँ सम्भव थिक। ओकरा तकनीकी रूप सँ सक्षम क' विकसित करबा सँ सम्भव थिक। मुदा आइ छोट-छोट किसान, हुनरमंद लोक उजड़ि रहल अछि। ओकर उत्पादन बाजार मे ने पहुँचि पाबि रहल अछि ने टीकि रहल अछि। तैं ओ विपन्न भ' विस्थापित भ' रहल अछि। बहुलता-विविधता बाजार सँ खतम भ' रहल अछि।

एहना मे ध्यान चीन पर जा रहल अछि। देखि रहल छी जे चीनी समान सँ भारतीय बाजार पटि रहल अछि। चीन सँ आयल लक्ष्मी-गणेशक मूर्त्तिक हम सभ पूजा क' रहल छी। एहना मे अपन कुम्हार आ ओकर उत्पादनक की होयत? चीन सँ रेशमी धागा आबि रहल अछि त' रेशमक कीड़ा आ ओकर किसानीक की होयत? ने उत्पादन रहत आ ने उत्पादक रहत त' ओकर संस्कृति कोना रहत? 'उपभोक्ता खाली उपभोक्ता बनल सांस्कृतिक उपनिवेशवाद सँ कोना लड़ब? उत्पादनक रीति परिवर्त्तन आ बाजार मे अपन दबदबा कायम करबाक लेल चीन के जानब-बूझब जरुरी

लगैत अछि। एतबा त' जरुरी लगिते अछि जे अही संग अपन समाजक मूल्य, परम्परा, रस्म-रिवाज के जानल जाय।

मिथिलाक संस्कृति माटि-पानिक संस्कृति थिक। लोक-संस्कृति थिक। एही संस्कृतिक आधार पर सम्पूर्ण समाजक मूल्य, परम्परा, रीति-रिवाज बनल अछि। हमरालोकनिक जीवन-शैली, जीबाक ढंग मिथिलाक माटि-पानि सँ उपजल विभिन्न उत्पादनक देन अछि। यैह जीबाक लेल भौतिक उपाय। विभिन्न उत्पादन, पुनः उत्पादन सँ जीवन चलैत आबि रहल अछि। मुदा एहि सभ के बिसरि एक परजीवी जीवन-शैलीक आग्रह आ महिमामण्डन हमरा सभ के अपना-आप मे संकुचित केलक आ अपन लोक-संस्कृतिक आत्मीयता सँ दूर केलक। तैं वर्तमान मे समाजक दिशा बदलब जरुरी लगैत अछि। जे उत्पादनक रीति परिवर्त्तन सँ हैत। सांस्कृतिक परिवर्त्तन सँ हैत। द्रष्टाक संग ज्ञानक सामन्जस्य सँ हैत। लोक-संस्कृतिक महत्वक बोध सँ होयत। एशिया महादेशक चीन जँ अमरीकी जीवन-दर्शन आ संस्कृति के टक्कर द' सकैत अछि त' हम सभ किएक नहि द' सकैत छी? भले ही से चीन सन बनि क' नहि हो। लोकतांत्रिक बहुलतावादी भारतीय सन बनि क' हो। भारतीय मैथिल बनि क' हो। से मुदा हैत कोना?

मैथिली लोक संस्कृति ओ लोक साहित्य, चेतना समिति, 2014

सन्दर्भ संकेत :

1. बाजारवाद और जनतंत्र, प्रफुल्ल कोलख्यान
2. कल्चरल इम्पेरलिज्म, विकीपीडिया-इन्साइक्लोपीडिया।
3. वैह
4. लोक संस्कृति, प्रफुल्ल कुमार सिंह 'मौन'

■

सामाजिक परिवर्त्तन आ मैथिली पत्र-पत्रिका

मैथिली पत्र-पत्रिकाक सय वर्षक यात्रापर टिप्पणी करैत तारानन्द वियोगी कहैत छथि जे, 'देसी-भावनाक उत्थानक अभिप्सा संग शुरु कयल अभियान अन्ततः एहि बन्ध्या संतोषपर आबि क' टिकल जे मैथिली रचनाक मैथिलत्व ओकर भाषा थिक। चिन्तन, भाव-बोध आ सम्वेदन-प्रणाली बीच सँ निपत्ता भ' गेल। दोसर, तहिया समाज सुधारक मिशन ल' क' कार्यारम्भ भेल छल। किछु दशकक बाद एकर स्थान लेलक 'समाज परिवर्त्तन'। युग सापेक्ष समझ छल ई। मुदा कोनो कार्य-नीति नहि छल पत्रकारिता लग, जकरा बलपर ओ अपन समझकें क्रियान्वित करितय। सम्पादकीयमे लिखल जाइबला अलंकार वाक्यटा ई साबित भेल। स्वयं पत्रिकेमे छापल जाइत रचना सँ एकर तालमेल बैसैत हो, ततबोटा जरूरी नहि बूझल गेल। उपलब्धि शून्य।' एही संग ओ ई प्रश्न सेहो रखलनि अछि जे 'समाजमे परिवर्त्तन तँ अवश्य घटित भेल अछि, मुदा तकर कारक हमरा लोकनि पत्रकारिताकें मानी, तकर की साक्ष्य अछि?' (घर-बाहर, जुलाइ-दिसम्बर 2004) वियोगीक एहि टिप्पणी सँ एतबा स्पष्ट अछि जे मैथिली पत्रकारिता हुनक नजरि मे समाज-सुधारक मिशन सँ शुरू भेल आ बादमे समाज-परिवर्त्तनक दृष्टि सेहो ओहिमे आयल। एहि मामिलामे हुनकर शिकायत छनि जे सामाजिक परिवर्त्तनक दृष्टि-बोधकें क्रियान्वित नहि कयल गेल। सम्पादकीय दृष्टि संग पत्रिकामे छपल रचनामे तालमेल बैसायबकें जरूरी नहि बूझल गेल। तें समाजमे होइत परिवर्त्तनक साक्ष्य मैथिली पत्रिकामे नहि भेटैत अछि। एही संग ओ इहो प्रश्न उठबैत छथि जे पत्रकारिता सँ सामाजिक परिवर्त्तन भेल अछि तकर की साक्ष्य अछि? प्रश्नक ध्वनि कहैत अछि जे हुनका मतें कोनो साक्ष्य नहि अछि।

हमरा लगैत अछि जे सामाजिक परिवर्त्तन आ मैथिली पत्रकारिता पर वियोगीक टिप्पणी संगत नहि छनि। खिसिआयल सन छनि। एकरे संग ओ पत्रकारिता ओ पत्रकारिताक सम्पादनकें 'एक्टीवीज्म' धरि खींचि क' ल' गेला अछि। हुनक दृष्टिमे पत्रिका ओ सम्पादकक काज समाजमे परिवर्त्तन अनबाक स्पष्ट चिन्तन ओ निष्ठाक संग एक कार्य-नीति तैयार क' ओकरा क्रियान्वित करबाक थिक। एहन अपेक्षा करब अन्याय नहि तँ बलधकेल अवश्य लगैत अछि। वस्तुत: सामाजिक परिवर्त्तन लेल वियोगीक अपेक्षा एक सामाजिक आन्दोलनक छनि जकर विचार ओ कार्य-नीति, कार्य-क्रम आदि मुखपत्र रूपमे, पेम्फलेट, फोल्डर रूपमे निकालल जाइत अछि। ओ पत्रकारिताकें स्वतंत्र रूपमे नहि देखि रहल छथि। संगहि सामाजिक आन्दोलनक भार सम्पादक लोकनि पर सेहो द' रहल छथि। दोसर, वियोगी एही बातकें मैथिलीक सन्दर्भमे उठा क' वस्तुस्थितिसँ दूर चल गेला अछि। हुनक दृष्टि वस्तुपरक नहि रहलनि अछि। जत' पत्रकारिताक आइ धरिक उपलब्धि एतबे कहल जा रहल हो जे ओ पत्रकारिताक विकासक सम्भावनाकें जिऔने रहल अछि अर्थात् वास्तविक अर्थमे पत्रकारिता प्रारम्भे नहि भेल अछि तत' सामाजिक परिवर्त्तनक दृष्टिसँ बहुत अपेक्षा करब अनर्गल नहि तँ तथ्यकें अनठायब अवश्य थिक। ओ एही संग सम्पादकसँ एक सामाजिक कार्यकर्त्ता होयबाक अपेक्षा सेहो क' रहल छथि। वस्तुत: पत्रकारिता सेहो समाजेक द्वारा ओ समाजेक लेल होइत अछि। तें समाजसँ फराक ओकर विशिष्ट अस्तित्व नहि भ' सकैत छैक। विशिष्ट व्यक्तित्वो नहि भ' सकैत अछि। ओ एंहि क्रम मे ई मोन पाड़ि लेब आवश्यक अछि जे मिथिलामे कोनो सामाजिक आन्दोलन परिवर्त्तनकामी ओ मैथिली चेतनाक संग समन्वित भ' क' नहि भेल अछि।

मैथिली पत्र-पत्रिका निकालबाक पाछू वैचारिक दृष्टि तँ रहल अछि मुदा व्यावसायिक आधार नहि। वैचारिक दृष्टि सम्पन्न पत्रिकोकें समाजक बीचमे व्यापक प्रसार-प्रचार देबाक निष्ठा ओ श्रमक अभाव रहल। जे दूटा दैनिक पत्र निकलल-स्वदेश ओ मिथिला-मिहिर तकर पाछू कोनो व्यावसायिक वा वैचारिक दृष्टि नहि छल। स्वदेश निकालबाक पाछाँ मैथिलीक प्रति सेवाभाव छल तँ मिथिला-मिहिर हिन्दी दैनिक आयावर्त्तक कोरपच्छू रहय। ओहिमे आर्यावर्त्तक बासि-तेबासि समाचार छापल जाय।

सम्पादकक मोनमे ई डर रहनि जे दैनिक मिथिला-मिहिर आर्यावर्त्तक व्यवसायकें प्रभावित ने करय। तें बादमे ओ टुग्गर सेहो भ' गेल। मोटामोटी अधिकांश पत्रिकाक पाछू मात्र मैथिलीक प्रति सद्भावना अथवा मैथिलीक नामपर किछु करबाक एकटा इच्छा मात्र रहलैक अछि। (बाबू साहेब चौधरी, देसकोस, नवम्बर-1981) तीक्ख तेवरबला पत्रिका 'शिखा'क सम्पादक अग्निपुष्पक अनुसार 'मैथिली पत्रकारिता कें विकसित नहि होयबाक पाछू सभ सँ पैघ कारण जे मैथिली पत्रकारिता प्रतिक्रियाक पत्रकारिता रहल, उकटा-पैंचीक पत्रकारिता रहल। समष्टिक पत्रकारिता नहि भ' क' व्यष्टिक पत्रकारिता रहल।' (देसकोस, 1982)। हमरा लगैत अछि जे पत्रकारिताक विकास नहि होयबाक पाछाँ जे कारण सभ अग्निपुष्प गनौलनि अछि से सत्य मुदा मैथिली पत्रकारिताक विकासक सम्भावनाकें जियौने रखबामे एहि कारण सभक उकटा-पैंचीमे नुकायल वैचारिक कारण सभक हाथ अवश्य रहल अछि। व्यक्तिगत उकटा-पैंची वैचारिको होइत अछि। से मिथिला-मिहिर ओ मिथिला मोदक बीचक हो वा मिथिला-मिहिर ओ विभूतिक बीचक, मैथिली पत्रिका तँ एही कारण सभक बीच निकलैत ओ बन्द होइत रहल अछि। एही कारण सभकें चीन्हि 'आरम्भ'क सम्पादक राजमोहन झा अपन पत्रिकाकें आइयो उकटा-पैंचीक चरित्र प्रदान कयने छथि। एही उकटा-पैंचीबला प्रतिक्रिया सभक बीच पत्रिकाक वैचारिक गतिशीलता बनल रहैत छैक। बिना कोनो सामाजिक दबाबकें आर कतेक आशा कयल जा सकैत अछि? तें मैथिलीक आइ धरिक पत्रकारिता सँ सामाजिक परिवर्त्तनक बेसी आ व्यापक अपेक्षा करब ततेक समीचीन नहि होयत। हँ, जेना चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' मैथिली पत्रिकाक इतिहासमे कहने छथि जे मैथिली पत्रकारिताक आइ धरिक उपलब्धि एतबे कहल जा सकैत अछि जे पत्रकारिता विकासक सम्भावनाकें जियौने रहल अछि तहिना इहो कहल जा सकैत अछि जे मैथिली पत्र-पत्रिका अपन भीतर एतबा साक्ष्य अवश्य रखने अछि जे समाजमे होइत परिवर्त्तनकें ओहिमे अकानल जा सकय। यैह बात मैथिलत्वक सम्बन्धमे सेहो कहल जा सकैत अछि। एहू बातक साक्ष्य पत्र-पत्रिकामे भेटि सकैत अछि जे मैथिली रचनाक मैथिलत्व केवल भाषा धरि सीमित नहि अछि। ओकर (मैथिलत्वक) वास्तविक स्वत्वक निर्धारण-प्रक्रिया लगातार चलैत रहल अछि।

मैथिली पत्र-पत्रिकामे सामाजिक परिवर्त्तनक स्वरकें हम अकानी एहिसँ पूर्व ई देखब आवश्यक अछि जे परिवर्त्तनक विरोधी धारा समाजमे कोना अपन जड़ि जमौने छल आ ओकर प्रभाव पत्र-पत्रिका पर कतेक रहय। पहिल मैथिली पत्रिकाक जन्म 1905 मे भेल। ई ओ काल छल जखन मिथिलेश छला रमेश्वर सिंह। ओ सनातन धर्मक सम्पोषक रहथि। सम्पूर्ण देश हुनका सनातन धर्मक रक्षक रूप मे चीन्हि रहल छल। हुनका अपन राज मे बढ़ैत विभिन्न असन्तोषकें दबयबाक लेल मैथिल बुद्धिजीवी लोकनिक एकजुट सहायताक आवश्यकता अनुभव भेलनि। दरबार सँ सम्बद्ध, उदार ओ रूढ़िवादी बुद्धिजीवीक बीच सेहो वैमनस्य पनपि रहल छल। एहिसँ हुनका खतरा छलनि। एही सभ कारण सँ ओ मैथिल महासभाक स्थापना लेल अपन स्वस्ति देलनि। महासभाक पहिल अधिवेशनमे महाराज सभापतिक आसन सँ भाषण दैत मैथिल ब्राह्मणक जाति गौरवकें सनातन धर्म सँ जोड़लनि आ सनातन धर्मक पहिल अंग राजभक्तिकें मानैत लोक सँ अपील कयलनि जे राजशासन प्रणालीक विरुद्ध आचरण नहि करी। महाराजक आशय स्पष्ट छल। ओ अपना विरुद्ध उपजैत असन्तोषकें रोकबाक लेल धर्मक ईंटा ओ ब्राह्मण जातिक गौरवक सिमेंट सँ बनल मजबूत छहरदेवालीक निर्माण चाहैत छला। तकर निर्माण भ' गेल। एहिमे कोनो नवता नहि छल। एहन छहरदेवाली तँ सभ युगमे बनैत रहल अछि। कने परिवर्त्तनक संग आइयो बनैत अछि। मुदा हर्ज ई भेल जे ओइ छहरदेवालीक भीतर मैथिली चेतनाकें सेहो क्रमिक रूपें घेरि क' राखि देल गेल। एहि लेल महराज ओतेक दोषी नहि जतेक मैथिल चेतनासँ सम्पन्न बुद्धिजीवी। महाराजक एजेंडा मे मैथिली नहि छल। मुदा बुद्धिजीवी लोकनि अपन स्वार्थवश मैथिली चेतनाकें ड्योढ़ीक भीतर ल' गेला। मैथिल महासभाक निर्धारित एजेंडाक अनुसार पत्र-पत्रिका काज कर' लागल। एजेंडाक गुणगान साहित्य सँ बेसी भेल। एकर बाद रमेश्वर सिंहक सनातन धर्मक विकास कुमार गंगानन्द सिंहक व्यापक हिन्दू धर्म मे भेल। गंगानन्द सिंह हिन्दू महासभाक अध्यक्ष सेहो भेला। ओ मिथिला पत्रिकाक वर्ष-1, अंक-6 मे 'हिन्दू संगठन रूपी क्रान्ति' नामक निबन्धमे लिखलनि जे 'हिन्दू धर्म सँ हमर तात्पर्य हिन्दू संस्कृति, सभ्यता तथा विनिमय द्वारा हिन्दू

जातिक आत्मरक्षा प्रणालीक बोध करायब अछि।' आब मैथिली चेतना सनातन धर्म सँ आगू बढ़ि हिन्दू संस्कृति, सभ्यता दिस बढ़ल। एकरे लगक एक धारा भुवनेश्वर सिंह 'भुवन'क छल। ओ 'विभूति'क सम्पादक रहथि। मैथिलीमे प्रगतिशील रचनाकार सेहो मानल जाइत छथि। ओ भारतीय राष्ट्रीय धारा सँ प्रभावित भ' धार्मिक पर्वकें मिथिलाक जातीय(राष्ट्रीय) पर्वक रूपमे मनयबाक बात अपन पत्रिकामे रखलनि। जानकी नवमीकें राष्ट्रीय पर्वक रूपमे मनयबाक बात सेहो शुरू भेल। मुदा एकरे संग भुवनजी ब्रिटिश महाराज-महारानी, राजकुमारी सभक प्रति सेहो अपन अनुराग प्रकट कयलनि। हुनका सभ सँ बहुत किछु सिखबाक लेल प्रेरित कयलनि। ई राज दरभंगाक आगू पैघ प्रभुताक डाँरि खीचब छल। राज दरभंगा सँ हुनका झगड़ा रहनि। मैथिल चेतनाक विकास, धर्म, जातिक बाद राष्ट्रक रूपमे सेहो समक्ष आयल। दरभंगा महाराज सँ अपील कयल गेल जे ओ मैथिल राष्ट्रपति बनि शीघ्र मिथिलाक अभ्युदयक हेतु प्रयास करथु। मैथिल अभिजन वर्गक यैह मनोकामना विकसित भ' स्वतंत्रताक बाद मिथिला राज्यक निर्माण लेल आन्दोलनक आधार बनल। एहि प्रकारें बीसम शताब्दीक आरम्भमे मिथिलाक राजनैतिक, भौगोलिक एवं सांस्कृतिक वैशिष्ट्यकें पुनः स्थापित करबाक प्रयासक परिणति मिथिला राज्य आन्दोलनक रूपमे भेल। परन्तु ई मिथिला आन्दोलन कोनो नव राज्यक स्थापना लेल नहि अपितु मिथिलाक पुरान राजनीतिक स्थितिकें पुनः स्थापित करबाक प्रयास छल। वस्तुतः ई राज्य मैथिल अभिजनक आदि गौरव अर्थात् अंग्रजीराज सँ पहिनेक एक संप्रभुराज तिरहुत छल। एहि मिथिला राज्य आन्दोलन ओ मैथिल राष्ट्रीयताक कोनो आर्थिक आधार नहि छल। युवा इतिहासकार पंकज कुमार झा 'मैथिल राष्ट्रीयताक आर्थिक आधार' नामक अपन निबन्धमे (आब हुनक Imaging Mithila '1875-1955' पोथी आबि गेल अछि) लिखलनि जे 'मिथिला नब विचार पचयबामे असमर्थ छल, इहो स्पष्ट होइत अछि जे मिथिलाक सामाजिक संरचना अर्थ व्यवस्थाक व्यापारीकरणक अभावक कारण सेहो छल। खेत मालिकक रैयतक संग शोषणकारी कटु सम्बन्ध तथा अतिरिक्त उत्पादनक उपभोगक भयंकर सामन्ती प्रवृत्ति कृषि क्षेत्रक अतिरिक्त उत्पादनकें पूंजीक औद्योगिक निवेशक दिशामे बाधक भेल। सुव्यवस्थित योजनाक

अभाव तथा आधारभूत सुविधाक कमी सँ कृषि आधारित उद्योगक विकासक मार्गो खुजि नहि सकल। एकर परिणाम स्वरूप एकटा एहन बुद्धिवादी अभिजन वर्गक निर्माण भेल जे स्वभावत: 'मुंडे मुंडे मतिर्भिन्ना' लोकक समूहमे विखण्डित छल आ ओकरा लेल ई सम्भव नहि छलैक जे ओ मिथिला जनपदक सामान्य लोककें राज्य निर्माणक प्रक्रिया सँ जोड़ि सकय अथवा ओहि कार्य लेल ओकर समर्थन प्राप्त क' सकय। एहि तरहें आर्थिक स्तरपर मैथिल समाजक उच्च वर्गीय विभाजन तथा सामन्ती मानसिकताक कट्टरपनाक कारणे एहिठाम राष्ट्र निर्माणक आधारभूत उपागमक निर्माण नहि भ' सकल।' स्वाभाविक छल जे एहन बुद्धिवादी अभिजन वर्गक मैथिल चेतना परिवर्त्तनकामी नहि भ' सकैत छल। सामाजिक परिवर्त्तनक मादे ओ सोचियो नहि सकैत रहय। ओ तँ अपन समर्थन यथास्थितिवादक पक्षमे दैत रहल। मैथिल अभिजन वर्गक सांस्कृतिक वर्चस्व समाजमे कायम रखबाक सेहन्ता ओकर मोनमे चकभाउर दैत रहलैक। ई सेहन्ता ओकरा साम्प्रदायवादक आंगनमे ठाढ़ क' देलकैक। जकर पाछू सनातन धर्म आ जाति गौरवक अन्धपरम्परा छलैक। एहन मानसिकता धर्मनिरपेक्ष ओ परिवर्त्तनकामी कोना भ' सकैत छल? ई मानसिकता मिथिला, मैथिली ओ मैथिलक बहुत अहित कयलक। आइयो ई मानसिकता खतम नहि भेल अछि। विद्यानन्द झा मैथिली कवितामे साम्प्रदायिकता सँ ओतप्रोत पांती लिखनिहार कविकें मैथिली कविताक जनपद सँ बारि देबाक बात कहलनि अछि। (आरम्भ, नवम्बर-2004)

मैथिल महासभाक माध्यम सँ सनातन धर्म ओ जातीय गौरवक ई साम्प्रदायिक धारा मिथिला, मैथिल ओ मैथिलीकें लगातार संकुचित ओ अतीतगामी बनबैत रहल। एहि संकुचन ओ अतीतगामिताक प्रभाव स्वाभाविक रूपे पत्र-पत्रिका, मैथिली आन्दोलन, मैथिल संस्था सभक गतिविधि सँ ल' क' मैथिली शिक्षण व्यवस्था-अध्यापन प्रणाली तकमे पड़ैत रहल। मुदा एहि सभक बावजूद मिथिला, मैथिल ओ मैथिली आइ धरि प्रासंगिक बनल अछि तँ एहिमे संलग्न एहन चेतना सम्पन्न बुद्धिजीवी लोकनिक कारणे जे परिवर्त्तनकामी ओ धर्मनिपेक्ष रहला अछि। मैथिली पत्र-पत्रिकामे सेहो हिनकर हस्तक्षेप ओ योगदान प्रारम्भे सँ चलैत आबि रहल अछि। यात्री

फरवरी 1938क 'विभूति' पत्रिकामे मैथिल महासभाक मैथिलत्वक मापदंडपर टिप्पणी करैत आक्रोश व्यक्त कयलनि- 'मिथिलेश-सुधारक मिथिलेश (?)-जाहि संस्थाक कर्णधार होथि, तकर एहि प्रकारक संकुचित सिद्धान्त देखि मिथिलाक लाख-लाख अधिवासी-जे मैथिल होइतहु मैथिल नहि-क्षुब्ध छथि। चिरकाल सँ अपनहि घरमे, अपनहि बन्धुवर्ग द्वारा ठोंठिऔल गेल मिथिलाक सन्तान आइ यदि आजिज आबि अपनाकें 'बिहारी' कहब आरम्भ कयलक अछि तँ एहिमे दोष ककर? स्वाभाविक अछि जे आइयो यदि वियोगी, सुभाष चन्द्र यादवक कथन 'मैथिलीमे लिखल साहित्यक मैथिलत्व ओकर भाषा थिक' (सन्धान, जुलाइ-2000)क आधार ल' ई आरोप लगबैत छथि जे मैथिलत्व भाषे धरि सीमित भ' गेल अछि तँ हुनकर आशय स्पष्ट अछि। मुदा वियोगीकें सुभाष चन्द्र यादवक सम्बन्धमे सेहो अपन टिप्पणी मोन रखबाक चाहियनि। सुभाषक कथामे हुनका 'अकहानी तत्व' सर्वाधिक प्रस्फुटित रूपमे देखाइ पड़ल छलनि। आ 'अकहानी' कें ओ परम्परा निर्धारित आ सामान्य-समर्थित गुणधर्मसँ मुक्त कहानी मानैत छथि। (सन्धान, जुलाइ-2000) एहनामे सुभाष सँ ओ मैथिलत्वक सम्बन्धमे आर की कहबाक आशा करैत छथि। जखनकि मैथिलीक स्वातंत्र्योत्तर कथा-प्रवृत्ति सभकें विश्लेषित करैत मोहन भारद्वाज (मिथिला मिहिर, 9 एवं 16 नवम्बर1975) ई विचार रखने छला जे कोनो भाषाक कथा मात्र एहि लेल ओहि भाषाक साहित्य नहि होइछ जे ओ ओहि भाषामे लिखल गेल अछि। प्रत्येक भाषामे अपन विवशता, मुक्ति प्रयोजन, सीमा, संस्कार, परम्परा आ विशिष्टता होइत छैक-समय, परिवेश आ व्यक्तित्वक कारणे।' अथवा विद्यानन्द झा पछिला दशकक मैथिली कविता पर विचार करैत मैथिल परिचिति (मैथिलत्व)क सम्बन्धमे जे दूटा प्रश्न उठौलनि अछि से मैथिलत्वक निर्धारणक लेल गम्भीर प्रयास नहि मानल जयबाक चाही? आरम्भ, नवम्बर 2004क अंक मे ओ लिखैत छथि जे 'एहि समयक बहुलांश मैथिली कविता वा कम सँ कम एकटा महत्वपूर्ण अंश स्मृति-स्थित गाममे अछि। की ई एहि कारणे जे भारतीय राष्ट्र राज्यक नगरमे हमरा सभक मैथिलक रूपमे कोनो अस्तित्व नहि छल वा अछि? आ तें मात्र एकटा स्मृतिमे बसल गाम। वा की एहि कारणें जे गुन्टर ग्रासक जिद्दी बच्चा

जकाँ हमरा सभ भारतीय राज्य-व्यवस्थामे भाग नहि लेबाक लेल पैघ नहि होयबाक निर्णय लेलहुँ? एहि बात पर विचार होयबाक चाही। दोसर बिन्दु अछि भारतीय राष्ट्र-राज्य, मैथिल परिचिति आ ओकर अन्तर-सम्बन्धक। कारगिल, चीन, कश्मीर, काश्मीरी पण्डित-बेसी काल एहि दशकक मैथिली कविता एकटा केन्द्रीकृत, अन्धराष्ट्रवाद दिस अग्रसर राष्ट्र-राज्यक समर्थनमे ठाढ़ भेल अछि। ई ठाढ़ होयब हमर मैथिल परिचितिकें कोना प्रभावित करैत अछि-एकर हमरा सभकें जाँच करक चाही।' विद्यानन्दक आशय आ चिन्ता स्पष्ट अछि। मैथिल परिचिति (मैथिलत्व)क निर्धारण लेल धर्मनिरपेक्ष ओ परिवर्त्तनकामी स्वत्वक परिचय एवं ओकर विकास तथा गामक अतीतमुखी स्मृतिक 'बच्चासन जिद्द' छोड़ब आवश्यक भेल जा रहल अछि। मुदा बहुतोकें एहिमे 'मैथिलत्व'क रंग धोखड़ि जयबाक आदंक छनि। एहि आदंककें हिन्दीक राम विलास शर्मा सन बुद्धिजीवी आर बढ़ौनहि छथि। मुदा एहिठाम फेर यात्री हमरा लोकनिकें आश्वस्त करैत छथि। हमरा जनैत एहि लेल मिथिलाक सामाजिक परम्पराक जीवन्त ओ युगानुरूप परिवर्त्तनक गुणसूत्रक खोज ओ परिचय मैथिली रचनाकार लोकनि लेल आवश्यक छनि नहि तँ ओ भारतीय चिन्तन, इतिहास, साहित्य-संस्कृतिमे मिथिलाक अपन निजत्वक संग योगदान नहि क' सकता। जखनकि यात्रीक शब्द प्रमाण अछि जे, उत्कलक इतिहास तथा प्राचीन साहित्यक अपेक्षा मिथिलाक इतिहास किंवा प्राचीन साहित्य-सम्पत्ति उनैस नहि, बीसे बुझबाक थिक-विश्वक पैघ-पैघ ऐतिहासिक तथ्य एहि बातक गबाही द' सकैत अछि। मिथिलाक धन-जन सेहो उत्कल सँ कोनो हिसाबें कम नहि।' (विभूति, फरवरी-1938)

मिथिलाक इतिहास-संस्कृतिमे जेना जीवन्त ओ युगानुरूप गुणसूत्र सभ विद्यमान अछि तहिना पत्र-पत्रिका सभमे सेहो परिवर्त्तनकामी चेतनाक स्वर सुनल जा सकैत अछि। मैथिलीक पहिल पत्रिका 'मैथिल हित साधन' मैथिल समाजक दशा सुधारबाक हेतु प्राथमिक शिक्षाक प्रसार पर जोर देलक। लिखब, पढ़ब, गणित, भूगोल, इतिहास आदि सामाजिक शिक्षाक मिथिलामे नितान्त आवश्यकताकें देखैत महाराज दरभंगा सँ अपील कयल गेल जे शहरमे नली-नाला, टाउन हॉलक निर्माणक बदला प्राथमिक शिक्षाक

प्रचार लेल मिथिलाक अनेक प्रान्तमे प्राइमरी स्कूल स्थापित कयल जाय। समाजक स्थितिमे प्राथमिक शिक्षाक प्रसार सँ परिवर्त्तन अनबाक ई दृष्टि तत्कालीन पृष्ठभूमिमे परिवर्त्तनकामिये दृष्टि रहय। एहि लेल व्याकरण, गणित, भूगोल आदि बालोपयोगी पोथी लिखबाय ओकर प्रकाशन सेहो कयल गेल। साहित्यिक विषयकें प्रमुखता नहि द' समाजकें मुख्य रूप सँ आधुनिक शिक्षा दिस अभिमुख करब ओहि पत्रिकाक मुख्य उद्देश्य रहैक। 1929मे 'मिथिला' पत्रिकाक पहिले अंकमे लिखल गेल जे, 'भाषा सम्बन्धे हम मिथिलावासी प्रत्येक ब्राह्मण, क्षत्रीय, वैश्य, शुद्र, कायस्थ, मुसलमान, अंगरेज, बिहारी, बंगाली, मारवाड़ी, कान्यकुब्ज, एवं वैष्णव, शाक्त, दयानन्दी, रमानन्दी, कबीरपंथी तथा अन्यान्य मतावलम्बीकें एक दृष्टि सँ मैथिल कहै छिऐन्ह एवं हुनका लोकनि सँ मैथिलीक प्रति एक रंग सेवाक आशा करैत छी। उदार विचारक सर्वदा हमरा लोकनि पक्षपाती रहब तथा अपना नीतिक विरूद्धो लेखकें (यदि ओहिमे किछु तथ्य रहलैक तँ) पत्रमे प्रकाशित करब।' 'मिथिला' समाजमे स्त्रीक अवनतिपर सेहो साकांक्ष रहय। स्त्रीक दशाक सम्बन्धमे हरिमोहन झाक रचना सभ ओहिमे छपल छल। पत्रिकाक एक सम्पादक भोलालाल दास आधुनिक विचारक लोक रहथि। पत्रिका मानैत छल जे हिन्दू जातिक अवनति स्त्रीगणहुक अवनतिपर ओतबे निर्भर अछि जतबा नीच जातिक अवहेलनापर।' ई कहल जा सकैत अछि जे स्त्रीगणक उत्थान लेल ओकर दृष्टि सवर्ण समाज धरि सीमित छल। मुदा इहो तथ्य अछि जे स्त्रीक मामिलामे सवर्ण ओ अवर्णमे सेहो भेद त' अछिए। दलित स्त्री तँ दोहरी मारि सहैत अछि। घरमे पुरुषक मारि आ बाहरमे सवर्ण वर्चस्वक मारि। वर्ण व्यवस्थाक प्रभाव ओकरा दुनूठाम प्रताड़ित करैत अछि। 'मिथिला' समयानुसार सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक तथा साहित्यिक परिवर्त्तन अथवा 'क्रान्ति' करबकें अपन उद्देश्य मानलक। ओहिमे सामाजिके लेखनक प्रधानता रहल। ओना यैह ओकर बन्द होयबाक कारणो बनल। भोलालाल दास अपन सम्पादकीयमे युवक आन्दोलनपर सेहो जोर देलनि। युवक आन्दोलनकें सामाजवादी क्रान्ति (Socialistic revolution)क रूपमे परिभाषित कयलनि। एही संग ओ इहो कहलनि जे, हम जहिना अपन रुढ़ि प्रथाक अन्धअनुकरण करबाक विरोधी छी

तहिना रूस अथवा अमरीकाक नवीन आदर्श अन्ध भ' क' ग्रहण करबाक घोर विरोधी छी।' हम सभ जनैत छी जे 1917 मे रूसमे बोलशेविक क्रान्ति सफल भेल छल आ ओत' लेनिनक नेतृत्वमे समाजवादी सरकारक गठन भेल। ओहि विचारधाराक प्रभाव सेहो मैथिली पत्रिकामे एहि प्रकारें दृष्टिगोचर होअ' लगैत अछि। मुदा से अपना शर्त्तपर, अपन आवश्यकताक अनुरूप। एहि प्रकारक सामाजिक परिवर्त्तनक मानसिकता ओ आकांक्षाकें 'मिथिला' मे देखल जा सकैत अछि। मुदा चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' अपन पत्रकारिताक इतिहासमे लिखलनि अछि जे, 'मिथिला एक दिस मैथिलीक अस्तित्व रक्षाक हेतु सन्नद्ध छल तँ दोसर दिस स्त्रीक शिक्षाक प्रबल पक्षधर सेहो। ई समाजक हेतु नीक भेल अथवा अधलाह एहि बिन्दु पर वैमत्य भ' सकैत अछि। भौतिकवादी दृष्टिसँ विचार कयनिहार एकर समर्थन करता। भारतीय परम्पराक समर्थक नहि, कारण आधुनिक शिक्षाक प्रसार सँ जे पारिवारिक जीवनमे वैषम्य आबि रहल अछि, अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष ई जे अपवर्ग चतुष्टयक प्राप्ति भारतीय जीवनक लक्ष्य छल, ताहिमे अर्थ, काम मात्र बचि गेल अछि, जाहि कारणे समाजक बीचक जे एक सौहार्द ओ सौमनस्य छल तकर लोप भइये गेल पारिवारिको जीवन टूटि रहल अछि।' स्पष्ट अछि जे अमरजीक भारतीयतामे मैथिलत्वक अवधारणा कूपमंडूक ओ वर्णवादी-पुरुष वर्चस्वक रहय। जखन कि यथार्थ से नहि थिक।

'मिथिला'क बादक पत्रिका सभ 1960 सँ पूर्वधरि क्रमशः भाषा आधारपर 'मिथिला' प्रान्तक गठनक समर्थन ओ विरोधमे अपनाकें लगौने छल। एहि पत्रिका सभ द्वारा मैथिल समाजक राजनीतिक दृष्टिकोणकें अभिव्यक्त होयबामे सहायता भेटलैक। हिन्दीक विरोध ओ कांग्रेस शासनक विरोधक स्वर एहिमे प्रमुख रूपें देखाइ पड़त। डा० लक्ष्मण झाक 'मिथिला' साप्ताहिक एहि दिशामे अग्रगण्य कहल जा सकैत अछि। एही संग एहनो मैथिलीभाषीक संख्या थोड़ नहि रहय जे मैथिलीकें कण्ठ दाबि घरमे बैसा देबाक हेतु हिन्दीक समर्थन फाँड़ बान्हि क' रहल छला। चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' दरभंगासँ प्रकाशित होइत एहन हिन्दी पत्रिका सभमे कुलानन्द नन्दनक सम्पादकत्वमे 'पंचायती राज' आ प्रो० धर्मप्रिय लालक सम्पादकत्वमे 'उदय' नामक पत्रिकाक नामोल्लेख कयने छथि। आठम दशक सँ मैथिली

पत्रिकामे जनसामान्यक समस्याकें उठयबाक प्रवृत्ति बढ़य लागल। जनभाषा, जनसाहित्यक खगता अनुभव कयल जाय लागल। सरकारक विरोधक स्वर मुखर होअ' लागल रहय। एकर प्रारम्भ 1971 मे 'मिथिला टाइम्स' सँ भेल। एकर सम्पादक रहथि विजयकान्त ठाकुर। मिथिला टाइम्सक सम्बन्धमे अमरजीक मन्तव्य अछि जे 'एक विचारधारा विशेषक राजनीतिज्ञ लोकनिमे कम्युनिस्ट पार्टीक नेता एहि क्षेत्रक भाषाकें अपन माध्यम बनाय विचारक प्रचारमे सुविधा होयत तकर अनुभव कयलनि, यैह एकर सभसँ पैघ उपलब्धि हम मानैत छी। आन कोनो राजनीतिक दलक ध्यान एहि दिस नहि गेलनि अछि। यदि सत्य कहल जाय तँ एहि प्रेरणाक मूलमे श्री भोगेन्द्र झा (सांसद), तें एकर श्रेय हुनके छनि। जें ई दल अपनाकें जनवादी कहैत अछि तें भाषाक दृष्टिसँ सेहो ई जनभाषाक अधिक निकट छल। परिणामतः साहित्यक भाषासँ ई दूर चल गेल छल।' मिथिला टाइम्समे प्रकाशित लेख, समाचार-विचारक अध्ययन सँ सामाजिक परिवर्त्तन सम्बन्धी साक्ष्य सम्पादकीय दृष्टि संग भेटि सकैत अछि। आठम दशकमे 'शिखा' सेहो अपन तीक्ख ओ विद्रोही स्वर द्वारा सामाजिक परिवर्त्तनक दृष्टिकें जगजियार कयलक। वर्ग समाज आ लेखन, जनसाहित्य, लेखकीय एकता, आजुक कथा, नक्सलवादी आन्दोलन, मैथिली पत्रकारिता आदि विषयपर ऐतिहासिक-सामाजिक दृष्टिएँ विचार उपस्थित कयल गेल। ओहिमे 'वर्त्तमान' नामक स्तम्भ अन्तर्गत देश सँ मिथिला धरिक समाचार-विचार आदि परिवर्त्तनकामी दृष्टिकोणक संग छापल जाइत छल। आपातकालमे व्यवस्था विरोधी एहन लेखन बहुत साहसक काज रहय। एकर पाछू एक दिस नक्सलवादी आन्दोलनक प्रभाव छल तँ सामाजिक परिवर्त्तनमे आस्था रखनिहार मैथिल पत्र-पत्रिकाक चेतना सम्पन्न सम्पादकक परम्परा सेहो विद्यमान रहय। एहि सँ पूर्व सन्निपात (1971), अग्निपथ (1973) निकलि चुकल छल आ सोमदेव मैथिली कविताक पहिल अग्निसंकलन निकालि चुकल छला। एहिठाम धरि अबैत-अबैत सामाजिक परिवर्त्तनक अवधारणामे सेहो क्रमिक विकास होइत गेल छल से संकीर्णताक सर्वथा उकन्ननपर आधारित रहय। एहि कालक एकर स्वर बेसी तीक्ख आ तीव्र भ' गेल। स्वाभाविक छल जे चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' अपन पत्रकारिताक इतिहासमे एकरा अधकच्चू ओ उद्धत युवकलोकनिक अभारतीय चिन्तन कहलनि। पत्रिका सभक भाषापर अमर्यादित होयबाक आरोप लगौलनि।

शताब्दीक अन्तिम दशक धरि अबैत-अबैत स्थितिमे व्यापक परिवर्त्तन भ' गेल छल। सोवियत संघक पतन भ' गेल। विश्व एक ध्रुवीय भ' गेल। भारतोमे मिश्रित अर्थव्यवस्थाक बदला उदारवाद अथवा व्यापारीवाद अपन पैर पसारलक। विश्वमे भूमण्डलीकरणक बिहाड़िमे अपन भाषा ओ संस्कृतिकें बचा क' राखब सभ सँ पैघ चुनौती बनि गेल। अस्मिताक संघर्ष बढ़ि गेल। सोवियत संघक पतन ओ भूमण्डलीकरणक प्रसार सँ धर्म ओ जातिपर आधारित राजनीतिकें खुलि क' खेलयबाक अवसर भेटि गेलैक। धर्म ओ जातिक राजनीतिकें भूमण्डलीकरण सँ कोनो विरोध नहि छलैक। एहनामे मैथिल परिचितिकें बचाक' रखबाक लेल परिवर्त्तनकामी दृष्टि ओ धर्मनिपेक्षताक आवश्यकता आर बढ़ि गेल छलैक। जनसामान्य सँ सम्वादक खगता आ मैथिलीकें जनसामान्य धरि ल' जयबाक बेगरता गम्भीरता सँ अनुभव कयल जाय लागल। मैथिल परिचितिकें बचाक' रखबामे अवरोधक यथास्थितिवादी ओ वर्णवादी विचारक विरोध सेहो तीव्रता सँ कयल जाय लागल। परिणामस्वरूप सांस्कृतिक राष्ट्रवादकें सिंहासनारूढ़ देखि उल्लसित यथास्थितिवादी आ वर्णवादी सभ सेहो खुलि क' खेलाय लागल। प्रगतिशील ओ धर्मनिरपेक्ष चेतनाकें 'कम्युनिस्ट' कहि गारि पढ़बाक प्रवृत्ति मैथिलीयोमे बढ़' लागल। 1999 मे परिवर्त्तनकामी रचनाक संवाहक पत्रिका 'अंतिका' दिल्ली सँ निकलल। ई पत्रिका मैथिलीक महन्थान सभक फासीवादी चरित्रकें उघार करबामे अपनाकें सन्नद्ध कयलक। एकरा संग अन्तिम दशकमे सन्धान (1997), संकल्प (1991) ओ जिज्ञासा(1995) समकालीन आवश्यकताकें देखैत गम्भीरता सँ सामाजिक-सांस्कृतिक ओ साहित्यिक प्रश्न सभकें विमर्शक विषय बनौलक। दोसर दिस राजनैतिक-सामाजिक चेतनाक संवाहक रूपमे समय-साल (2000) मैथिली पत्रकारिताक टेक धयने रहल। वस्तुतः एकर पृष्ठभूमि पछिले दशक सँ अर्थात नवम् दशक मे तैयार भ' गेल छल। माटि-पानि मे मिथिलाक संस्कृति, शिक्षा, औद्यौगिक विकास, स्त्रीक पराभव आदि विषय पर विचारोत्तेजक लेख आदि प्रकाशित होअ' लागल छल। एही संग देसकोस (1981), आरम्भ (1982), भाखा (1987), चिनगी (1988), ओ बसात (1987)पत्रिका गम्भीरता सँ मैथिली साहित्य आ समाजपर आलोचनात्मक दृष्टि सँ विचार करैत

प्रगतिशील वातावरणक निर्माणमे सहायक भेल अछि। एहि पत्रिका सभमे बहुतो लेख आदि द्वारा वर्त्तमान स्थितिक विश्लेषण परिवर्त्तनकामी दृष्टिकोणक संग कयल गेल। एहि लेख सभकें पढ़लापर लागत जे नव मैथिल बुद्धिजीबीक समक्ष मिथिलाक सम्पूर्ण वर्त्तमान वृहत्तर परिप्रेक्ष्यमे आबि रहल अछि। ई लेख सभ पत्रिकाक सम्पादकीय दृष्टिकें सेहो पुष्ट करैत अछि। एहि सभकें देखैत ई कहल जा सकैत अछि जे बात बदलि रहल अछि। आब कोनो जाति विशेषक बात नहि, मिथिलाक सम्पूर्ण समाजकें ध्यानमे राखि समस्याक निदान ताकल जा रहल अछि। तखन तँ हमरालोकनि अन्य भारतीय भाषाक पत्रकारिताक तुलनामे एक सय वर्ष आ भाषा आन्दोलनमे सत्तरि वर्ष पाछू चलि रहल छी तँ प्रगतिशील, परिवर्त्तनकामी ओ धर्मनिरपेक्ष मैथिलत्वक संग भारतीय मैथिल बनबामे पचासो वर्ष तँ लगबे करत। एहन लगाओकें वियोगी सेहो अनर्गल नहि कहता। वस्तुतः लगाओ, ध्वंस ओ निर्माण दुनू लेल जरूरी होइत छैक। निर्माण ध्वंसक बिना नहि भ' सकैत अछि। सामाजिक परिवर्त्तन लेल सेहो सड़ल-गलल मान्यता ओ प्रतिगामी विचार ओ परिचितिकें नष्ट करब पहिने आवश्यक अछि। एही संग नव ओ प्रगतिशील विचारक संस्थापन जरूरी। एकर न्यों तकबाक लेल मैथिली पत्र-पत्रिकाक इतिहासकें चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' सँ फराक परिवर्त्तनकामी पृष्ठभूमिमे देखब वर्त्तमानमे जरूरी बुझना जाइत अछि।

मैथिली पत्रकारिता, दशा ओ दिशा, पोर्थां, नवम्बर-2006

■

व्यापक लोकक विचार

पछिला समय मे बहुतो पोथी आयल मैथिली मे। विभिन्न विधाक पोथी आयल। उपन्यास, कथा, नाटक, निबन्ध, आलोचना सभ। मुदा लक्ष्मण झाक 'विचार चिन्तामणि' ओ भीमनाथ झाक 'लघूत्तरीय' एहि सभ सँ कने फराक ढंगक पोथी आयल। विचार चिन्तामणि वर्ष 2002 मे आयल। त' लघूत्तरीय 2003 मे। दुनू पोथीमे बहुतो समानता अछि। मुदा अन्तरो बहुत अछि। दुनू पोथी मैथिली पत्रिकाक सम्पादकीय सभक संग्रह थिक। ई सम्पादकीय सभ एक कालविशेष मे लिखल गेल। साप्ताहिक पत्रिका लेल लिखल गेल। से पत्रिका डॉ॰ लक्ष्मण झा द्वारा सम्पादित 'मिथिला' थिक आ सुधांशु शेखर चौधरीक सम्पादकत्वमे निकलैवला 'मिथिला-मिहिर'। 'मिथिला' लक्ष्मण झा स्वयं निकालैत रहथि मुदा 'मिथिला-मिहिर दरभंगा राजक प्रकाशन छल। डॉ॰ भीमनाथ झा ओहिमे उपसम्पादक रहथि। सम्पादकक आदेश सँ ओ मिहिरमे सत्तावन गोट सम्पादकीय लिखने रहथि। दुनूक सम्पादकीयमे करीब पचीस बरखक अन्तराल अछि।

लक्ष्मण झाक सम्पादकीय सभ 1952-53क अवधिमे लिखल गेल। भीमनाथ झाक सम्पादकीय सभ 1976-80क लिखल थिक। 1952-53क अवधि मिथिला राज्य आन्दोलनक अवधि छल। मिथिला राज्य निर्माणक मांग 1951सँ जोर पकड़लक आ 1954 धरि पुरजोर रूपें चलल। लक्ष्मण झा आ जानकीनन्दन सिंह ओहि आन्दोलनक अगुआ रहथि। लक्ष्मण झा मिथिला राज्यक नहि केवल स्वप्नद्रष्टा रहथि ओकरा सैद्धान्तिक ओ वैचारिक आधार सेहो देलनि। एम्हर 1976-80क अवधि मैथिली भाषा आन्दोलनक दृष्टि सँ एक महत्त्वपूर्ण अवधि थिक। 4 नवम्बर 1979कें एक छात्र संगठन निखिल भारतीय छात्र संघ पटनामे लम्बा जुलूस निकालने

रहय। जुलूस विभिन्न नारा सभ लगबैत पटनाक मुख्य सड़क पर निकलल छल। यैह ओ काल सेहो थिक जहिया जगन्नाथ मिश्र अपन मातृभाषाकें अबडेरि उर्दूकें द्वितीय राजभाषाक दर्जा अपन सरकारमे देने रहथि। जकर मिथिलावासी खूबे विरोध केने छल।

लक्ष्मण झा द्वारा भाषाधार प्रान्त ओ कांग्रेस, मिथिला आन्दोलन, भाषा ओ प्रान्त, मिथिला राज्य नाम सँ सम्पादकीय सभ लिखल गेल अछि। एकर अतिरिक्त ओ मातृभाषा मैथिली, मिथिलाक्षर, मैथिल महासभा शीर्षक सँ सेहो सम्पादकीय लिखलनि। विभिन्न देश ओ व्यक्तित्व, प्रान्त, कोशी, बाढ़ि, चन्द्रधारी कॉलेज, नवीन शिक्षा, अर्थदण्ड, विज्ञापन, ह्वीलर कम्पनी, पाठक, प्रब्दाक इतिहास, हिमालय, कांग्रेस, कम्यूनिस्ट, प्रजासोशलिस्ट आदि पर सम्पादकीय लीखि अपन व्यापक ज्ञान ओ वस्तुनिष्ठ विचारक परिचय सेहो देलनि अछि। क्षेत्रीय सँ ल' क' अन्तर्राष्ट्रीय स्तर धरिक राजनीति, समाजनीति ओ समस्या सभ पर हुनक बेबाक टिप्पणी देखबा-पढ़बा जोगर अछि। हुनकर विरोध, प्रतिरोध, मन्तव्य, समर्थन आ खिधांश सभ किछु हुनक सोच-विचार ओ पक्षधरताकें बहुत कमे शब्दमे प्रकट करैत अछि। भाषाधार प्रान्तमे ओ कहैत छथि, 'कांग्रेसी बाबूलोकनि जे राजा भेला त' हिनकहु उपर अंग्रेजक भूत सवार भेल। इहो झंझट सँ डेराय लगला ओ एहि सवाल कें टारय-बटारय लगला। देशकें यदि आन तरहें ई लोकनि सुव्यस्त कयने रहितथि तँ सम्भव भाषाधार प्रान्तक समस्या एतेक विराट रूपमे तत्काल प्रकट नहि होइत। सुख-सुविधामे लोक एकरा किछु काल बिसरि जाइत परन्तु से भेल नहि। सुविधाक अर्थ कोन, देश नरक बनि गेल नरक। कोनो यातना, कोनो पीड़ा बाँकी नहि रहल। सर्वत्र रोग-शोक-परितापकें हाहाकार मचल अछि। ... एहि अशांति सँ जान बचयबाक रस्ता कांग्रेसीलोकनि एखन बनौने छथि जवाहर लालजीकें। ई लोकनि हुनका रामलीलाक मुरुत बनाय अंगने-अंगने शांतिक बिलौकी मंगने फिरै छथि। परन्तु एहि मुरुतक रूप कतेक दिन धरि उद्विग्न समाजकें शांत राखत? नेहरु बाबूक कुलशील ओ बाग्छटा सँ भूखल, पियासल, रुग्न, बेहाल ई अपार जनसमूह कतेक दिन धरि मुग्ध रहत!' मिथिला राज्य आन्दोलन कें जन-साधारणक सहभागिता

सँ प्रभावशाली ओ विकसित नहि भ' पयबाक स्थिति पर ओ पीड़ा सँ भरल टिप्पणी केलनि अछि, 'कर्नाटक प्रान्तक आन्दोलन गत दू मासमे बेस प्रबल भेल अछि। दू मास पूर्व धरि मिथिला प्रान्तक आन्दोलन सँ कर्नाटक बेसी अगुआयल नहि छल। आन्ध्रप्रान्त सम्बन्धी घोषणा ओ कांग्रेसक हैदराबाद सम्मिलनक बाद कर्नाटक प्रान्त आन्दोलनमे खूब प्रगति भेल अछि। तीन सय वर्षक इतिहासमे मिथिला जहिना पछुआयल छल तहिना फेर पछुआयत।' 'मिथिला राज्य' शीर्षकमे ओ मैथिल ब्राह्मणकें राज्य आन्दोलनक दिशामे विशेष रूपें अभिमुख करैत छथि, 'मैथिल ब्राह्मणक एहि विषयमे विशेष कर्त्तव्य अछि। संख्यामे बेचारे अल्प छथि परन्तु वर्ण ओ विद्याक कारण समाजमे सर्वोपरि रहला अछि। यावत् ई लोकनि अपन शक्तिक उपयोग समस्त समाजक कल्याण हेतु करै छला तावत् हुनक उच्चता मानयमे लोक गौरव अनुभव करै छल। जखन कुलक ओ वर्णक बलें केवल स्वार्थमे लिप्त रहय लगला, ब्रह्मवादक तिरस्कार कय ईर्ष्या-द्वेष अब्राह्मणहिक प्रति नहि अछि, अपनहुमे ककरो केओ उन्नति, सुयश वा प्रतिष्ठा सहयबला नहि। एहि सँ समाजहिक नहि ब्राह्मण वर्गहु अत्यन्त अहित भ' रहल अछि। ओ लोकनि याज्ञवल्क्य-मण्डनक औदार्य किछुओ मात्रामे आनथु, सर्व खल्विदं ब्रह्मक भाव थोड़बो फेर लाबथु त' हुनक अपन तथा समस्त समाजक बड़ उपकार हयत। तखन ओ मिथिलाहिक नहि समस्त भारतक फेर सम्मान-पात्र बनता।'

अपन सम्पादकीय सभक माध्यमे डॉ॰ लक्ष्मण झा सोझरायल, निर्भीक ओ सुनिश्चित विचार प्रकट करैत छथि। ओ वेद, समाजवाद धरिक विचार ओ आचार कें अपन कथनक आधार बनबैत छथि। हुनकर जीवन ओ जीवनमूल्य, सामाजिक, राजनीतिक सोचक स्पष्ट छाप हुनकर सम्पादकीय सभ पर पड़ल अछि। सभटा एकदम सुस्पष्ट देखार अछि। किछुओ चोराओल-नुकाओल, सान्ध्य-भाषा मे नहि। ओ कांग्रेस ओ नेहरु पर खूबे तमसायल छथि। अमेरिकाक राजनीतिक विरोधी छथि। विदेश नीति पर हुनकर मन्तव्य ओ टिप्पणी देखबा जोगर अछि। आइयो प्रासंगिक लगैत अछि। ओ अंग्रेजियतक खिधांश करैत छथि। शोषित-पीड़ितक पक्ष मे छथि।

रूसक समर्थक छथि। भारत पर अमेरिकाक प्रभुत्व नामक अपन सम्पादकीय मे कहैत छथि जे भारत पर अमेरिकाक प्रभाव बड़ भयंकर रूपें बढ़ि रहल अछि। राष्ट्रीय जीवनक प्रत्येक क्षेत्र मे अमेरिकाक लोक तथा ओकर भारतीय एजेन्ट घुसि रहल अछि। अपन सम्पादकीय मे ओ कविकुल गुरु रवीन्द्रनाथ ठाकुरक रूस जेबाक चर्च करैत छथि आ कहैत छथि जे 1929 मे जखन रवीन्द्रनाथ अमेरिका जयबाक हेतु तैयार भेला तँ अमेरिकन सरकार हुनका 'दुष्ट आगन्तुक' कहि अमेरिका जयबा सँ रोकि देलकनि। 1930मे रवीन्द्रनाथ रूस जयबाक हेतु तैयार भेला त' रूस हुनक स्वागत कयलक। रवीन्द्रनाथ ओत' सँ अयलाक बाद 'रसियार चिठी' लीखि दुनिया कें बतौलनि। रूसहि सन समाजव्यवस्था भारत मे कायम करबाक हेतु, रूसहिक लोक सन सुखी-सम्पन्न, स्वतंत्र ओ कलाविद् अपना देशक लोककें बनयबाक हेतु व्याकुल भ' उठला। डॉ॰ लक्ष्मण झा अपन सम्पादकीय के अन्त मे कहैत छथि जे 'अमेरिकावाला बनिया थिक-सस्त भाव पर चीज खरीदै अछि ओ महग भाव पर बेचैत अछि। नेहरू साहेबक स्वागत-सत्कार कय ओ बड़ सस्त मे भारत कें खरीद लेलक।' डा॰ लक्ष्मण झाक राजनीतिक लाइन मिथिला राज्य आन्दोलन लेल गम्भीरता सँ विचारबाक लेल प्रेरित करैत अछि। ओहि लाइनकें आगू बढ़ायब बादमे सम्भव नहि भ' सकल। मिथिला राज्यक लेल चर्च-वर्च आइयो-काल्हि सुनैत छी। मुदा लक्ष्मण झाक देखाओल बाट पर सोचबा-विचारबाक खगता अनुभव नहि कयल जा रहल अछि। एहना मे डा॰ सुरेश्वर झाक द्वारा विचार-चिन्तामणिक प्रस्तुति निश्चिते स्वागत योग्य डेग थिक।

जेना कहलहुँ डा॰ भीमनाथ झा जाहि काल विशेषमे सम्पादकीय लीखि रहल छला से भाषा आन्दोलनक काल छल। आन्दोलनमे बेश सक्रियता रहय। विरोधक स्वर मुखर छल। जुलूस-धरना पुरजोर रूपें चलय। ओ अपन सम्पादकीय मे जुलूस-आयोजनक अनिवार्यता, गरिमाक अनुसार भाषाक स्थान रहय, सरकारक भाषानीति आ मैथिली, मैथिलीक प्रश्न आ जुलूस, आन्दोलनक बढ़ैत चरणमे, मैथिलीकें हिन्दी सँ जोड़ब भ्रामक, महाघातक, मातृभाषाक प्रश्न : रोटीक प्रश्न, मैथिली आ श्री जगजीवन राम, सरकारक

भाषा जनताक गराक घेघ बनय? मिथिलांचलक जनताकें जबाव चाही, एक बेर फेर समय आबि तुला गेल अछि, अधिकार लेबाक बस्तु मँगबाक नहि, तावत तकर आशा दुराशा मात्र, ई की संकेतित करैत अछि? मैथिली कोना रहत?, मैथिली के अपमान के क' रहल अछि?, संसदक दलान पर मैथिली-बन्धु, स्वागत!, मैथिलीकें बिहारमे राजभाषा बनाउ आदि शीर्षक सँ सम्पादकीय लीखि अपन मत, मिथिलांचलक जनताक मत व्यक्त क' रहल रहथि। हमरा जनैत मैथिली पत्रकारिताक लेल ओ बड़ विशेष काल रहय। एक पत्रकारक रूपमे ओहि समयमे डा॰ भीमनाथ झा ऐतिहासिक दायित्वक निर्वहन केलनि।

मैथिलीक मांगक समर्थनमे निकलल जुलूस सँ ओ मानलनि जे एकर प्रभाव, निश्चित रुप सँ, सरकार आ जनसाधारण दुनू पर गम्भीर रुपें पड़ल। ओ एहिसँ उत्साहित भ' अपन सम्पादकीयमे लिखलनि जे, 'एहि वर्ष जत' कतहु विद्यापति पर्व समारोहक आयोजन कएल जाय, ओहिमे जाहि कोनो स्तर पर सम्भव भ' सकय, जुलूसक आयोजन कयले जाय आ सरकारकें अपन माङक सम्बन्धमे ज्ञापन पठाओले जाय।' भाषा आन्दोलनक क्षेत्रमे बढ़ल सक्रियता, समर्थन सँ डा भीमनाथ झा आशा कर' लगैत छथि, 'लगैछ, मिथिलांचलक सभ क्षेत्रक जनतामे उत्साहक लहरि जे उमड़ि उठल अछि, से बाढ़िक पानि जकाँ लगले विलीन भ' ग़ेनिहार नहि थिक। लगैछ, एही हिलकोरमे मैथिलीक ने केवल एके, अपितु अन्यो महत्वपूर्ण अँटकल समस्या सभ भसिया जाएत। लगैछ, एहि हिलकोरमे संवैधानिक मान्यताक प्रश्न सेहो जगजियार भ' क' समाधानक कछेड़ ताकि लेत। लगैछ, एही हिलकोरमे भाषाकें जोड़िक' वर्गवाद-जातिवादक जे अमती काँटक गाछ रोपि देल गेल अछि, से जड़ि-मूल सँ उखड़ि क' दहा जायत।' आशा, उत्साह ओ सक्रियताक अही वातावरणमे ओ मातृभाषाकें रोटी सँ जोड़ैत छथि। रोजी-रोजगार सँ जोड़ैत छथि। अन्तर्राष्ट्रीय बाल वर्षमे बाल वर्ग लेल मैथिलीमे पाठ्यपुस्तकक अनुपलब्धताक बात उठबैत छथि। जनता दिस सँ सरकार सँ ई अपेक्षा करैत छथि जे ओ पोथीक लेल रचना चुनबाक स्तर आ विषय सम्बन्धी अपेक्षित सर्तकता रहय, से देखय। मैथिलीक विभिन्न

माँग ओ समस्याक प्रति सरकारक उदासीनताक संगहि ओ आत्म-निरीक्षण सेहो करैत छथि। अपन एक सम्पादकीयमे ओ कहि उठैत छथि, 'हमरालोकनि अनका-अनका तँ चिन्हैत छी, मुदा एखन धरि अपनाकें नहि चिन्हि सकलहुँ अछि, अपन कमजोरीकें नहि जानि सकलहुँ अछि। से जा धरि जनबाक चेष्टा नहि करब, ओकरा यावत काल दूर नहि क' लेब, तावत काल जंगले मे कनैत रहि जायब हमरालोकनि।' एही क्रममे ओ जनशक्ति पर भरोस व्यक्त करैत छथि। ई विश्वास हुनकामे एक छोटसन घटना सँ उत्पन्न भेल अछि। 'विद्यापतिक एक मूर्त्ति रहिका चौक पर स्थापित कयल गेल अछि आ ओहि चौकक नाम विद्यापतिक नाम पर राखल गेल अछि। एम्हर, कहाँदन कोनो पुलिस-भानक ठोकर सँ विद्यापति-मण्डप टूटि गेल तँ सरकारकें झुक' पड़लैक। सरकारी खर्च सँ ओकर पुर्ननिर्माण भ' रहल छैक। ई छोटसन घटना अपनामे बड़ पैघ सम्भावनाकें समाहित कयने अछि।'

मैथिलीक प्रसंग बिहार सरकारक उपेक्षा-नीति पर डा॰ भीमनाथ झा कतेको सम्पादकीयमे बहुत तर्कपूर्ण ओ सोदाहरण अपन बात रखैत छथि। एहिमे ओ डा॰ जगन्नाथ मिश्रक कटु विरोध सेहो निर्भीक रुपें करैत छथि। ओ कहि उठैत छथि, 'मुख्यमंत्री डा॰ जगन्नाथ मिश्र कतबो मधुर-मधुर बात बाजथु, मैथिलीक हित लेल ढोल पीटथु, मुदा बुझनिहार ई बुझिते अछि जे करबाक काल हुनक सरकार वैह करत जाहि सँ मैथिलीक हित पर आघात होयतैक, भलें एहिसँ औचित्योक हनन किएक ने होइत हो।' ओ डा॰ साहेब पर मैथिलीक अपमान करबाक आरोप सेहो लगबैत छथि। मैथिलीक बदला उर्दूकें द्वितीय राजभाषा बनेबाक डा॰ जगन्नाथ मिश्र सरकारक निर्णय पर ओ जमि क' प्रहार करैत छथि। निर्णय मे लेल गेल भेदभाव, खोखलापन ओ बलधिंगरो के ओ सोदाहरण उघारि क' राखि दैत छथि। डा॰ जगन्नाथ मिश्र द्वारा उर्दूकें द्वितीय राजभाषा बनयबाक सरकारी निर्णयक औचित्य लेल बेर-बेर कांग्रेसक घोषणापत्र ओ आलाकमानक निर्देशक दोहाइ देला पर ओ ओहि निर्देशे के समक्ष राखिक' निर्णय के खारिज क' दैत छथि। 'निर्देशमे कहल गेल अछि जे कोनो राज्यमे ओही भाषाकें द्वितीय राजभाषा बनाओल

जाय जाहि भाषाक प्रयोग कम सँ कम तीस प्रतिशत व्यक्ति करैत हो तथा कोनो खास जिलामे ओही भाषाकें द्वितीय भाषा बनाओल जाय जाहि भाषाक प्रयोग कम सँ कम साठि प्रतिशत लोक करैत हो।' ओ एहि निर्देशक पालन लेल मुख्यमंत्रीकें चुनौती दैत छथि। कहैत छथि जे, 'उक्त निर्देशक अक्षरशः पालन भ' जायत तँ स्वतः मिथिलांचलक द्वितीय राजभाषाक पद पर मैथिली आसीन भ' जायत। एतबे नहि, राज्यमे तीस प्रतिशत भाषाभाषीक सिद्धान्तक बल पर तँ मैथिली सम्पूर्ण बिहार प्रदेशक राजभाषा होयबाक योग्यता रखैत अछि।' एहि प्रकारें डा॰ भीमनाथ झा नीति-निर्देश ओ निर्णयमे फाँक देखाक' मैथिलीक पक्षकें सबल रुपें प्रस्तुत करैत छथि।

डा॰ भीमनाथ झा भाषा-आन्दोलनक अतिरिक्त साहित्य, राजनीति, व्यक्तित्व, पाबनि पर सेहो सम्पादकीय लिखने छथि। साहित्यमे ओ कथाकारक सामूहिक मौन?, किएक लिखत? ककरा लेल? साहित्यकारक प्रति सम्मानक-भावना, पाठकीय समस्या बनाम वितरण-व्यवस्था, कवि-सम्मेलन : सफल वा असफल, साहित्यकारक लेल पेंशन-योजना लागू हो, साहित्यकारक मौन : टुटबाक उपाय कोन? (तीन अंकमे), प्रकाशनक अवसर : चाही पाण्डुलिपि, मैथिली लेखनमे मन्थरगामिता, जीवन-प्रवाह, विद्यापति पर्व : दशा-दिशा, मिथिलांचलमे विद्यापति पर्व पर सेहो सम्पादकीय लिखलनि अछि। कथाकारक मौन पर लिखैत भीमनाथ झा ई आशा व्यक्त केलनि अछि जे सामूहिक मौनक बाद जे स्वर मुखर होयत से एहि विधाकें बहुत आगाँ घीचिक' ल' जायत। ओ सम्पादकीय मे ईहो कहलनि अछि जे कथाक विकास मन्द पड़ि गेल अछि। जाहि समय मे ओ ई सम्पादकीय लीखि रहल छला ओहि समयमे तुलनात्मक रुपें कथा खूब छपि रहल छल। डा॰ मेघन प्रसादक कथा कोशक अनुसार 1971-81क बीचमे चौबीस सय उन्हत्तरि टा नब कथा प्रकाशित भेल अछि। ओ दशक एखन धरि सभ सँ बेसी नब कथा प्रकाशनक दशक बनल अछि। 1990सँ सगर राति दीप जरयक बावजूदो सयटा नब कथा नहि छपि पबैत अछि। एहि तथ्यकें दृष्टिमे रखैत हमरा भीमनाथ झाक सामूहिक मौनक प्रश्न उठायब ई सोचबाक लेल विवश करैत अछि जे कदाचित मौनक अथवा विकासक

चिन्ता सर्वाधिक सक्रियताक काले मे होइत छैक। एतबे नहि, जाहि काल विशेष मे सामूहिक उद्देश्य लेल लोकक आकांक्षा, एकजुटता ओ सहभागिता, सक्रियता बढ़ल रहैत अछि, तखने सैद्धान्तिक ओ वैचारिक विकासकें सेहो गति भेटैत छैक। विकास लेल द्वन्द्व त' अपरिहार्य अछिये। तैं भीमनाथ झा ओहि अवधिमे अपन सम्पादकीय सभक माध्यमे लोकक आकांक्षाकें स्वर देबाक काज केलनि अछि। वस्तुतः हुनकर सम्पादकीय लेखनोमे जे ओज, आकांक्षा, विश्वास प्रकट भेल अछि से लोक-आस्था सँ, लोकक सक्रियता सँ उपजल थिक।

लक्ष्मण झाक पोथी 'विचार चिन्तामणि' सुरेश्वर झा प्रस्तुत केने छथि। ओकर संकलन ओ सम्पादन वैह केने छथि। एहिमे भीमनाथ झाक सेहो योगदान अछि। सम्पादकीय सभक, 'मिथिला' साप्ताहिकक समस्त अंकक फोटो कापी एकेठाम जिल्द बान्हल सुरेश्वर झाकें वैह उपलब्ध करौलनि। सुरेश्वर झा 'विचार चिन्तामणि' प्रस्तुत करैत कहैत छथि जे, 'एहिठाम संकलित समस्त आलेखमे मुख्य स्वर अछि मिथिला ओ मैथिली। मिथिलाक सर्वांगीण विकास तथा मैथिली भाषा-साहित्यक ओकर गौरवशाली इतिहासक अनुकूल समृद्धि करब डा॰ लक्ष्मण झाक अपन जीवनक सर्वोच्च उद्देश्य छलनि। ओहि उद्देश्यक पूर्त्ति लेल ओ समस्त जीवनकें समर्पित केने छला। डाक्टर साहेब अपन वैयक्तिक सुख ओ सुविधाक लेल ने किछु सोचलनि आ ने किछु कयलनि। जीवन भरि अविवाहित रहि महात्मा गांधीक पद्चिन्ह पर चलैत अपन महान उद्देश्यक प्राप्ति हेतु संघर्ष करैत रहला।' अपन मिशनक अन्तर्गत लक्ष्मण झा पत्रिका निकाललनि। पत्रिकामे तत्कालीन राजनीति, भाषा, क्षेत्र ओ व्यक्तित्व सभ पर अपन विचार प्रकट केलनि। चहुँ दिस विभिन्न विषय पर विचार प्रकट करैत ओ मिथिलाकें नहि बिसरल छथि। मिथिलाक लोकक दुख ओ पीड़ाकें नहि बिसरल छथि। मुदा तैं ओ क्षेत्रीय सीमामे बन्हि क' संकुचित नहि होइत छथि। ओ जनैत रहथि जे मिथिलाक दुखक निदान भारत कि विश्व सँ फराक ताकब सम्भव नहि छैक। एहि सभ प्रश्न पर हुनकर दृष्टि यथार्थवादी छनि। मुदा जेना कि होइत छैक हरेक प्रश्नक उत्तर हरेक व्यक्ति लग नहि रहैत छैक। एहने प्रश्न अछि

मिथिलाक सन्दर्भमे हिन्दी आ मुसलमानक। मोन पाड़बाक थिक जे लक्ष्मण झा आन्ध्रप्रदेशक अगुआ जेबाक गप्प केने छथि। ओ ईहो कहलनि अछि जे मिथिला तीन सय वर्षक इतिहासमे पछुआयल रहल। वस्तुत: आन्ध्र प्रदेशक ऐतिहासिक-सांस्कृतिक परिचितिमे हिन्दू आ मुसलमानक अवदानकें समान भाव सँ स्वीकारल गेल। ओहि परिचितिमे हिन्दू आ मुसलमान समान रुपें अपन साझी स्वत्वकें देखैत अछि। ओना मुसलमानलोकनि हिन्दीकें छोड़ने नहि छथि। मुदा एहि मामिलामे आन्ध्र आगू रहल आ मिथिला पाछू होइत गेल। अपन तमाम उदारताक बावजूद लक्ष्मण झा मिथिला लेल ब्राह्मणे पर भरोस केलनि। नेतृत्वक आकांक्षा केलनि। दुख सँ मुक्ति लेल गायत्री महामंत्रेकें धरबाक लेल कहलनि। डा० लक्ष्मण झाक राजनीतिक लाइन आइयो प्रासंगिक अछि मुदा हुनकर समाजनीतिक सीमा छनि। रूसी विद्वान बोरीस क्लूयेब स्वतंत्र भारतक जातीय तथा भाषायी समस्या पर पोथी लिखने छथि। ओहि पोथीमे ओ लिखने छथि जे, 'मैथिली भाषी उत्तर बिहार मे अलग मिथिला गणराज्यक स्थापना लेल लक्ष्मण झाक आन्दोलन सामान्य जनताक नजरि मे दरभंगाक मैथिल ब्राह्मण सभक राजनीतिमे राजपूत ओ भूमिहारक राजनीतिक एकाधिकार सँ बिल्कुल अलग सत्ताक पृथक अनन्य क्षेत्र प्राप्त करबाक आकांक्षाकें द्योतित करैत अछि।'

'लघूत्तरीय' पोथी भीमनाथ झा स्वयं प्रस्तुत केलनि अछि। पोथी प्रस्तुत करैत ओ कहैत छथि, 'मिहिरक सम्पादकीयमे उत्तमांश शेखरजी आ मोहनजीक लिखल छनि। एहि दुनू गोटेक शैली ततेक भिन्न आ बेकछायल छनि जे एकरा बेरायब बोद्धाक लेल कठिन नहि होयतनि। हमर लिखल त' सिन्धुमे बिन्दु जकाँ अछि। तें, भेल जे ओहि बिन्दु सभकें एकटा लोटकीमे ध' ली। हमरा बेसी प्रसन्नता होयत जखन ओहो दुनू महानुभावक सम्पादकीय संकलित भ' जयतनि। ओ बस्तु मैथिली लेल स्थायी महत्वक होयत।' मिथिला-मिहिरक सम्पादकीयमे ककरो नाम नहि रहैत छल। स्वाभाविक अछि जे शेखरजी ओ मोहनजीक सम्पादकीय सभ सन अथवा ओहू सँ नीक लिखबाक लेल भीमनाथ झा ओकर स्तरक प्रति साकांक्ष रहथि। एहि लेल ओ अपन क्षमता आ योग्यताक भरपूर उपयोग केलनि। आ से मेहनति सँ

केलनि। शेखरजी ओ मोहनजीक सम्पादकीय सभ संकलित भ' उपलब्ध नहि अछि तैं तुलनात्मक रुपें किछु कहब मुश्किल। मुदा जँ खाली भीमनाथ झाक बात करी त' ओ एक पत्रकारक सजगता, स्पष्टता ओ निर्भीकता तथा एक साहित्यकारक अस्मिता-बोध सँ सम्पन्न देखाइत छथि अपन सम्पादकीय सभमे। सजगता, स्पष्टता आ निर्भीकता लक्ष्मण झाक सम्पादकीयमे सेहो भेटैत अछि। मुदा दुनूक सम्पादकीयमे जे अन्तर अछि से दुनूक आस्था आ विश्वासमे आयल अन्तर अछि। लक्ष्मण झाक पूँजी अर्जित ज्ञान ओ तकर व्यावहारिक उपयोग थिक त' भीमनाथ झाक पूँजी मैथिली आन्दोलन लेल जनशक्तिक सामर्थ्यमे भरोस थिक। फलस्वरुप लगैत अछि जे लक्ष्मण झा जे कहैत छथि से जेना ओ स्वयं कहि रहल होथि मुदा भीमनाथ झा जे कहैत छथि से लगैत अछि जे समूह कहि रहल हो। दुनूक कहबाक शैलीमे ई अन्तर मिथिला-मैथिली आन्दोलनमे जनशक्तिक बढ़ैत सामर्थ्य ओ सहभागिताक अन्तर थिक। 1952-53सँ 1976-80क बीच ओहि पच्चीस-तीस वर्षमे मिथिला-मैथिली आन्दोलनमे लोकक सक्रियता बढ़ल अछि। व्यापक भेल अछि। से सक्रियता आ व्यापकता राज्य सँ बेसी भाषा आन्दोलनमे आयल। दुनूक सम्पादकीयमे अपन-अपन काल विशेषक अनुसार तकरे स्वर मुखर भेल अछि। दुनूक सम्पादकीय व्यापक लोकक विचार लगैत अछि। एहन व्यापक लोकक विचार जे फराक-फराक काल विशेषमे अपन ऐतिहासिक दायित्वक निर्वहन केलनि।

भावभूमि रसवन्त पोथी, 2011

■

समकालीन मैथिली कविता

साहित्य समाजक दर्पण थिक। ई विचार फ्रांसीसी विचारक इपॉलित अडोल्फ तेन (1828-93) द्वारा प्रारम्भ कएल गेल अछि। ओ कला तथा साहित्यक दार्शनिक इतिहासकार ओ समालोचक छला। तेन साहित्यक ज्ञानात्मक मूल्य के स्वीकार करैत छथि। हुनका हिसाबें साहित्यक अध्ययन सँ ओहि रचनाकालक मनुक्खक भावनाक रूप, विचारक गति और जीवन के दशाक बोध होइत छैक। ओहिमे प्रायः अपन युग के कखनहुँ-कखनहुँ प्रजातिक आत्माक मनोविज्ञान सेहो प्रकट होइत अछि।[1]

बादमे साहित्य के समाजक दर्पणेटा नहि मानल गेल। एक डेग आगू बढ़ि क' ओकरा समाजक परिवर्त्तन आ विकास के प्रभावित कर' बला सक्रिय शक्तिक रूपमे सेहो देखल गेल। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल हिन्दी साहित्यक इतिहास मे लिखैत छथि जे जनताक चित्तवृत्ति मे परिवर्त्तनक संग-संग साहित्यक स्वरूप मे सेहो परिवर्तन होइत चलैत अछि। साहित्यक ई सामाजिक दृष्टि समाज सँ साहित्यक अधिक जटिल सम्बन्ध के समक्ष अनैत अछि। एहि धारणा मे समाज आ साहित्यक बीच जनताक चित्तवृत्ति साहित्यमे प्रतिबिम्बित होइत अछि। सीधा समाज नहि। प्रतिबिम्बो संचित अछि-छानल-चुनल आ सोचल। सामाजिक यथार्थ आ साहित्यक बीच चेतनाक मध्यस्थता अछि। एहि चेतना के जनने बिना समाज सँ साहित्यक सम्बन्ध बूझब कठिन अछि।[2]

तेनक समाजशास्त्रीय पद्धति तथ्य (कृति) सँ चेतना (लेखक) दिस बढ़ैत अछि आ चेतना सँ ओकर निर्माणक परिस्थिति दिस। ई चेतना की थिक? चेतना पदार्थक दीर्घकालीन विकासक उपज थिक। परन्तु ओ

पदार्थक आधार पर आकार ग्रहण केलाक बाद पदार्थक विकास के सेहो सक्रियतापूर्वक प्रभावित करैत अछि। लेनिन एही अर्थ मे कहने छला जे मनुष्यक चेतना ने केवल वस्तुगत जगत के प्रतिम्बित करैत अछि अपितु ओकर सृजन सेहो करैत अछि।[3] हिन्दीक सुप्रसिद्ध कवि मुक्तिबोधक एहि सन्दर्भ मे बहुत फड़िछायल टिप्पणी अछि। ओ कहैत छथि जे साहित्यिक कलाकार अपन विधायक कल्पना द्वारा जीवनक पुनर्रचना करैत छथि। जीवनक यैह पुनर्रचना कलाकृति बनैत अछि। ओ सारतः ओहि जीवन के प्रतिविम्बित करैत अछि जे जीवन एहि जगत मे वस्तुतः जियल और भोगल जाइत अछि-स्वयं के द्वारा अथवा अन्य लोकक द्वारा। ई जीवन जखन कल्पना द्वारा पुनर्रचित होइत अछि तखन ओ पुनर्रचित जीवन वास्तविक जगत क्षेत्र मे जियल आ भोगल जीवन सँ सारतः एक होइतो स्वरूपतः भिन्न होइत अछि।[4]

कविताक संग मुदा किछु विशेष बात सेहो अछि। साहित्यिक आन रूपक अपेक्षा कविताक समाजशास्त्रीय विवेचन सहज नहि अछि। कविता मे जीवनानुभव या अनुभूति सँ रूपक सम्बन्ध दोसर साहित्य रूपक तुलना मे अधिक आत्मीय और किछु जटिल होइत अछि। विम्ब, प्रतीक, संकेत, फैंटेसी आदि कविताक साधने टा नहि होइत अछि। कतेक बेर साधन और साध्य मे अद्वैत अथवा अभेदक स्थिति होइत अछि। फेर लय, छन्द, और संगीतक आन्तरिक संरचना सँ सेहो कविताक विशिष्ट रूप बनैत अछि। एहि सभक उपेक्षा क' खाली सामाजिक सत्य ताक'बला साहियक समाजशास्त्र कविताक समाजशास्त्र नहि भ' सकैत अछि।[5]

'हमरा लोकनिक युग आ आधुनिक मैथिली कविता' शीर्षक अपन प्रसिद्ध निबन्धमे कवि राजकमल चौधरी मनुक्खक अन्तरंग, ओकर आत्मदमन, आत्मश्रृंगारक गप्प करैत कहलनि जे 1960क उपरान्त आधुनिक कविता मानव-जीवन आ मानवक अन्तप्रदेशक एकटा 'नव' क्षेत्रमे प्रवेश कयने अछि। एहि काल सँ पहिने कविताक मूल आ मुख्य विषय छल विद्यापतीय श्रृंगार आ प्रेमाभिव्यक्ति, प्रकृति-दर्शन, सुधारवाद, आर्थिक वैषम्यक प्रति हाहाकार, पूजा भावना आ विज्ञान-सम्मत नवीनता-विरोध। ओ इहो कहलनि

जे देशमे स्वाधीनता आयल 1947 मे, किन्तु आब 1960मे आबि क' हम सभ बूझैत छी, आ निर्णय करैत छी जे स्वाधीनता हमरा सभक लेल नहि, सत्ताधारी वणिक सम्प्रदाय आ राजनीतिज्ञ लेल आयल अछि। सभ किछु रहितो, किछुओ टा नहि अछि हमरा सभक अपन। कोसिकाक बान्ह बन्हायल मुदा हमर गामक धरती एखनो मलेरिया आ भाङक अतिरिक्त आर किछु नहि जन्म दैत अछि। अर्थ-संकट बनि गेल अछि समाज जीवनक एकमात्र धर्म-संकट आ हमरा सभक प्राण जा रहल अछि।[6]

आधुनिक मैथिली कविता मे यथार्थवादी स्वर जखन आयल त' ओहि पर बहुत रास आरोपो लगाओल गेल। ओकरा पर असम्प्रेषणीयता, दुर्बोधताक आरोपक संग ओकर सार्थकता पर सेहो आंगुर उठल। आलोचक मोहन भारद्वाज एहि आरोपक उत्तर दैत कहैत छथि जे यथार्थवादी साहित्यक सम्बन्ध मे कहल जाइत अछि जे ओ कुरूपता, वीभत्सता तथा निराशाक साहित्य थिक। ई धारणा सर्वथा भ्रामक अछि। असल मे हम सभ जाहि सामाजिक व्यवस्था मे जीबि रहल छी ताहि मे कदाचारक कमी नहि अछि। सौंसे समाज पर ओकरे साम्राज्य अछि। तैं संत्रस्त आ कुंठित होयब आजुक लोकक नियति जकाँ भ' गेल अछि। यथार्थवादी साहित्य एहि कुंठा ओ संत्रास के देखार करैत अछि। ओकर मारात्मक प्रभाव कें प्रत्यक्ष करैत अछि। ओकरा समाप्त करबाक लेल संघर्षशील बनबैत अछि। यथार्थवादी साहित्य तें अनिवार्यत: आस्थावादी साहित्य होइछ। मनुक्खक शक्ति मे ओकरा अविचल आ अखण्ड आस्था रहैत छैक।[7]

डा॰ जयधारी सिंह यथार्थवाद ओ आधुनिक मैथिली कविता नामक निबन्ध मे कहैत छथि जे शुद्ध यथार्थवादी होयबाक हेतु समस्त मनोग्रन्थि पर 'अहं' के आ भोक्ता के अधिकार अपेक्षित अछि, तहिखन ई सम्भव अछि जे भोगल यथार्थ कें शुद्ध रूपमे चीन्हि सकबैक। यथार्थवाद ताहि अन्तश्चेतना कें अनिवार्य मानैत अछि जे मनुष्यक समस्त विकार सभक निरोधक पश्चाते प्राप्य होइत आयल अछि। ततबे नहि, अपन विकार सभ कें बिनु जनने, बिनु स्वीकारने, जे वस्तु जे अछि तकरा सएह वस्तु बुझब कठिने नहि, असम्भव। तें यथार्थवाद ओहि अन्त:साधनाक परिणति थिक जे अपन

समस्त मनोग्रन्थि सभ, काम-अर्थ-प्रतिष्ठाक लिप्सा अथवा पुत्र-वित्त लोक सम्बन्धी एषणाक पूर्तिक हेतु व्यग्रता आदि दुर्बलता व विकार सभ सुझैत रहय।[8]

मैथिली कविता मे जखन बस्तुत: जियल आ भोगल जाइत जीवन प्रतिविम्बित होयब प्रारम्भ भेल त' ओ आधुनिक चेतनाक संस्पर्श सँ मनुक्खक अपन सत्ताक उद्‌घोष करैत आयल। कविता संघर्षरत जनताक इतिहास के सत्य कहैत आयल .

फूसि सभटा थिक
थिक महाजंजाल
सत्य की तँ
सत्य थिक माटि
सत्य थिक संसार
सत्य थिक मानव समाजक क्रमिक उन्नति
सत्य थिक संघर्षरत जनताक इतिहास
सत्य धरती, सत्य थिक आकाश
परम सत्य मनुक्ख अपनहि थिक।[9]

संघर्षरत जनताक इतिहास के सत्य कहैत, श्रम पर आधारित जीवन, अपना पर भरोस आदि विचारक संग देश के भेटल स्वतंत्रता सँ उत्साहित कविक चेतना सतयुग अयबाक आशामे ओकर स्वागत लेल तैयार भेल

सभ के भेटत विकासक अवसर
हेतै असली गुणक समादर
क्यो नहि बनतै भूदेव न डोम
केवल मानव
अप्पन भाग्य विधाता मानव
जै युग मे
से मानव युग
असली सतयुग आबि रहल अछि
ई मानव कवि अपन धर्म बुझि
ओकरे स्वागत गाबि रहल अछि।[10]

मुदा से सतयुग नहि आयल। जेना राजकमल चौधरी कहैत छथि जे वर्ष 1960मे आबि क' लोक के ई बुझाए लगलैक जे स्वाधीनता ओकरा लेल नहि अयलैक अछि। वणिक समुदाय आ राजनीतिज्ञ सभक लेल आयल छैक। से एवं प्रकारें बदलैत परिस्थिति, बढ़ैत अर्थ संकट, समयक विभिन्न दबाब, क्षेत्रक खास समस्या मैथिली कविता कें मानव-जीवनक अंतरंग, अन्तः प्रदेश मे प्रवेश करौलक। स्वाभाविक रूपें एहि मे कविक चेतनाक योगदान छल। अपन शासन-व्यवस्था सँ मोहभंग, समाज मे डीलर-लीडरक मेल-जोल सँ सामान्य जनजीवन मे आयल वितृष्णा, अर्थक लेल होइत मारामारीमे पारिवारिक व्यवस्था, सम्बन्धक क्रमशः क्षतिग्रस्त होइत ल जायब एक अनास्थाक मानसिकता उत्पन्न केलक। लोक अपना के असगर अनुभव कर' लागल। ई बहुत मार्मिक परिवर्त्तन छल । खास क' मिथिला लेल। मिथिला मे सम्बन्ध, लगाओ, मनुष्यत्व, सम्वेदना, एक दोसराक सुख-दुख मे सहभागिता, साम्प्रदायिक सौमनस्य, कृषक जीवन सँ उपजल सामूहिकताक भावनाक संग दार्शनिक रूपमे समाज आ जनक संग जुड़बाक एक विशिष्ट इतिहास रहल अछि। मुदा सभटा जेना छिड़िया-बितिया गेल, सभटा कनेक्शन टूटि गेल। लोकक आत्मविश्वास डगमगा गेलैक। कवि राजकमल चौधरी जखन-

एकसर अछि चन्द्रमा...
इजोरिया राति मे एकसर अछि, एकसर यात्री अछि चन्द्रमा
हमरे सन एकसर
हमरे सन ताकि रहल अछि कोनो समुद्र, कोनो मृत्यु
कोनो अन्धकार सर्प-विवर
हमरे सन एकसर अछि चन्द्रमा
हमरे सन पियासल अछि, थाकल अछि, जर्जर अछि चन्द्रमा
हमरे सन एकसर अछि...।[11]

कविता लीखि रहल छला त' (हुनक 'मनोग्रन्थिक' एहिमे उपस्थितिक बावजूद) ओ लोकक असगर होइत चल जेबाक आत्मपीड़ा के अभिव्यक्त क' रहल छला। कवि रमानन्द रेणु 'सम्बन्धक टूटैत ताग' कविता मे सम्बन्धक टूटैत ताग के देखि रहल छला। भोगि रहल छला।

भाइ,
एक हाथे थपड़ी नहि बजैत छैक
एक पएर सँ
समुद्र नांघल नहि जा सकैत अछि
आ स्नेहक बिना
दीप नहि जरैत छैक
आ एहि अन्तहीन समयक
डारि पर
एकसर ठाढ़ हम
देखि रहल छी टूटैत ताग
उफनैत समुद्र
परती आ मरभूमि
आ भुतिआइत मनुक्ख
काहि कटैत गाम
नगर, देश आ महादेश
महा...दे...श...।[12]

सभ सम्बन्धक बीचमे क्रमशः टाका अपन फेंच काढ़ने बैसि रहल छल। अर्थक विष सम्बन्ध स्नेहक अमृत के नष्ट क' रहल छल। सम्बन्ध मे अनास्था जनमि रहल छल। लोक मुँह नुका क' कानि रहल छल

उज्जर दप-दप इनवेलप मे
मोड़ल-मारल सन कागज पर,
आबि गेल अछि गाम परक ई पत्र!
उत्सुकतावश खोलि पढ़ैत छी'-कारी-कारी आखर...
'चिरंजीव!...सकुशल होयब, पहुँचल परसू सयगोट रुपैया
सभ कुशल अछि।'
एक पंक्ति ने बेसी...एक पंक्ति ने थोड़!
जानि नहि किए अछि उमड़ि रहल ई चंचल-चंचल नोर!![13]

ई असगर होइत चल जेबाक पीड़ा गाम मे नगरवासी आ शहर मे प्रवासी बनल रहबाक त्रिशंकु स्थिति सँ सेहो उपजल छल जे एहन लोक के जीवन सँ उदासीन केलक। भिनसर सँ राति काटब मुश्किल भ' गेलैक। जीवन मे कोनो उल्लास, उत्सुकता नहि रहलैक

ओहिना किछु कालक बाद
हम भ' जायब बहार
सड़कक भीड़ देखि लगाएब जनसंख्या वृद्धिक अनुमान
टी॰ पी॰ टेलेक्स आ मालिकक बी॰ पी॰ देखि
शुरूह करब काज
काँच मालक बढ़ैत दाम
आ तैयार वस्तु पर सक्कत होइत सरकारी लगाम
हैत हमर चिन्ताक कारण
अपन त्रिशंकु अस्तित्व कें बिसरि
भरि दिन करैत रहब कौटिल्य सम्भाषण
भिनसर भ' गेल अछि आ ओहिना आजुक दिन बीत जायत।[14]

मुदा जीवनमे एहन उदासीनता, असगर होयबाक आत्मपीड़ा, सम्बन्धक टूटन, अनास्था आदि जेहेन आ जतेक मिथिलाक मध्यवर्ग अर्थात् सवर्ण वर्गमे व्याप्त छल तेहेन निम्नवर्गमे नहि। ओत' जीवनक किछु दोसरे हलचल छल। स्वाधीनताक बाद निम्नवर्गमे दुस्थितिसँ बाहर निकलबाक इच्छा आ जागरूकता क्रमशः जनमि रहल छल। कदाचार, डीलर-लीडरक दुरभिसंधि, पैघ-लोकक छल-छद्मक बावजूदो निम्नवर्गमे आशाक एक नव संचार भ' रहल छल। सैकड़ो वर्ष सँ लगातार अपने अन्हारमे जीबैत रहि अनका लेल प्रकाशक ओरिआओन कएनिहार श्रमिक वर्गक सुनसान हृदयमे एक सूर्य उदित भ' रहल छल। जेकर आभा कवितामे दुर्भाग्यवश बहुत कम आयल अछि। वामपंथी विचारधाराक प्रभावें श्रमिक आ निम्नवर्गक प्रति अपन वैचारिक प्रतिवद्धताक बावजूदो कवि अपन वर्ग सँ बाहर जा क' ओहि हलचल, आभा, लालसा, आशा, आत्मसम्मानक बढ़ैत भाव के नहि अकानि सकला। केवल 'ललका भोर' हैत तेकरे प्रतीक्षा करैत रहला।

सदिच्छा करैत रहला। ई मैथिली कविक वर्गगत सीमा छल। मुदा तैयो एहन नहि जे मैथिली कविता मे ओहि वर्ग के नहि चिन्हल गेल। हृदय मे उदीयमान सूर्य के नहि देखल गेल

ओ जे
मटिया तेलक अभाव मे
साँझे खा-पीबिक' प्रतिदिन
निचैन भ' लैत अछि
आ ककरो कोनो जलसा मे
प्रकाश-पुञ्ज माथ पर उठौने
घंटाक-घंटा अन्हार मे ठाढ़ रहैत अछि
आ जे
अन्हारे मे कहियो आँखि फोलि
अन्हारे मे कोनो दिन
अपन भावहीन आँखि मुनि लैत अछि
अनन्तकाल सँ अन्हार मे हेड़ायल
ओहि मनुक्खक सुनसान हृदय केर
हम उदीयमान सविता छी।[15]

अर्थ एवं व्यवस्थाक बढ़ैत दमनचक्र मुदा जनजीवन के बहुत प्रभावित केलक। राजनीतिक स्वतंत्रता आर्थिक स्वतंत्रता नहि द' सकल। परम्परा सँ सहनशील जनता स्वतंत्रताक बाद आयल परिवर्तन के अकानैत रहल। एक दिस जँ संघर्षक छटपटी बढ़ैत गेल त' दोसर दिस व्यवस्थाक आगू आत्मसमर्पण सेहो चलैत रहल। असगर होइत चल जेबाक अनुभव कतहु सम्बन्ध आ स्नेहक अभाव सँ आयल तँ कतहु भोगवाद मे लिप्तता सँ आयल। ई आत्महीनता, आत्मविश्वास के डगमगा देलक। सौंसे अन्हारे-अन्हार देखाइ दिअ' लगलैक। स्थिति एतेक धरि बढ़ि गेल जे लोक के जिनगी अश्लील[16] बुझना जाय लगलैक। जिनगी के एक अनिवार्य विवशता बूझि जीब' लागल। मैथिली कविता मे अभिव्यक्त जीवनक प्रति ई निराशा कविक ओहि चेतना सँ सेहो उत्पन्न भेल जाहि मे सामन्ती जीवन आ

सामन्ती परम्पराक छारनि विद्यमान छल। बिना कोनो परिश्रम के भोजन भेटबाक सुविधा, विलासी जीवनक प्रति आसक्ति, भोगवादी दृष्टि के जन्म देलक। भोगवादी मानसिकता जखन बदलैत समय मे कठोर जीवनक वास्तविकता सँ पिचायल त' जीवन मे निराशाक घटाटोप व्याप्त भ' गेल। कृषि जीवन सँ सेवा जीवन मे जेबाक विवशता सेहो नैराश्य उत्पन्न केलक। एहि मे परम्परा सँ चल अबैत स्वर्गकामक मानसिकता आ पुनर्जन्मक सिद्धान्त, जीवन के फूसि आ माया मानबाक संस्कार सेहो काज क' रहल छल

किन्तु आशा के जोगौने
जियैत रहब
सेहो एक पैघ धोखा छैक
जीवनक अर्थ
आइ समग्र रूपें चुकि गेल छैक
यथार्थ कें
ओकर सम्पूर्ण अर्थहीनताक संग
ग्रहण करब
हमर विवशता अछि
सामर्थ्य मे निहित मात्र यैह टा सत्य अछि।[17]

मैथिली कविकें सभ सँ पैघ सम्बल आ सम्वेदनाक विश्राम-स्थल रहलैक अछि गाम आ गामक स्मृति। गामे सँ ओ उर्जा सेहो पबैत रहल अछि। शहर-शहर, नगर-महानगर बौआइत रहल। मुदा नगर-महानगर कहियो अप्पन नहि भ' सकलै। एहि क्रम मे गाम भले ही अनचिन्हार[18] भ' गेल हो मुदा मैथिली मे एक्कोटा कविता महानगरक प्रशंसा मे नहि भेटत। नगरो मे रहि क' गाम, गामक लोक-वेद मोन पड़ैत रहैत छैक। अधक्के देखल, एक फाँक आँखि, एक फाँक नाक, कपार मे टकुरी सन नचैत रहैत छैक।[19] गामक लोक-वेद सेहो परदेशी अपन लोक के अयबाक प्रतीक्षा मे जीबैत रहैए। नगर मे रहनिहार पुरूख आ गाम मे बसनिहार स्त्रीक सुख-दुख आ दाम्पत्यजीवनक त्रासदीक अभिव्यक्ति मैथिली कविता मे घनेरो भेटत। जन-जीवनक ई चित्र सभ सहजे ध्यान आकृष्ट करत

दरबज्जा पर बैसल ननदोसि
आ
टिकुली सटैत ननदि
चूल्हि लग सँ सासुक जिज्ञासा
बड़ा दिन कहिया अओतैक?
बज्र पड़ौ बड़ा दिन के
कहियो अबौक
हमरा सँ पूछि क' अओतैक?
ठकुआइत सासुक आगाँ
नहु-नहु अन्हराइत राति।[20]

नगर मे रहनिहार व्यक्तिक स्थिति एहन भ' जाइत अछि जे ओ गामक लोक-वेद लेल बड़बड़ाय लगैत अछि। तड़िपिब्बा जकाँ तलमलाए लगैए

एहि अकाबोन मे अकान
जकर भिन्ने बथान
'अपन-अपन' बड़बड़ाइत
तड़िपिब्बा जकाँ तलमलाइत
हम छलहुँ
हमहीं छलहुँ।[21]

नगर आ गामक बीच त्रिशंकु जकाँ लटकल व्यक्ति देखैत अछि जे ओकर कोनो मोजर नहि रहि गेलैक अछि। हल्ला-हंगामाक बीच मे निश्चल बैसल रहि जाइत अछि। अन्हारक किछु बिगाड़ि नहि पबैए। इजोत सँ दूर भेल जाइए

हमरा लोकनिक आब कोनो मोजर नहि रहि गेलए
ने बाहरे आ ने घरे मे, केवल
परबाक जेर के डरेबाक काज बाँचल अछि
सभ तरि चलि रहलैए हल्ला-हंगामा
उन्मत्त लूट-मारि

तितलीक आत्महनन
निशाचरक ताण्डव, मुदा तइयो
हमरा लोकनि निश्चल बैसल छी
अन्हारक अट्टहास के अखियासैत
इजोत सँ दूर भेल जाइत छी।[22]

ई स्थिति शहर आ गाम मे एक लम्पटवर्गक उदय सँ सेहो भेल अछि। एहि लम्पटवर्ग लेल जिनगी केवल सुख-मौज थिकैक। कहुना चतुराइ-चालाकी सँ ककरो तंग करब, आगाँक आहार झपटि लेब, अनकर सुख-सेहन्ता के जरा देब ओकरा पसिन्न पड़ैत छैक। नैतिकता ओकरा लेल कोनो माने नहि रखैत छैक। समाजक कोनो बन्हन मानबाक लेल ई वर्ग तैयार नहि अछि। एकरा सभ के केवल टुकुर-टुकुर देखब लोकक नियति भ' गेल छैक

लंगूर तँ अपन करतब देखौने जाइछ
किछु झपटने जाइछ
किछु लपकने जाइछ
मुँह के लहू-लहुआन कयने जाइछ
दूधक बासनके ओंघरौने जाइछ
आहार पर बज्र खसौने जाइछ।[23]

हालाँकि एहन बात नहि छैक जे लोक कें ई बात बूझल नहि छैक जे एहि स्थितिक लेल उत्तरदायी के अछि। जँ व्यक्तिक अन्तरंग विभिन्न कारणें असगर होइत कुंठित होइत रहैत अछि, निराशा मे जीबैत अछि, इजोत सँ दूर भेल जाइत अछि त' एहि क्रम मे अन्तरंग के नीक जकाँ चिन्हबाक ताकति सेहो उत्पन्न भेलैक अछि। शत्रु सेहो क्रमशः देखार होइत गेल अछि। शत्रु दिस आंगुर उठा-उठाक' देखेबाक अद्‌भुत कौशल मैथिली कविता मे विलक्षण रूपें अभिव्यक्त भेल अछि। अग्निपुष्पक 'कुहेसक अन्हार'[24], कुणालक 'लोक सोझमतिया'[25], मायानन्द मिश्रक मुखौटा[26], विभूति आनन्दक 'परिचय'[27], आदि अनेक कविता सभ अद्‌भुत रूपें स्थितिक समीक्षा करैए। शत्रुक चरित्र के देखार करैए। ओकर निर्ल्लजता, ओकर टाटक स्पष्ट होइत चल जाइए।

एक दिस जँ जन-जीवनक बीच मिज्झर शत्रु के खोधि-खोधि देखार कएल गेल त' दोसर दिस लोकक अपन त्रासदी सेहो एहि मामिला मे उघार भेल। सत्य कहबाक लेल बेर-बेर ओकरा लग साहस क' जयबाक बेगरता बूझितो कोनो ने कोनो कमजोरी सँ बोल फूटि नहि सकलैक। मोहभंग आ मोहाविष्ट होयबाक विवशता आ छटपटाहटि के कवि उपेन्द्र दोषी एना व्यक्त केलनि

मीत!
अहाँक व्यवस्था बड़ तीत
इएह कहबाक लेल
हम बेर-बेर साहस क' क' जाइत छी
मुदा अहाँक कांचन-कादम्बक रस मे
ओझरा क' हम
जिलेबी रस मे अकबकाइत
माछी भ' जाइत छी।[28]

एहि प्रकारें समाज आ जनजीवन संग-चलैत, समाजक दुर्व्यवस्था लेल उत्तरदायी अनेक स्थिति-परिस्थिति पर चोट करैत, आत्मपीड़ा, आत्मदमनक अभिव्यक्ति दैत, शत्रु के उघार-देखार करैत मैथिली कविता बाहर सँ बेसी भीतर दिस मुड़ैत अछि। जीवन आ जनक भीतर मे तकैत अछि। आत्मनिरीक्षण दिस उन्मुख होइए। अपन लग-पास, लोक-वेदक प्रति गहन सम्वेदनशीलताक संग क्रमशः आत्मबल प्राप्त करबाक चेष्टा करैत अछि। अन्ततः मनुक्खक हिम्मतिक इतिहास के अभिव्यक्त कर' लगैत अछि

गुरीचक घोंट
ल' क' ढेकरनाइ आ
चिरैताक
छाक भरि क'
मुसकिआएब जकर इतिहास मे रहल हो
नीमक काढ़ा तकरा कत्तेकाल
आतंकित करतैक।[29]

क्रमशः जीवनक प्रति बदलैत दृष्टि मैथिली कविता मे देखार हुअ' लगैत अछि। अपन थाकल मोन के अपने बाँहिक[30] सहारा जखने व्यक्ति कें बुझबा जोकर होइए ओकर जीवनक्रम बदलि जाइए। ओ अनका पर भरोस करब छोड़ि, व्यवस्था आ सत्ताक आसरा त्यागि अपन सम्बल पर मात्र अपन सम्बल पर आगाँ बढ़बाक हिम्मति जुटा लैए। जीवन मे आस्था, विश्वास, उल्लासक जे किछु अंश बाँचल अछि तकरा अभिव्यक्त करबाक हेतु मैथिली कविता समधानि क' डेग उठायब शुरूह करैए

अपन सहरजमीन पर नेसब प्रकाश
जिनगी अपन होइत छैक
जगाबी अपना मे शहीदी हुलास
अपना जमीन परक अन्हार सँ
लड़बाक खातिर
ओहि पर गहूम-गेंदा अंकुरयबाक लेल
वर्छी पर टँकि जयबाक खातिर।[31]

मैथिली कविता मे जनजीवनक एहि चित्त-वृत्तिक अभिव्यक्ति ओहि ठोस धरातल सँ आरम्भ होइत अछि जत' सँ क्रियाशील जीवनक प्रति निष्ठा, श्रमक प्रतिष्ठा, श्रमजीवी लोकनिक प्रति ममत्व आ विश्वास गहन सम्वेदना संग जुड़ल अछि। जकर परम्परा मैथिली कविता मे काञ्चीनाथ झा 'किरण' आ कविवर यात्री सँ प्रारम्भ होइत अछि। जेकरा सोमदेव, कुलानन्द मिश्र, सुकान्त सोम, महाप्रकाश आ शिवशंकर श्रीनिवास आदि वैचारिक दृढ़ता प्रदान करैत छथि। ई लोकनि लोक के सोझे सम्बोधन कर' लगैत छथि। जीवन दर्शन आ जीवन पद्धतिक गप्प कर' लगैत छथि। मनोग्रन्थिक विरोध लेल जखन शिवशंकर श्रीनिवास ठहरल पानि सन जमल संस्कार के तोड़बाक[32] लेल कहैत छथि त' एकर मूल मे जीवन के सुन्दर बनेबाक अभिलाषा विद्यमान रहैत अछि। विभूति आनन्द, हरेकृष्ण झा, केदार कानन, नारायणजी, रमेश, तारानन्द वियोगी, संजय कुन्दन, सुस्मिता पाठक, ज्योत्सना चन्द्रमक विभिन्न कविता मे जे वैचारिक दृढ़ताक संग जीवनक प्रति आस्था, विश्वास, उल्लास, जीवन-सौन्दर्य अभिव्यक्त भ'

रहल अछि से सहजें अथवा अनायास नहि आयल अछि। एकर पाछू चेतनाक इतिहास अछि। मिथिलाक जन-जीवनक क्रमवद्ध विकास अछि। परिवर्त्तनक हिलकोर अछि। कविता आब जीवनक व्यापकते टा के नहि अपितु जीवनक गहिरै के सेहो नाप-जोख कर' लागल अछि

सिकस्त घरक ई फूजल छत-आँगन
जेना, तरहत्थी पर उतरल चान!
ई चान हमर अछि
एकरा हम गमाब' नहि चाहब
एहि पियासल यांत्रिक संसार मे।[33]

कहल जाइत अछि जे जीवन के सुन्दर ढंग सँ बितेबाक लेल सेहो जीवनक एक रूप हेबाक चाही। बहुत लोक किछु नहि करब के नीक बुझैत अछि। सुख अर्थात् कोनो काज नहि कर' पड़य। ई धारणा ठीक नहि अछि। सुन्दर जीवन क्रियाशील होइत अछि। क्रियाशीलता के छोड़ि क' जीवनक सौन्दर्य टीकि नहि सकैत अछि। तैं ओहि हाथ के चुम्बन करबाक सेहन्ता होइत छैक जे हाथ क्रियाशील अछि। निर्माण करैत अछि

हमरा चाही ओ हाथ
जे काटैत अछि चरखा
बूनैत अछि सूत
तैयार करैत अछि कपड़ा
तुनैत आ धुनैत अछि रूइ
भरैत अछि सीरक
हमरा चाही ओ हाथ
चुम्बन लेल।[34]

सख आ सेहन्ता लेल बएसक कोनो सीमा नहि अछि। एहि लेल जीवनक प्रति आस्था, जिजीविषा चाही। मिथिला मे मृत्यु भेला पर मौन धारण कएल जाइत अछि। शवयात्रा सेहो मौने चलैत अछि। 'राम नाम सत्य है' नहि होइए। मृत्यु के मोहक बनेबाक अथवा मानबाक परम्परा रहहाँ

नहि रहल अछि। ई जीवनक प्रति लालसा के बात कहैए। तैं उदयचन्द्र झा 'विनोद'क कविता मे सत्तरि बरखक बूढ़ि बाबी जखन सिरहन्ना मे कीआ-ककबा जोगा क' रखैत छथि[35] अथवा नीरजा रेणुक कविता मे भुतही बक्साक विषके नष्ट क' ओहिमे आमक मज्जरक सुगन्धि, अमोलियाक कोइलीक गीत भरबाक इच्छा[36] व्यक्त होइए किंवा हरेकृष्ण झा जखन कतहु जीवन मे सौन्दर्यक उपेक्षा देखि टोकरा दिअ' लगैत छथि त' जीवनक यैह लालसा, सेहन्ता, सौन्दर्य कविता मे अभिव्यक्त होइत रहैत अछि

राति मे इजोतक टिकुला
सोहरबैत अछि आकाश मे
हमरा लेल
हमरे लेल त' नित्तह
हमरा लेखें धन्न सन।[37]

जीवनक प्रति ई आस्था, लालसा आब कोनो मौसम मे बदलि नहि रहल अछि। किएक त' जीवन मे मेहनतिक नव भाषा के बुझबाक, सुनबाक कोशिश सर्वत्र चलि रहलए। निर्माण आ सृजन के सहेजल बीया बाओग भ' रहल अछि

आबै नूनू!
बदलैत मौसम मे सहेजल बीया बाओग करी...
हँ रे, बाओग करी, पट्टी, काटी-मौसिमक फसिल
आ चेष्टा करी
मेहनतिक एहि नव भाषाके बुझबाक, गुनबाक...[38]

मैथिली कविता मे आइ भविष्यक लेल नीव निर्माणक बेगरता बहुत सोचि-विचारि क' महसूस कएल जा रहल अछि। जीवनक परिभाषा एकदम स्पष्ट भेल जाइये। जीवनक वर्तमान केहनो हो, भले ही धुआंइत आगि सन हो मुदा भविष्य उदीप्त-प्रदीप्त रहय से बात विश्वासक संग अपन सन्तान के कहल जा रहल अछि। जीवन के चीन्हि, अपना के बूझि

ओहि तमाम कमजोरी के हटेबाक आह्वान भ' रहल अछि जे जीवन मे निराशा, अनास्था उत्पन्न करैए

अहाँ जिनगी कें कने समधानि क' जीब
भारतक मूलभूत समस्या जकाँ जुनि रहि जायब अछोपे।
जुनि कानब जीजीविषाक नाम पर
आ कहियो नहि करब विश्वास
कि अहाँक पिता ओ कायर व्यक्ति छल
जे ने मशालक जिनगी जीलक
ने संक्रान्तिक बिख पीलक।
अहाँ धुआंइत आगिक पाछू धएने जुनि करैत रहब धुकुर-धुकुर।
उदीप्त-प्रदीप्त भ' दुइए क्षण जीब
वर्त्तमान अन्हार मे भविष्यक लेल नीव
हमरे जकाँ अहूँ के अरघय
पंकज!
हमर बेटा![39]

कविता आब गाम दिस घूर' लागल अछि। घर दिस घूर' लागल अछि। गाम आ ग्रामीण सौन्दर्य, स्त्री आ कृषक जीवनक अनुपम चित्र सभ सोंझा आयल अछि। नारायणजीक बाद एखन हेबनि मे आयल कवि विवेकानन्द ठाकुरक 'एकसरे ठाढ़' कविता-संग्रह मे मिथिलाक गाम, कृषक-जीवनक दुर्लभ चित्र सभ सहजतापूर्वक बिना कोनो बौद्धिक प्राणायामक मुदा समधानल वैचारिकताक संग प्रस्तुत भेल अछि

एहि बीच
कतेक बाबू-भइया कें
कतेक पढुआ-कमउआ कें
काल चिबा गेल
एकटा हम...
आइ धरि
हरक मूठि पकड़ने।[40]

मैथिलीक कवि अहू बात लेल सजग ओ सचेष्ट छथि जे जीवन मे उल्लास आ प्रसन्नताक लेल निर्मल जीवन, सन्तोषी जीवन आवश्यक अछि। अनावश्यक आ अतिरिक्त साधन स्रोत हड़पबाक प्रवृत्ति छोड़ब जरूरी छैक। लोकक सन्तोषी जीवनक रहस्य खोलैत कवि जीवकान्त कहि उठैत छथि

रंग उठाउ जतबा जरूरी हो जीबाक लेल
उठबैत अछि जतबा रंग आमक पात
गन्ध ओतबे जे जरूरी हो जीबाक लेल
गन्ध जतबा आमक मज्जर उठबैत अछि।[41]

समकालीन मैथिली कविता पर लिखैत कवि तारानन्द वियोगी कहैत छथि, 'हम सभ कालक यथार्थक समानान्तर सँ कतहु बहुत-बहुत बेसी कालक इंगितिक समानान्तर चलबाक हेतु प्रतिबद्ध छी। ई प्रतिबद्धता हमरा लोकनि कें मोह भंग, कुंठा, वितृष्णा, जुगुप्सा, मृत्युबोध सँ फराक करैत अछि आ जीवनक बहुआयामी भविष्य बोध सँ जोड़ैत अछि। हमरा लोकनिक हेतु एहि सोचब-जे ओ कोन-कोन परिस्थिति अछि जे मनुक्ख के मरि जाय लेल प्रेरित करैत अछि सँ महत्वपूर्ण अछि ई विचारब जे ओ कोन-कोन स्थिति अछि जे मनुक्ख कें एहू हालति मे जीबाक शक्ति आ आवश्यकता दैत अछि। समकालीन कविता के देखबाक प्रारम्भ एहीठाम सँ कएल जेबाक चाही।[42]

हमरा लगैए वियोगी ठीक कहैत छथि। समकालीन मैथिली कविता संग बुलैत-टहलैत लगैए जे जीबाक शक्ति लोक मे एखनो बाँकी छैक। विषम परिस्थितियो, सत्ता, व्यवस्था द्वारा निर्मित जाल-जंजालो मनुक्ख के जीवन सँ, जीवन लेल संघर्ष सँ विमुख नहि क' रहलए। भले ही ई संघर्ष फराक-फराक किएक ने चलि रहल हो। लोक साबूत रहत, ओकरा मे संघर्ष शक्ति रहतैक त' काल्हि एकजुट भ' स्थिति के बदलबाक लेल सेहो फाँड़ बान्हि सकैए।

सन्दर्भ संकेत :

1. डा॰ मैनेजर पाण्डेय, साहित्य के समाजशास्त्र की भूमिका
2. वैह
3. वि॰ अफनास्येव, मार्क्सवादी दर्शन
4. डा॰ मैनेजर पाण्डेय, साहित्य के समाजशास्त्र की भूमिका
5. वैह
6. कविता राजकमलक (सम्पादक-मोहन भारद्वाज)
7. यथार्थवाद ओ आधुनिक साहित्य (सम्पादक गोपालजी झा 'गोपेश', डा॰ वासुकी नाथ झा)
8. वैह
9. कविवर यात्री, चित्रा (कविता-संग्रह)
10. काञ्चीनाथ झा 'किरण' कतेक दिनक बाद (कविता-संग्रह)
11. राजकमल चौधरी, कविता राजकमलक (कविता-संग्रह)
12. रमानन्द रेणु, सम्बन्धक टूटैत गाछ (काव्य बन्ध-कविता-संग्रह-सम्पादक-मोहन भारद्वाज)
13. धीरेन्द्र, गामक पत्र, हैंगर मे टांगल कोट (कविता-संग्रह)
14. कीर्ति नारायण मिश्र, भिनसर भ' गेल अछि (आजुक कविता-कविता संग्रह-सम्पादक-रामलोचन ठाकुर)
15. कुलानन्द मिश्र, हम उदीयमान सविता छी (संकल्प, सम्पादक-केदार कानन)
16. कीर्ति नारायण मिश्र, यातना शिविर (संकल्प, सम्पादक-केदार कानन)
17. रमानन्द रेणु, मात्र अपना लेल (आजुक कविता-कविता संग्रह-सम्पादक-रामलोचन ठाकुर)
18. मन्त्रेश्वर झा, (अनचिन्हार गाम-कविता संग्रह)
19. यात्री, एक फाँक आँखि, एक फाँक नाक (पत्रहीन नग्न गाछ, कविता-संग्रह)
20. कुलानन्द मिश्र, जड़कालाक साँझ (ताबत एतबे, कविता-संग्रह)
21. उदय चन्द्र झा 'विनोद', तड़िपिब्बा जकाँ तलमलाइत हम (एहना स्थिति मे-कविता-संग्रह)

22. सुकान्त सोम, अहूँ कने सोचियो ने। भोरक प्रतीक्षा मे (काव्य-संग्रह-सम्पादक-मोहन भारद्वाज)
23. भीम नाथ झा, लंगूर। नाम थिक वैह, (काव्य-संग्रह)
24. काव्य बन्ध (काव्य संग्रह, सम्पादक-मोहन भारद्वाज)
25. वैह
26. वैह
27. विभूति आनन्द, उपक्रम कविता-संग्रह
28. भावी पीढ़ीक ई दर्द (काव्य बन्ध, सम्पादक-मोहन भारद्वाज)
29. रमेश, दर्दक इतिहास, संकल्प-2, सम्पादक-केदार कानन
30. संजय कुन्दन, सन्धान-1, सम्पादक-अशोक
31. नारायणजी, समय स्वागत मे ठाढ़ अछि, हम घर घुरि रहल छी (कविता-संग्रह)
32. संस्कार तोड़' पड़त (काव्य बन्ध, सम्पादक-मोहन भारद्वाज)
33. ज्योत्सना चन्द्रम्, ई चान हमर अछि, आरम्भ, सम्पादक-राजमोहन झा
34. केदार कानन, हमरा चाही ओ हाथ एक बेर, संकल्प-2, सम्पादक-केदार कानन
35. बाबी, कहलनि पत्नी (कविता-संग्रह)-उदय चन्द्र झा 'विनोद'
36. गाम जाइ काल, आगत क्षण ले (कविता-संग्रह) नीरजा रेणु
37. हमरा लेखें धन सन, संकल्प-2, सम्पादक-केदार कानन
38. विभूति आनन्द, नोरक सेती (पुनर्नवा होइत ओ छौड़ी, कविता-संग्रह)
39. तारानन्द वियोगी, हितोपदेश, हस्तक्षेप (कविता-संग्रह)
40. विवेकानन्द ठाकुर कालजयी, एकसर ठाढ़ (कविता-संग्रह)
41. खाँड़ो, (कविता-संग्रह)-जीवकान्त
42. संकल्प-2, सम्पादक-केदार कानन

खोज-खबरि, जुलाइ-2001

■

समकालीन मैथिली कथा

कथाकार महाप्रकाशक एक कथा अछि 'कैलेण्डर'। कथा कहैत अछि जे समकालीन समाजमे सज्जन ओ खगल लोकक जीवन संकटग्रस्त अछि। संकटक अनेको कारण ओ प्रकार अछि। लोक भोर सँ राति धरि ओहि संकट सभ सँ डेराइत, बचैत अथवा ओहिसँ जूझैत, संघर्ष करैत जीवन गुदस्त क' रहल अछि। ई संकट सभ देखार शत्रु सँ अछि त' चिन्हार मित्रो सभ सँ अछि। कदाचित शत्रु सँ बेसी मित्रे सभ सँ अछि। शत्रु के त' अहाँ चिन्हैत छी। ओकरा प्रति सावधानो रहैत छी। मुदा मित्र सँ सावधान रह' पड़य त' ई केहेन समाज थिक? वस्तुतः एहन समाज पढ़ल-लिखल नीक कमाइ-खटाइ बला लोकक समाज थिक। कोनो गरीब वा निरक्षर लोकक समाज नहि। गरीब ओ निरक्षर लोकक चरित्र ओतेक नहि खसलै अछि जतेक पढ़ल-लिखल लोकक। समाजमे चरित्रक संकटके ई कथा बहुत मेंही सँ समक्ष अनैत अछि। समाजमे चरित्रक स्खलन सामान्य लोकक नहि प्रतिष्ठित प्रोफेसर, डाक्टर, अफसर सभक देखाओल गेल अछि। प्रतिष्ठित आ पाइबला भइयो क' हिनका सभक क्षुद्रता खतम नहि भेलनि अछि। छोट-छोट वस्तु कें पयबाक लेल अनकर सुख-आनन्दकें छीनि सकैत छथि। ककरो, किछु लुटबाक लेल उद्यत भ' सकैत छथि। मित्रो के नहि बरजैत छथि। एक घर डानियो छोड़ैत अछि से समाज आब कदाचित नहि रहल। असल मे हुनका सभ के ककरो नीक नहि सोहाइत छनि। समाज अत्यधिक इर्ष्यालु भ' रहल अछि। मित्रो भ' क' मित्र सँ ईर्ष्या करैत अछि। मित्र के ठकि सकैत अछि। मित्रक पसिन्नक कोनो वस्तु झपटि क', फुसला क, योजना बना क' हड़पि सकैत अछि। कथा मे ई वस्तु थिक 'कैलेण्डर'। ओहि कैलेण्डरक छीना-झपटीक खिस्सा कहैत कथा पढ़ल-लिखल मध्यवर्गीय समाजक क्षुद्र चरित्र के उघारि क' राखि दैत अछि।

एहि पढ़ल-लिखल समाज मे अंग्रेजियत बढ़ैत गेल अछि। आब त' ओ अमरीकियत पर आबि क' टीकि गेल अछि। समाज मे अंग्रेजी प्रभुवर्गक भाषा बनि, ज्ञानक भाषा बनि, बजारक भाषा बनि लोककें खूब प्रभावित केलक अछि। एहि अंग्रेजीक प्रभाव दू तरहें-सकारात्मक आ नकारात्मक ढंगे समाज पर पड़ल अछि। नकारात्मक प्रभाव एना पड़ल जे अंग्रेजी जान'बला लोक अपना के फौरवार्ड बूझ' लागल। अपनो परिवारक आन लोक के जे अंग्रजी नहि जनैत छल, तकरा बैकवार्ड बूझ' लागल। समाजक ई यथार्थ हरिमोहन झाक कन्यादान मे मानसिकताक स्तर पर अभिव्यक्त भेल। बुच्चीदाइ छबे मासमे रेपीडेक्सक तर्ज पर अंग्रेजी पढ़िक' आधुनिक बनि अपन माय के बैकवार्ड बूझ' लगैत छथि। एहि साठि-सत्तरि वर्षमे ई मानसिकता व्यवहारक स्तर पर उतरि आयल अछि। नीता झाक कथा 'वाय अंकल'क बुच्चीदाइ 'लावण्या' अपन नेनपन सँ चेतन धरिक 'गार्जियन' रिक्शाबला के चतुराइ सँ 'स्टुपिड अंकल' कहैत अछि आ मजा लैत अछि। अपन सखी सँ अंग्रेजी मे रिक्शाबला गोपालक मूर्खता पर बतिआइत अछि। मुदा एहि अंग्रेजीक सकारात्मक प्रभाव सेहो समाज पर पड़ल अछि। लोक, जीवन के संकटग्रस्त रखनिहार-बनौनिहार रूढ़-परम्परा, आचार-व्यवहार के जीवनक पक्ष मे बदलब शुरू केलक अछि। समकालीन समाजक दोसर बुच्चीदाइ 'प्रिया' ज्योत्सना चन्द्रमक कथा 'कांग्रेचुलेट्स मम्मी' मे अपन विधवा मायक दोसर विवाह करबाक निर्णय सुनि अवाक् त' रहि गेल, मुदा शीघ्रे एहि निर्णय पर माय के 'कांग्रेचुलेट्स' कयलक। ओ मम्मीक द्वन्द्व आ धुकधुकी के शान्त करबाक क्रममे हुनकर हिम्मति बढ़बैत अछि। गम्भीरता सँ हुनका समाज सँ पड़ेबाक लेल नहि, मोकाबिला करबाक लेल प्रेरित करैत अछि। प्रियाक मम्मी रुपा सोचैत छथि जे प्रिया आब किशोरवय नहि रहल।

एहि पुरुषतंत्री समाज सँ जूझैत आइ बहुतो स्त्री अपन स्वाभिमान के जगौलनि अछि। जीवनक बहुतो क्षेत्र मे काज करैत परिवार सँ बहरा क' समाजक मादे सोच' लगली अछि। जे मानसिक रूपें अपने बैकवार्ड नहि रहत से समानताक दृष्टिकोण दिस अग्रसर हेबे करत। समाज-जीवन मे

समानता के सोच-विचार ओ आचरणक स्तर पर अपनेबे करत। एहेन बहुतो रास स्त्रीक कथा नारी कथाकार लोकनिक कलम सँ निकलि रहल अछि जे समकालीन मैथिली कथाक स्वर के बदललक अछि। लीली रे, नीरजा रेणु, शेफालिका वर्मा, उषाकिरण खान, नीता झा, ज्योत्सना चन्द्रम्, विभा रानी, सुस्मिता पाठक, इन्दिरा झा, वीणा ठाकुर, कमला चौधरी, आशा मिश्र, प्रेमलता मिश्र, पन्ना झा सन नाम सभ एहि बातक साक्षी अछि जे अपन जीवन ओ रचना सँ समकालीन मैथिली कथा समाज मे स्त्रीक पक्ष मे आवाज के जोरगर बनौलनि अछि। हिनका लोकनिक कथा मे स्त्री आब पुरुष वर्चस्वक समाज मे केवल स्पेस नहि बना रहल अछि, समाज मे पुरुषक वर्चस्व के चुनौती देबाक भाषा-भंगिमा सेहो अपनाब' लागल अछि। तें ई कहल जा सकैत अछि जे जमाना आब हरिमोहन झाक बुच्चीदाइक नहि रहल जकरा सी० सी० मिसर बेइज्जत क' क' छोड़ि देथिन अथवा अपना सन बना क' अंग्रेजियतक किटाणु कें पनपेबाक बुधियारी करता।

मुदा एहि बैकवार्ड-फौरवार्डक एक दोसर पक्ष सेहो अछि। से अंग्रेजीक डर्टी पिक्चर नहि सामाजिक-राजनैतिक डर्टी पिक्चर थिक। मण्डल-कमण्डलक झगड़ादन थिक। जाति आ धर्मक आधार पर समाज के फुटकायब थिक। एहि सँ समाज मे वैमनस्य पसरल अछि। ई लोकक संकट के आर बढ़ौलक अछि। एहि सँ ने कोनो जातिक हित भेल अछि ने कोनो धार्मिक समुदायक। एक समय मण्डल कमीशनक आधार पर आरक्षण भेल त' लोक के यात्रा मे, बस-ट्रेन मे पकड़िक' मारल-पीटल गेल। बैकवार्ड, फौरवार्ड के पीटलक त' फौरवार्ड, बैकवार्ड के पीटलक। कतेक गोटे मारि-पीटक डर सँ फौरवार्ड भ' क' बैकवार्ड बनि जान बचेलनि त' कतेक बैकवार्ड भ' क' फौरवार्ड बनि जीवन बचौलनि। लोक के अपन परिचिति नुकाब' पड़लैक। रमेशक जनउ, मंत्रेश्वर झाक गुमती, शिवशंकर श्रीनिवासक दिशा आ तारानन्द वियोगीक विवेक-वध, आदि कतेको कथा अछि जे समकालीन समाज मे बैकवार्ड-फौरवार्डक एहि लड़ाइ तथा ओहि सँ समाजक टूटन, दंश, पराभव के अभिव्यक्त केलक अछि। ई आरक्षणक मामला सामाजिक रुपसँ पिछड़ि गेल कमजोर समाजक लेल छल मुदा से

जाति के तोड़बाक बदला जाति के मजगूत करय लागल। जातिवाद जे कमजोर भेल जा रहल छल तकरा भोट लेल राजनीतिज्ञ बढ़ावा देब शुरु केलक। एहि सँ जातिक खाधि आर बेसी व्यापक आ गहींर भेल। अम्बेदकर आ लोहियाक रस्ता एहि मे कतहु दूर पाछू छुटि गेल। मुदा जेना समाज हिनका सभ के नहि बिसरल अछि तहिना समकालीन मैथिली कथा सेहो भविष्यक समाज निर्माण के दृष्टि मे राखि सौहार्द्र ओ समरसताक मूल्य के जीवित रखबा लेल सचेष्ट रहल अछि। आलोचक मोहन भारद्वाज कहैत छथि जे सामाजिक समरसताक समस्या आइ वस्तुतः विकट भ' गेल अछि। ई बात नहि छैक जे पहिने आर्थिक, धार्मिक आ जातिगत स्तर पर समाजक गाड़ी उनार नहि होइत रहय, मुदा तैयो समाजबन्ध रहैक। सामाजिक मूल्य-मर्यादा आ नैतिकताक प्रति लोकक मोन मे आदर छलैक। यैह आदर-भाव समाजसत्ता कें अक्षुण्ण रखने छल। किन्तु, आइ स्थिति एकदम उनटि गेल अछि। ओ ईहो कहैत छथि जे मैथिली कथाकार समाजधर्मी छथि। तें ओ उनटा बसात कें रोकबाक प्रयास मे लागल छथि। हुनक प्रयास मे संग देब जरुरी अछि। मैथिली समाजक एहि समरसताक मूल्य के तारानन्द वियोगीक हीरा जनम तिहारो, शिवशंकर श्रीनिवासक जमुनिया धार, उषाकिरण खानक टुग्गरि, लिली रेक पाहुन, अरविन्द ठाकुरक अन्हारक विरोध मे, रमेशक बन्दा वैरागी, आदि बहुतो कथा मे अभिव्यक्त कयल गेल अछि।

समकालीन मैथिली कथा मे मिथिलाक शहर, कस्बा मे रहैत समाज चित्रित भेल अछि त' गामक समाज सेहो खूबे चित्रित भेल अछि। मैथिल समाज लेल देस एखनो मिथिलेक सिमान धरि सीमित अछि। ओहि सँ बाहर परदेस भ' जाइत अछि। जत' लोक कमाइ-खटाइ लेल जाइत अछि। परिवार पीछू एक-दू व्यक्ति परदेस मे अदौ सँ कमाइ लेल जाइत रहल अछि। मुदा आब त' परिवारक परिवार परदेसे मे अछि। मुदा तैयो परदेसक प्रति दुराओ-तनाओ, निन्दा-भाव खतम नहि भेलैक अछि। मिथिलाक गाम-घरमे रहनिहार लोक परदेस मे रहैत अपन समांग लेल विकल होइत रहैत अछि। भयग्रस्त मानसिकता मे जीबैत अछि। से पंजाब लेल गेल समांग

हो आकि दिल्ली-मुम्बई गेल समांग। आब विदेश गेल समांग सेहो एहि परिधि मे आबि गेल अछि। शैलेन्द्र आनन्दक 'उठ पुत्ता पुरल पुरल' पंजाब गेल समांगक लापता भ' जेबाक घटना के लोक कथाक मर्मस्पर्शी रूप द' चित्रित करैत अछि त' विभूति आनन्दक 'एकटा उड़ल फुर्र' सेहो दिल्ली मे रहैत संतान लेल भयग्रस्त आशंका मे जीबैत परिवारक चित्र उपस्थित करैत अछि। दुनू कथा मुदा एहि भय के रचबाक लेल चिड़ै-चुनमुनीक आसरा सँ समकालीन सामाजिक संकट के अभिव्यक्त करैत अछि।

वस्तुतः परदेस एखनो हमरा सभक विवशता बनले अछि। ई प्रवसन, विस्थापन, पलायन क्रमशः गहींर आ व्यापक भेल चल गेल अछि। से आब कतेको दिन सँ चलि रहल अछि। मुदा परदेस ओहिना परदेस बनले अछि। अपन बनि नहि पाबि रहल अछि। परदेस मे रहितो कोनो ने कोनो रूपमे देस सँ अपना के जोड़ने रखबाक इच्छा एखन धरि मरल नहि अछि। मुदा ई संकटो लगातार बनले अछि। से संकटो कैक तरहक अछि। भूमण्डलीकरणक बजारी आ सांस्कृतिक दुनू आयाम एहि संकट के आर गहींर केलक अछि। मुदा तैयो ई भरोस एखनो जीबैत अछि जे अपन देसक दिन अवश्य घुरतैक। मिथिलाक लोक के आनठाम नहि जाय पड़तै। मुदा तत्काल मिथिलाक संसाधन आ पछुआयल विकास एहिठामक लोकक आगू बढ़बाक इच्छा संग तालमेल नहि बैसा पाबि रहल अछि। नारायणजीक साँझबाती, श्याम दरिहरेक विस्थापित सन कथा एहि प्रसंग मे मोन पड़ैत अछि। सुकान्त सोमक त्रिशंकु देस-परदेसक एहि द्वन्द्व के बहुत मार्मिकताक संग उपस्थित करैत अछि।

हमरा लोकनिक समाज मे गाम-घर बहुत गहींर धरि लोकक मोन मे एखनो बसल अछि। से सौंसे समाजक मन मे। जाति-धर्म निरपेक्ष अछि ई मोह-ममता। एहि समाज के गाम-घर छुटै छै त' ओहि लेल परदेसो मे बेकल रहैत अछि। गाम-घर घुरबाक इच्छा चाहे कविता हो कि कथा मैथिलीक समकालीन साहित्यक केन्द्र मे बनले अछि। ई नास्टेलजिया एक पैघ ताकत रहल अछि मैथिली साहित्यक। ई अकारण नहि थिक जे समकालीन मैथिली कथाक दू टा शीर्ष कथाकार राजमोहन झा आ जीवकान्त

क्रमशः घर आ गाम कें व्यापक रूपें अभिव्यक्त केलनि अछि अपन कथा सभ मे। हमरा संग अपन भेंटवार्ता मे राजमोहन झा 'घर' शीर्षक सँ दसटा कथा लिखबाक इच्छा व्यक्त केने रहथि। हुनकर 'घर' नाम सँ दू टा कथा अछि। घर घुरबाक अकुलाहटि आ घर पहुँचलाक बादक आश्वस्ति के भोगबाक लेल हुनक एहि दुनू कथा के पढ़ल जा सकैत अछि। जीवकान्तक विभिन्न कथा के पढ़ला पर मिथिलाक गाम मे लगभग पचास वर्ष मे भेल परिवर्तन के, ओकर आरोह-अवरोह के गमल जा सकैत अछि। आजुक समय मे समाजबन्ध के कमजोर कयल जा रहल अछि। समाज मे पसरल पारिवारिकताक भावना के छहोछित करबाक साजिश सेहो चलि रहल अछि। भूमण्डलीकरणक एहि युग मे मनुक्ख के अलग-थलग काटि क' असगर बना क' लूटबाक व्योंत बहुत मेंही सँ सामाजिक-सांस्कृतिक धरातल पर भ' रहल अछि। 'यूज एण्ड थ्रो'क एहि दारूण समय मे अपना कें बचेबाक लेल परिवार, समाज, गाम-घरक कतेक प्रयोजन छैक से एहि संकट सँ जूझैत हरेक समकालीन मनुक्खक हृदय जनैत अछि। एहि धरातल पर समकालीन समय मे अनेको कथा मैथिली मे रचल गेल अछि। से एहि संकट सँ जूझैत, अपना के बचेबाक कोशिश करैत मनुक्खक थिक। एहि क्रम मे अपन परम्परा, जड़ि धरिक सन्धान-अनुसन्धान भ' रहल अछि। जाति, धर्म, राजनीति आ भूमण्डलीकरण समाज के कोना प्रभावित केलक अछि आ ओहि सँ बचि समाज के साबुत रखबाक, सौहार्दपूर्ण रहबाक, संघर्षशील रहबाक ताकति कत' सँ भेटि सकैत अछि ताहि सभ बिन्दु पर समकालीन मैथिली कथा सजग आ सचेष्ट रहल अछि। विभा रानीक 'मियाँ मुसलमान', शिवशंकर श्रीनिवासक 'सिनुरहार', प्रदीप बिहारीक 'गमला मे धान', प्रो॰ मनमोहन झाक 'शांति' आ 'खिस्सा', विभूति आनन्दक 'लोक देखलक' आदि कथा के एहि क्रम मे मोन पाड़ल जा सकैत अछि। कथाकार शिवशंकर श्रीनिवास समकालीन कथाक एहि स्वर के अकानलनि अछि। ओ एकरा सांस्कृतिक चेतनाक कथा कहैत छथि। आलोचक कुलानन्द मिश्र सांस्कृतिक चेतनाक स्वर एम्हर बेसी मुखर हेबाक बात पर अपन एक भेंटवार्त्ता मे साकांक्ष ओ सतर्क सेहो करैत छथि। ओ कहैत छथि जे सांस्कृतिक चेतना संग जड़ि आ माटि-पानिक संग सरोकारक चिन्ता हमरो

किछु अधिक देखबा मे आयल अछि। प्रो॰ हरिमोहन झा आ यात्री सँ ल' क' कथाकार शिवशंकर श्रीनिवास आ कवि विवेकानन्द ठाकुर धरिक रचना प्रसंग गप्प करबाक क्रम मे एहन चिन्ता कें बोल भेटलैक अछि। हमरा एहन चिन्ता मे होइत वृद्धि सँ प्रसन्नता भेल अछि, मुदा हमरा संगहि ईहो स्पष्ट बुझा रहल अछि जे हमरा सभक चिन्ताक केन्द्र सँ एखनो ओ वर्ग तत्वतः बाहर थिक जे वृहत्तर होयबाक संग-संग सांस्कृतिक विकासक असली कारक कि माटि-पानि सँ अधिक सम्पृक्त रहल अछि आ तें हमरा सभक चिन्तो खण्डित रहबाक लेल अभिशप्त बनल रहैछ। ओ इहो कहैत छथि जे संस्कृतिक बारल वर्गक जीवन आ संस्कार के यथास्थान प्रतिष्ठित कयलाक बादे, अभिजात आ लोक संस्कृतिक बीच सम्वाद स्थापित कैये क' अपन सांस्कृतिक चेतनाक वस्तुनिष्ठता कें चिन्हित क' सकैत छी।

समकालीन मैथिली कथामे जे समाज चित्रित भेल अछि से बहुलांश मे ब्राह्मण समाज थिक। सवर्ण वा उच्च वर्गक समाज थिक। मध्यम वर्गक समाज थिक। मुदा कथाकार लोकनि निम्न ओ गरीब, निरक्षर समाजक चित्र सेहो अपन कथा मे उपस्थित केलनि अछि। जीवकान्तक गाछ एकटंगा, प्रभास कुमार चौधरीक पतिबरता, धूमकेतुक उदयास्त, रामदेव झाक मनुक सन्तान, धीरेन्द्रक सुगरक बाप, रमानन्द रेणुक घट्ठर आ अनेको कथा, सुभाष चन्द्र यादवक काठक लोक सन बहुतो कथा, विभा रानीक कौआहकनी, तारानन्द वियोगीक कायाकल्प, रमेशक कैलाश मण्डलक फिलिप्स रेडियो, विभूति आनन्दक काठ आदि बहुतो कथा अछि जे एहि गरीब, निरक्षर समाजक संघर्षपूर्ण जीवनक राग, विराग, उपराग, नेह-छोह के अभिव्यक्त केलक अछि। ब्राह्मणो समाजक अनेक कथा मे जे चित्र कथा मे आयल अछि से समाजक बदलैत मानसिकताक कथा कहैत अछि। मुदा जहाँ धरि साकांक्ष ओ सतर्क रहबाक बात अछि से अपना जगह पर कायम अछिये। किएक त' एहि सँ इतर एहनोक कथा सभ भेटि सकैत अछि जे जाति आ सम्प्रदायक रंग के गाढ़ करैत हो। मुदा से समकालीन मैथिली कथाक परिचिति नहि बनि सकैत अछि। वस्तुतः ओ समकालीन कथा थिको नहि। समकालीन मैथिली कथा समाजक विभिन्न संस्था ओ क्रियाकलाप मे आयल

विकृति सभ पर सेहो प्रहार केलक अछि। से वियाह-दान हो, पाबनि-तिहार हो, शिक्षण वा अन्य संस्थान हो आ कि कोनो सांस्कृतिक-सामाजिक अनुष्ठान, ओहि मे आयल भ्रष्टताक प्रतिरोध मे बहुतो कथा लिखल गेल अछि। दहेजक कारण समाज मे पसरल 'पकड़ वियाह' पर साकेतानन्दक कथा अछि। पाबनि-तिहार पर अर्थ ओ व्यावसायिकताक प्रभाव कें धूमकेतुक 'छठि परमेसरी' ओ भरदुतिया कथा मे देखल जा सकैत अछि। समाज मे शिक्षण संस्था सभ मे पसरल भ्रष्टाचार के विनोद बिहारी लालक कथा 'देशक आधार' बहुत तिक्ख ढंग सँ प्रतिरोधक स्वर मे अभिव्यक्त करैत अछि।

कहल जाइत अछि जे समकालीन सन्दर्भ मे प्रामाणिक कथा वैह भ' सकैत अछि जे समकालीन मनुक्खक जकाँ आजुक स्थिति मे शामिल आ ओहि सँ जूझैत प्राप्त अनुभव के रचय। स्वाभाविक रूप सँ तैं समकालीन कथा प्रतिवाद आ प्रतिरोधक कथा थिक। ओकर प्रतिवाद वा प्रतिरोध हरेक ओहि वस्तुक प्रति छैक जे समकालीन मनुक्खक संकटक कारण अछि। जिनगीक खाँटी, तिक्ख अनुभवक भोक्ता कथाकार अपन चारू दिसक क्रूरता सँ नहि केवल विचारक स्तर पर अपितु जीवनक स्तर पर सेहो लड़ैत अछि। कथाकार आइ तटस्थ नहि रहि सकैत अछि। किएक त' विचारक स्तर पर लड़बाक ताकति सेहो जीवनेक स्तर पर लड़ल जाइत लड़ाइ सँ अबैत छैक।

प्रतिवाद वा प्रतिरोधक ई रूप समकालीन मैथिली कथा मे आठम दशकक कथा-पीढ़ी लग आबि क' जगजियार होइत अछि। कथाकार तारानन्द वियोगी प्रतिरोधक एहि रूप पर टिप्पणी करैत कहैत छथि जे 'बहुतो एहन कथा लिखल गेल जाहि मे अस्तित्व रक्षा लेल निर्णायक संघर्ष अनिवार्य बनि क' आयल। ओ ईहो कहैत छथि जे, 'एहि संग वर्ण, जाति, वर्ग, परिवार, समाज सन संस्था सभ कें नव परिप्रेक्ष्य मे बूझल-समझल जायब, आवश्यक मानल गेल। हाशिया पर अबडेरल निम्न जनक जीवन-सौन्दर्य कें देखबाक एक चेष्टा सेहो मुख्य धारा मे आयल।' एही संग ओ आठम दशकक बाद मैथिली कथा मे व्यापक बदलाव घटित होइत सेहो देखैत

छथि। हुनकर कहब छनि जे, 'भूमण्डलीकरणक विरूद्ध प्रतिक्रिया अस्मिता-बोध के दीप्त केलक अछि। परम्परा आब अपन विकासक आगामी चरण मे प्रवेश पौलक। कथा मे आब'बला 'गाम' आब ओ गाम नहि रहि गेलै। स्त्री, शूद्र आ बच्चा अदौ सँ उपेक्षित एहि दलित समूहक प्रति सावधान उन्मुखता व्यक्त भेल।'

ई बात सत्य थिक जे उपन्यासमे जेना समाज व्यापक ओ प्रत्यक्ष रूप सँ चित्रित होइत अछि तेना कथा मे नहि। तैं कथाक समाजशास्त्र रचब कठिन बनले अछि। मुदा एतबा त' कहल जा सकैत अछि जे समकालीन मैथिली कथा मे जे समाज चित्रित भेल अछि से आर्थिक ओ सांस्कृतिक दुनू स्तर पर संकटग्रस्त समाज थिक। अपन संकट सभ सँ बहरेबाक बेगरता जेना समाज के छैक तहिना भोक्ता कथाकार सेहो समाज-धर्मक निर्वहन सामाजिक चेतनाक कथा रचि क' करैत अछि।

घर-बाहर, जुलाई-सितम्बर, 2014

■

नाटकक जीवन

उन्नैस सय बासठिक घटना थिक। काशी मे पिताक संग रहैत रही। माय गाममे रह' लागल रहथि। हमर जेठ भाय बी॰ एच॰ यू॰ सँ एम॰ ए॰ केलाक बाद गामेक नजदीक सरिसव-पाही कॉलेज मे उन्नैस सय उनसठि मे लेक्चरर भ' गेल रहथि। तकर बाद सँ माय गामे मे रह' लगली। त' हम पिता संग रही पढ़बाक लेल। पँचमा किलास मे पढ़ैत रही तहिया। राममन्दिर पर पर रही जत' पिता मन्दिरक मैनेजर छला। ओहिठामक छात्रावास मे बहुतो मैथिल छात्र सभ रहथि। ताहिमे सँ एक छला श्री शुभकान्त झा। शुभकान्त झा राजनगरक लगेक गाम कैथाहीक निवासी छला। तहिया बी॰ एड॰ क' रहल रहथि हरिश्चन्द्र कालेज मे। हमरा पढ़ेबो करथि ओ। बी॰ एड॰ मे रहथि त' पहिल बेर नाटक खेलायल रहथि। चाणक्यक भूमिका केने रहथि। पहिले अभिनय मे हुनका पारितोषिक भेटल रहनि। ओ गीतो नीक गाबथि।

त' बासठि मे जखन हम पँचमा किलास मे पढ़ैत रही त' परीक्षा सँ किछु पूर्व हमरा 'मम्स' भ' गेल। कण्ठक लबलबी मे इनफेक्सन भ' गेल रहय। लबलबी बढ़ि गेल रहय। दादा (पिता कें हम सभ 'दादा' कहियनि) तहिया घरक कोनो काज सँ गाम चल गेल छला। मास्टर साहेब (शुभकान्तजी) कें हमर गार्जियनी द' गेल रहथिन। मास्टर साहेबक बी॰ एड॰ क परीक्षा चलि रहल छलनि। ओ परीक्षाक तैयारी मे लागल छला। हमरा 'मम्स' क कारणे एक दिन बहुत दर्द भ' रहल छल। हम दादाक बिछान पर पड़ल रही। मास्टर साहेब फर्श पर बिछाओल सतरंजी पर बैसल पढ़ि रहल छला। दर्द सँ हम तबाह रही। बेर-बेर मास्टर साहेब कें डिस्टर्ब करियनि। कान' लागल रही। एम्हर हम कान' लगलहुँ आ ओम्हर मास्टर साहेब गीत गाब'

लगला। भरिसक हमर दर्दक दबाइ ओ गीते मे तकने रहथि। ओ गाब' लागल छला फिल्मी गीत। आ जा रे हमराही...। ओहिना मोन अछि, चारि-पाँच पाँती गीतक ओ गौने हेता कि हमरा नीन्न भ' गेल। ओहेन दर्द मे कनैत हम गीतक झपकी सँ सूति रहल रही। शेष पाँती नहि सुनि सकलहुँ। गीतक जादुइ प्रभाव पड़ल रहय जेना।

बाद मे एक दिन मास्टर साहेब के कहलियनि। मास्टर साहेब, हमरो गीत गायब सीखा दिअ'। मास्टर साहेब गीत सीखेबा सँ नासकार चल गेल रहथि। कहलनि जे गीत नहि, हम अहाँके अभिनय करब सीखा देब। गीत नहि, अहाँ अभिनय सीखू। ओहि बेर सरस्वती पूजा मे मैथिल छात्र संघ द्वारा सभ बेर जकाँ नाटक भेलै। मुदा हमरा जोगर कोनो रोल नहि रहैक ओहि मे। हम मास्टर साहेब कें कहलियनि जे हमहुँ नाटक खेलाय चाहैत छी। मुदा हमरा लायक त' कोनो रोले नहि छैक। अहाँ कहने रही जे अभिनय सीखा देब। ओ कहलनि जे एकांकी खेलाउ। अहाँक कोर्स मे अछि वीर अभिमन्यु एकांकी। दस मिनटक छै। मुख्य नाटकक बीच भ' सकैत छै। हम व्यवस्था करैत छी। त' एहि प्रकारें कोनो स्टेज पर हम पहिल अभिनय केने रही। अभिमन्यु बनल रही। हमरे वएसक आन छात्र सभ पाण्डव बनल छला। हमर अभिनय देखिक' एक गोटा प्रसन्न भ' प्रोत्साहन स्वरूप पाँच टाका पुरस्कार देने रहथि। ओहि पाँच टाका सँ एक हाफ शर्ट सिऔने रही तहिया। तकर बाद काशीमे, गाममे कतेको नाटक मे अभिनय केलहुँ। मुदा छात्रावस्थाक बाद कोनो नाटक नहि खेला सकलहुँ। रंग-कर्म सँ जुड़ल नहि रहि सकलहुँ। तकर कचोट होइत रहैत अछि। उन्नैस सय चौरासीक अन्त मे मुदा प्रसिद्ध उपन्यासकार ललितक उपन्यास 'पृथ्वीपुत्र' क नाट्य रूपान्तर केलहुँ। बटुक भाइ के देख' देलियनि। ओ स्क्रीप्ट ल' लेलनि। भंगिमा उन्नैस सय पचासी मे तकर मंचन कयलक। मुदा हम अपने नाटक देखि नहि सकलहुँ। ओहि समय मास्को मे रही। को-आपरेटिव मैनेजमेंटक पढ़ाइ करैत।

हमरा लगैत रहैत अछि जे नाटक सन सामूहिक कला हमरा भीतर परिवर्त्तन अनलक। तकर अनुभव बहुधा होइत रहैत अछि। नाटक जीवनो

मे बहुत काज दैत छैक। जीवनमे कतेको तरहक अभिनय करब जरूरी होइत छैक। जँ स्टेज पर अहाँ नाटक केने छी त' जीवनो मे ओ अहाँक सहायक भ' सकैत अछि। मुदा जीवनक नाटक मे दिक्कत ई छैक जे जँ अहाँ भाव-प्रवण सम्वेदनशील लोक छी त' अहाँ अपन भीतरक भाव नुकेबा मे असमर्थ होइत रहैत छी। भीतर सँ ककरो पर बिगड़ल छी, ककरो प्रति अहाँके घृणाक भाव अछि, ओकर बात-विचार सँ चोट पहुँचल अछि त' अहाँ ओकरा प्रति अपन भाव के चेहरा पर अयबा सँ रोकि नहि पबैत छी। मुदा से रोकबाक चाही। दोसर व्यक्तिक प्रति जे अन्यथा भाव अछि अहाँक मोन मे तकरा नुका क' ओकरा संग सामान्य व्यवहार करबो जरूरी भ' जाइत छैक। जे, जतेक एहन नाटक क' पबैत अछि से ततेक सफल ओ व्यवहारिक होइत अछि। नाटक सँ ई काज सम्भव थिक। हम बहुधा एहि तरहक अभिनय मे मुदा सफल नहि भ' पबैत छी। क्रोध, घृणा, प्रसन्नता, उल्लास नुकाएब कठिन होइत अछि हमरा लेल। तैं हम अपना के नीक अभिनेता नहि मानैत छी।

तहिना स्टेज पर नाटक करबा काल जँ अहाँ पात्रक प्रासंगिक दुख, हर्ष मे बेसी तल्लीन भ' गेलहुँ, आ बिसरि गेलहुँ जे नाटक नहि, ई जीवन थिक तँ अहाँ कष्ट मे पड़ि जा सकैत छी। भंगिमाक एक नव भाव प्रवण अभिनेत्री स्वाती सिंह एक बेर नाटकक एक दृश्य मे कनबाक अभिनय करैत ठीके कान' लागल रहथि। कानब बादो मे बन्दे नहि होइन। वस्तुतः ओ ओहि क्षण अभिनय मे एतेक डूबि गेली जे ई बिसरि गेली कि ई नाटक थिक। ओ हुनक प्रारम्भिक अभिनय रहनि। आब त' कतेको नाटक मे अभिनय क'चुकल छथि। दक्ष अभिनेत्री भ' गेल छथि। नाटक आ जीवन मे भेद बूझि गेल छथि। त' जीवन मे नाटक आ नाटक मे जीवन अछि। मुदा दुनूठाम अभिनय लेल कुशलता, दक्षता आवश्यक।

अपन मनोभाव, परिस्थिति, शारीरिक ओ मानसिक स्थिति कें जतेक नीक जकाँ नुका सकी ततेक बढ़ियाँ। अहाँ भूखल छी, मुदा अहाँके सुखी-प्रसन्न लोकक अभिनय कर' पड़ि सकैत अछि। अहाँ दुखी छी मुदा सुख सँ भरल मुद्रा देखाब' पड़त। मोन पड़ैत अछि मित्र कथाकार

शिवशंकर श्रीनिवास संग घटल घटना। तहिया हम सभ गाम मे दशमी मे नाटक खेलाइ। छात्रे रही। शिवशंकरक पिताक अकस्मात स्वर्गवास भ' गेल रहनि। भाइ मे ओ जेठ। आमदनीक कोनो जरिया नहि। घरक स्थिति नीक नहि रहनि। एक दिन राति मे नाटक रहै। शिवशंकरक घर मे ओहि दिन ताधरि खेनाइ नहि बनल रहनि। ओ नाटक खेलेबा लेल तैयो आबि गेला। चेहरा पर बिना कोनो शिकन के नाटक केलनि। ककरो नहि बूझ' देलथिन जे ओहि दिन ओ किछु खेने नहि छथि। ई गप त' बाद मे, बहुत दिनक बाद कहने रहथि।

उनैस सय तिरासी मे पटना आबि गेल रही। तकर बाद सँ लगातार एतहि छी। केवल बीचमे दू वर्ष कटिहार रहलहुँ। चेतना समिति, अरिपन, भंगिमा, आंगन, कला समिति कतेको संस्थाक नाटक सभ कतेको बेर देखने छी। एम्हर किछु व्यक्तिगत कारण सँ व्यतिक्रम आयल अछि। कार्यक्रम नहि देखि पाबि रहल छी। तथापि मोटा-मोटी सभ महत्वपूर्ण अभिनेतालोकनिक अभिनय त' देखिये चुकल छी। एहि पैघ अन्तराल मे कतेको लोक अयला आ कतेको चल गेला। संस्था सभ काज करैत रहल। एहिमे सभ सँ व्यवस्थित भंगिमा। भंगिमा के हम सभ कलाकारक संस्था कहैत रहलियैक अछि। रंगकर्म लेल प्रतिबद्ध संस्था मानैत रहलियैक अछि। अरिपनक सेहो अपन खास महत्व छैक। से नाट्य-प्रतियोगिताक आयोजन ल' क'। आयोजक नाट्य-संस्था ल' क' ओकर महत्व छैक। मुदा सैह ओकरा नाट्य संस्थाक रूपमे कने कमजोर सेहो केलकै। अरिपनक बहुतो नाटक देखने छी। कतेको आयोजन मोन अछि। अरिपनक किरणजी, अद्भुत अभिनेता छथि। धूर्त समागमक किरणजी, बड़का साहेबक किरणजीकें बिसरब कठिन अछि। तहिना सरिसब मे भेल अरिपनक नाटक 'प्रायश्चित' सेहो ओहिना मोन अछि। एकदम थियेटर सन। हमसभ मैथिली मे थियेटरक कल्पना 'प्रायश्चित' देखि क' कर' लागल रही।

भंगिमा आब पच्चीस बरखक हुअ' जा रहल अछि। हमरा जनैत बहुत उपलब्धिपूर्ण रहल अछि ई पच्चीस वर्ष। मैथिली रंगकर्म के राष्ट्रीय परिचिति दिअयबा मे भंगिमाक खास महत्व छैक। अनेक नाटकक एक सँ

अधिक प्रदर्शन विभिन्न ठाम करबा मे भंगिमा अद्वितीय अछि। पच्चीस-तीस धरि कोनो नाटकक विभिन्नठाम प्रस्तुति अपने आप मे बहुत बात कहैत छैक।

काठक लोकक पाँच बेर, कुसमा-सलहेसक छह बेर, पारिजात हरणक आठ बेर, रूक्मिणी हरणक एगारह बेर विभिन्न ठाम प्रस्तुति अभिनय आयोजन, तकनीक, संगठन, व्यावसायिक नजरि, निर्देशन सभ दृष्टि सँ महत्वक बात थिक। मैथिली रंगकर्म लेल प्रतिमान। एहि लेल भंगिमा ओ एहि सभ नाटकक निर्देशक कुणाल बधाइ के पात्र छथि। भंगिमाक दोसर महत्वपूर्ण उपलब्धि अछि छमाही भंगिमा पत्रिकाक अनवरत प्रकाशन। एकर सभ अंक संग्रहणीय अछि। किछु अंक त' एकदम विशिष्ट अछि। भंगिमा जँ अपन रजत जयन्ती मे कोनो आयोजन करय त' ओहि मे भंगिमा पत्रिकाक सभ अंकक प्रदर्शनी लगाओल जाय। हमरा ईहो लगैत अछि जे सभ अंक के मिला क' तीन-चारि भौल्यूम मे, जते मे ओरिया क'सम्भव होइ, सम्पादित क' कए ओकर पुस्तकाकार पुनर्प्रकाशन कयल जाय। एखन धरि त' भंगिमा पत्रिका लेल कोनो सहयोग राशि नहि लेल गेल अछि मुदा सभ अंक मिलाक' सम्पादित पुस्तकाकार पुनर्प्रकाशन लेल सहयोग राशि सेहो राखल जा सकैत अछि। भंगिमाक पच्चीस बरखक रंग-यात्रा मे बहुतो लोक एहि सँ जुड़ला आ फेर अपन बाट पकड़लनि। मुदा ओहि तमाम हुजूमक बीच-दू व्यक्ति नहि, एक संस्था बहुत सम्मानक संग उभरि क' समक्ष अबैत छथि - प्रेमलता मिश्र 'प्रेम' आ छत्रानन्द सिंह झा 'बटुक भाइ'।

पटना मे देखल विभिन्न नाटक, नाटकक कतेको पात्र, कतेको दृश्य, अभिनेता-अभिनेत्री हमर स्मृतिमे ओहिना अनामिते सहेजल अछि। नहूँ-नहूँ टुघरैत से सभ चल' लगैत अछि। मित्र कवि-कथाकार विभूति आनन्दक ओकरा आंगनक बारहमासा, अंतिम प्रणामक बूढ़ा। अपन अजानबाहु बाँहिक नाम-नाम, पातर-पातर आंगुरबला दुनू हाथ सँ माथ पकड़ने बैसल बूढ़ा चिन्ताग्रस्त। ओरिजनल काम नाटक। एहेन प्रस्तुति जाहि मे दर्शकक कान आ आँखि स्थिर भ' गेल रहैक। दुनिया मे आर किछु नहि। केवल मंच पर

चलैत-बढ़ैत दृश्य, मनुक्ख, सम्बाद। मलिकिनी सँ खबासिनी धरिक अभिनय करैत प्रेमलताजी। अपन मोड़ल हाथ पर बड़का बट्टा लेने हवेली सँ चमकि क' निकलैत खबासिनी। घरक बहरिया चौकठि लग कोबरक गीत गबैत प्रेमलताजी। आर्थिक तंगी सँ जूझैत, फड़फड़ाइत केशक लटबला पूर्व राजाक अपन प्रतिष्ठा बचेबाक कसमकसक अभिव्यक्ति-बटुक भाइ। काठक लोकक अमर बबजिया उमाकान्त। उज्जर-उज्जर-धवल वस्त्र मे बिहरैत-उमंग मे उड़ैत उमाकान्त। ककरो कान मे कोनो खूराफाती मंत्र फूकैत चरबर-चालाक, मखौलिया कुमार गगन। अभिजात्य, दर्प भरल लखिमा ठकुराइनक भंगिमावाली स्वाती। दू टा कनियाँक बीच फँसल, क्षण-क्षण घटैत घटना-पराभव मे अपस्याँत कृष्णक भूमिका मे संजीव। विभूति आनन्द, उमाकान्त सँ कुमार गगन, राम श्रेष्ठ पासवान, संजीव मिश्र ओ प्रेमलताजी सँ पूनमश्री, स्वाती सिंह धरिक बढ़ैत अभिनय परम्परा। प्रमिला झा, कुमार शैलेन्द्र, मनोज पाठक, किशोर कुमार झा, मनोज मनुज, भास्करानन्दक तकनीकी विशेषज्ञता सँ भरल निर्देशकीय क्षमताक विकास।

एहि सभक बीच नेना सँ जुआन होइत भंगिमा। विशिष्ट ओ मोन राख' योग्य नाटक-जीवन-यात्रा। उपलब्धि सँ भरपूर। रंग-बिरंगक चमकैत-दमकैत रंग-मंच पर ठाढ़ दप-दप करैत भंगिमा।

हे, कने कियो कनगुरिया आँगुर सँ काजरक ठोप क' दितियैक...।

भंगिमा पत्रिका, 2008

■

मैथिली रंगमंचक रंग-रूप आ सेहन्ता

बनारस, गाम, पटनासँ दिल्ली धरि नाटक देखने छी। से बेसी मैथिली नाटक देखने छी। सभसँ बेसी पटनामे। तें हमर मोनमे पटनेक रंगमंच अछि। ओना आरम्भमे किछु मैथिली नाटकमे अभिनय सेहो केने छी। से गाममे। दशमीमे। हमर स्मृतिमे उन्नैस सय साठिक बादक मैथिली रंगमंच अछि। नेनपनसँ ल' क' एखन धरिक। एहि पचास वर्षक अन्तरालमे मैथिली नाटक ओ रंगमंच आगू बढ़ल अछि। व्यापक भेल अछि। एकर ख्याति देशक राजधानी दिल्ली धरि पहुँचल अछि। दिल्लीमे आइ मैथिली रंगमंच सक्रिय भेल अछि। ओहिठामक उर्जावान युवक सभ सँ एक नव भरोस जनमल अछि। प्रकाश झा आ हुनक संगोर सँ से विश्वास उपजल अछि। ई एक नीक लक्षण थिक।

मैथिली रंगमंच के एत' धरि पहुँचबामे कलकत्ता, पटना, बेगूसराय, जमशेदपुर, जनकपुर ओ गाम-गामक रंगमंचक सराहनीय योगदान रहल। कलकत्तामे श्रीकान्त मण्डल, नचिकेता, गुणनाथ झा, दयानाथ झा, रामलोचन ठाकुर, बेगूसरायमे प्रदीप बिहारी, जमशेदपुरमे ललन प्रसाद ठाकुर, जनकपुरमे महेन्द्र मलंगियाक संग पटनामे अरिपन, भंगिमा, कला परिषद्क संग चेतना समितिक योगदान के बिसरल नहि जा सकैत अछि। सुधांशु 'शेखर' चौधरी, छत्रानन्द सिंह झा, प्रेमलता मिश्र 'प्रेम' गजेन्द्र नारायण चौधरी, त्रिलोचन झा, कौशल कुमार दास, रोहिणी रमण झा, रवीन्द्र राजू, मनोज मनुज, किशोर केशव, उमाकान्त झा, रघुनाथ झा 'किरण' अरविन्द अक्कू आ विशेष क' कुणालक भूमिका उल्लेखनीय कहल जा सकैत अछि। एकर अतिरिक्त विभूति आनन्द, कुमार शैलेन्द्र आ वर्त्तमानमे कुमार गगन, कमल मोहन चुन्नू, अजित आजाद, अभय यादव आदि आदि अपन बहुविधि सक्रियता

सँ पटनाक मैथिली रंगमंचकें एक स्वरूप प्रदान करबामे सहायक भेला अछि। मैथिली रंगमंचकें सक्रियता प्रदान करबामे मंत्रेश्वर झाक योगदान बिसरल नहि जा सकैत अछि। नेपालमे रंगमंच बहुत संगठित रुपें आगू बढ़ल अछि। ओत' मैथिलीक प्रसिद्ध नाटककार आ रंगकर्मी महेन्द्र मलंगिया बहुत निष्ठा आ मेहनतिक संग मैथिली रंगमंचकें एक परिचिति देबामे सफल रहला अछि। तहिना बेगूसरायमे प्रदीप बिहारी, मेनका बिहारी, अनिल पतंग सेहो मैथिली रंगमंचक पहिचान स्थापित कयलनि अछि। मधुबनीमे सेहो सक्रियता बढ़ल अछि। रंगकर्मी लोकनि संगठित भेला अछि।

1990क दशकमे मैथिली नाटक ओ रंगमंच लेल अंतर्राष्ट्रीय नाट्य प्रतियोगिताक आयोजन बहुत उपयोगी आ सार्थक रहल। ओहिसँ जागरूकता आयल। नव-नव प्रयोग करबाक वातावरण बनल। ओहि आयोजन लेल 'अरिपन' नाट्य संस्थाक योगदान के बिसरल नहि जा सकैत अछि। ओहिसँ पूर्व पटनामे चेतना समितिक माध्यम सँ सुधांशु 'शेखर चौधरी आ गजेन्द्र नारायण चौधरी मैथिली रंगमंच ओ नाटककें पल्लवित करबामे अपन अप्रतिम योगदान देलनि। अरविन्द अक्कूक नाटक 'आगि धधकि रहल छै', गोविन्द झाक 'अन्तिम प्रणाम', सुधांशु 'शेखर' चौधरीक 'भफाइत चाहक जिनगी' मलंगियाक 'ओकरा आँगनक बारहमासा'क प्रस्तुति एखनो कतेक लोकक मोन प्राणमे बसल अछि। छत्रानन्द सिंह झा आ प्रेमलता मिश्र रंगकर्मक प्राण-बिन्दु रहथि। जे बादमे 'भंगिमा' संस्था बनाक' मैथिली रंगमंचक प्रतिष्ठापनमे उल्लेखनीय योगदान कयलनि। विभूति आनन्द सेहो ओहि समयमे बहुविधि रूपें सक्रिय रहथि। भंगिमा वस्तुतः रंगकर्मीक संस्थाक रूपमे स्थापित भेल छल। मैथिली रंगमंचकें आकार देबामे भंगिमाक व्यापक योगदान अछि। भंगिमा द्वारा बहुतो नाटक भेल। विभिन्न रंग-ढंगक नाटक भेल। विशेष रूप सँ मिथिलाक पारम्परिक शैलीक पुनराविष्कार क' ओकरा आधुनिक टच द' कय, मैथिली रंगमंचकें अपन खास रूप देबामे भंगिमाक नाट्य प्रस्तुति रुक्मिणीहरण, कुशमा सलहेस, पमरिया, पारिजात हरण आदि मोन पड़ैत अछि। सफलताक संग एहि प्रयोग सभ लेल मैथिलीक विशिष्ट नाट्य निर्देशक कुणालक परिकल्पना आ प्रयासक बहुत सराहना भेल। एहि सँ मैथिली रंगमंचक एक परिचिति बनल। मुदा तकर बाद सँ एहि दिशामे प्रयास जेना ठमकल लगैत अछि।

मुदा एतय धरि पहुँचबामे मैथिली नाटक ओ मैथिली रंगमंचकें बहुत आयास ओ प्रयास कर' पड़लैक। हमरा मोन पड़ैत अछि 1960-1970क बीच देखल नाट्य प्रस्तुति सभ। अपन नेनपनमे देखने रही। कीर्तिनाथ कला परिषद्, लालगंज (मधुबनी)क नाट्य प्रस्तुति। नाटकमे रंगमंचक साज-सज्जा के मिथिलाम बनेबाक कोशिश। सूप, माँटिक घैल, बसनी, आदि के रंगिक' गाम-घरक दृश्य बनाक' प्रस्तुतिमे मैथिल रंगढंग अनबाक प्रयास देखिक' दर्शक के भाषेमे नहि साज-सज्जामे सेहो मैथिलपनक बोध होइ। एहि प्रकारक कोशिश बहुत चर्चित-प्रर्शंसित भेल रहय। बादमे चेतना समितिक मंच पर ओकरा आंगनक बारहमासा आ अंतिम प्रणामक प्रस्तुति सँ रंगभाषा ओ भंगिमामे सेहो मैथिल लोक-रंग देखार हुअ' लागल। 'भफाइत चाहक जिनगी' जे विद्यापति पर्वकें पृष्ठभूमिमे राखि लिखल गेल तकरा विद्यापति पर्वक अवसर पर प्रस्तुत कयल गेल। सम्वेदनाक स्तर पर सेहो ई नाटक सभ दर्शककें मिथिला-मैथिली सँ जोड़लक। हमर कहबाक अभिप्राय आर स्पष्ट होएत जखन मैथिलीमे लिखल हिन्दीआइन अथवा क्षेत्रीय रंगसँ असम्पृक्त नाटक सभ मोन पड़त। मुदा ओहि हेंज सँ एकटा छलाह राजा, कनिया पुतरा, नीलो कका, लोंगिया मरचाइ, गुलाब छड़ी आदिकें सहजहिं बेराओल जा सकैत अछि। एहि सभ नाटकमे मैथिल जन-जीवन सेहो देखार पड़त। अन्यथा बहुधा नाटकमे खाली सम्वाद मैथिलीमे रहैत अछि। ओहो सम्वाद उच्चारणक हिन्दीआइन गंधसँ टग हन' लगैत अछि। वस्तुतः मैथिली रंगमंच लेल नाटक ओ ओकर प्रस्तुतिमे मैथिलीक सुवासकें नहि केवल सोच-विचारमे अपितु भावनामे सेहो अनबाक दृष्टि जरूरी अछि।

अरिपन नाट्य संस्था द्वारा अनेक नाटक मंचित कएल गेल। ओहि नाटक सभमेसँ अक्कूक 'धूर्त्त समागम' आ मंत्रेश्वर झाक 'प्रायश्चित'क प्रस्तुति मोनमे जेना खचित भ' गेल अछि। 'धूर्त्त समागम' अपन रंग-शिल्प ओ कथ्य ल' क' विशिष्ट अछि। चौदहम शताब्दीमे ज्योतिरीश्वरक लिखल ओहि नाटकक मैथिली रूपान्तरण अरविन्द अक्कू कएने छथि। ओहि नाटकक कथ्य अद्भुत रूपें आइयो प्रासंगिक अछि। 'प्रायश्चित' नाटकक प्रस्तुतिमे थियेटरक रंग ओकरा नव कोण प्रदान कयने रहय। सरिसव-पाहीमे ओहि नाटकक प्रस्तुति देखिक' हमरा व्यवसायिक थियेटरक विचार आयल रहय। मैथिलीमे थियेटर व्यावसायिक रूपें ठाढ़ कयल जा सकैत अछि।

पण्डित गोविन्द झा मैथिली थियेटरक एक ब्लूप्रिण्ट बनाक' सेहो देने रहथि। थियेटरक अर्थशास्त्र पर सेहो विचार भेल रहैक। हमरा लगैत रहल अछि जे ओहि दिशामे सेहो योजना बनक चाही। मैथिली थियेटर ठाढ़ करबाक उद्यम आइ बेसी प्रासंगिक लगैत अछि। से एकदम व्यवसायिक दृष्टिकोण सँ।

मैथिलीक रंगमंचकें जनताक नजरि सँ देखब बेसी उपयुक्त अछि। मैथिली रंगमे लोकरंग सभ दिन महत्वपूर्ण रहल अछि। से कृषक आ श्रमिक जनता सँ जुड़ल अछि। ओहि लोक दृष्टि सँ मैथिली रंगमंचकें आगू बढ़ाओल जा सकैत अछि। व्यावसायिक हो वा अव्यावसायिक, भविष्यक रंगमंचक स्वरूप हमरा नजरिमे लोकरंग, लोक-स्पर्श आ लोक-दृष्टिक परिष्कृत (आधुनिक) रूप अछि। ओहिमे रंगतत्वक संग कथातत्व सेहो झुस नहि रहत। मिथिलाक रंग परम्परामे कथातत्व ओकर प्राण-तत्व रहल अछि। शिल्प आ टेकनीक त' ओकर अनुगामी छल। मैथिली रंगमंचक कोनो परिकल्पना बिना अभिनय आ कथा-प्रवाहक नहि भ' सकैत अछि। टेकनीकक आतंक ओकर मूड़ी मचोड़ि देत। प्रयोगक जिद्द सेहो हानिकारक भेल अछि। तें मैथिली नाटकमे तीक्ष्ण कथ्यक संग कथा प्रवाहक बदला आन-आन प्रवाहकें प्रमुखता देब सार्थक नहि अछि। ई सभ बात कहबाक प्रयोजन एहि कारणें भेल जे जते दूर धरि मैथिली रंगमंच अपन स्वरूपमे आगू बढ़ल अछि तकरा आर व्यापक ओ गहींर बनाक' आगूक यात्रा करबाक छैक।

मैथिली रंगमंचक सम्बन्धमे आँखिमे बसल रंग-रूप आ मोनक सेहन्ताक संग ई बात कहबाक अछि जे मैथिली रंगकर्म सँ जुड़ल विभिन्न लोकक जँ पटनामे एक जुटान होइतय त' वर्त्तमानमे आयल जड़ता एहिठाम टुटितय। एक नव उत्साह बनितय। हमरा संग पटनाक रंगकर्मी लोकनि ई अनुभव करैत होयब जे पटना जेना एखन ठमकल अछि। कहियो ई एक केन्द्रीय भूमिकामे रहय। मुदा आइ चेतना समितिक विद्यापति पर्वक भरोसे जीबि रहल अछि। से त' पहिनहुँ जीबैत छल। ओहिमे कोन नब गप। तें आउ, कने फेर कोनो नब गप करी। जत' पहुँचल छी से कोनो कम नहि अछि। मुदा जेबाक त' सरिपहुँ बहुत दूर अछि।

संध्या गोष्ठी पत्रिका, 2012

■

सुधांशु 'शेखर' चौधरीक नाटक

काशीमे मैथिल छात्र संघक द्वारा सरस्वती पूजाक अवसर पर रातिमे नाटक भेल करै। ओहि समय नेना रही मुदा नाटकक प्रति सहज आकर्षण रहय। ई आकर्षण राम मन्दिर मे मास-मास दिन चलैत रिहर्सलमे हमरा लिप्त राखय। जाबत रिहर्सल चलै, हम बैसल रही।

नाटक सभ हिन्दी मे होइ। एकोटा मैथिलीक नाटक मोन नहि पड़ैत अछि। हिन्दियोमे जे नाटक होइ से ऐतिहासिक। मीरकासिम, दो मिनट की रानी, चाणक्य, चन्द्रगुप्त। सामाजिक नाटक जे पहिले-पहिल हम देखलहुँ से 'नाटक' नामक छल। तमाम महान ऐतिहासिक पात्र सभक बीच ओहि नाटकक पात्र सभ हमरा परिचित बुझायल। एकटा पात्र अपन नाम आ अभिनयक कारण खूब पसिन्न पड़ल। मिस्टर डालडा। तैं मिस्टर डालडा बहुतो दिन धरि हमरा मोन रहल। ओहि पात्रकें अभिनय कर' बला अभिनेता सेहो आकर्षित केलनि। जखन भेटथि मोन प्रसन्न भ' जाय। ई बादमे जा क' बुझलियैक जे ओ नाटक लिखल छल सुधांशु 'शेखर' चौधरीक। मिस्टर डालडाक सृजन वैह केने रहथि।

नाटक देखब त' गामे सँ शुरु छल। काशी गेला सँ पहिनेसँ। सरिसबमे मिथिला नाट्य-कला परिषद् ओ पैटघाट पर कीर्तिनाथ कला परिषद् द्वारा टिकट पर नाटक भेल करै। आगूमे खधियामे कुर्सी पर बैसि क' जे सभ नाटक देखथि से बेसी पाइ देथिन। पाछू बला दर्शक नार-पुआर पर बिछाओल सतरंजी पर बैसय। ओहू नाटक सभमे मैथिली नाटक कमे भेल करै। काञ्चीनाथ झा 'किरण'क 'विजेता विद्यापति', जेना स्मरण अबैत अछि, डा॰ धीरेन्द्र ओ हमर जेठ भाइ सुशील झाक रेड़म-बहेरमक बाद भेल रहय-सरिसबमे। मिथिला नाट्य-कला परिषद् द्वारा।

कीर्तिनाथ कला परिषद् द्वारा मुदा मैथिलीमे सेहो नाटक हुअय। काशीनाथ मिश्रक 'अयाची', कृष्णानन्द झाक 'विद्यापति' भेल रहैक। ओतहि ईशनाथ झाक 'चीनीक लड्डू' आ गोविन्द झाक 'बसात' नाटक देखने रही। हमरा परिसर मे ई दुनू नाटक पूर्वहि सँ चर्चित छल। ओकर पात्र सभक मादे, भाग लेनिहार कलाकार लोकनिक मादे लोक सभक मुँहसँ सुनने रही। लोक सभ बहुत आबेस ओ प्रसन्नता सँ ओहि दुनू नाटककें मोन पाड़थि। लोकप्रियताक कीर्तिमान स्थापित केने रहय 'चीनीक लड्डू' ओ 'बसात'। मैथिलीमे सामाजिक मंचीय नाटकमे एहि दुनू नाटकक लोकप्रियता आइयो नहि घटल अछि।

नाटक देखब त' सात बरखक अवस्था सँ-उन्नैस सय उनसठि-साठि सँ शुरु भ' गेल छल। नाटक खेलायब नियमित रूप सँ गाममे शुरु भेल। से उन्नैस सय एकहत्तरि-बहत्तरि सँ। हमहूँ सभ जे नाटक खेलाइ, से हिन्दी आ मैथिली दुनूमे। दशमीमे नाटक भेल करै। पहिने गोविन्द दास कला परिषद् द्वारा लोहना पाठशाला पर, तकर बाद मिडिल स्कूल पर मिथिला विकास क्लब द्वारा। हिन्दीमे ऐतिहासिक आ मैथिलीमे ऐतिहासिक-सामाजिक। हिन्दीमे राजा पुरु, बहादुरशाह जफर, पीर अली आदि त' मैथिलीमे कुहेस, कनिया-पुतरा, सुखायल डारि नव पल्लव, प्रत्यावर्तन, मीनाक्षी (राजनर्तकी), कर्मवीर, बड़का साहेब, पृथ्वीपुत्र आदि। महेन्द्र मलंगियाक 'जुआयल कनकनी' नाटक पढ़लहुँ त' खेलेबाक सेंहन्ता भेल। खेलेबामे मुदा कठिन लागल। खेलेबाक साधंस नहि भेल। सुधांशु 'शेखर' चौधरीक नाटक ओहि समय धरि हमरा सभकें नहि भेटल छल। मुदा पटनामे भेल 'भफाइत चाहक जिनगी'क चर्च गामो धरि पहुँचल। लोककें चकविदोर लगौने रहय ओ नाटक। पटनाक जे लोक रहथि से ओहि नाटकक चर्च-वर्च करथि। संग-संग चेतना समिति, विद्यापति पर्व, पटनाक मैथिल लोकनिक ओहिमे रुचि-अरुचि आ मैथिलत्वक वाष्पीकरण अर्थात् हरिमोहन झाक 'मैथिलेटेड स्पिरिट'क खिस्सा सेहो रहैत छल। ई 'भफाइत चाहक जिनगी'क दर्शक पर पड़ल प्रभाव छल। वस्तुतः ई प्रभाव नायक महेशक पढ़ि-लिखि एम॰ ए॰ पास क' चाहक दोकान करबाक बातक संग मिथिला-मैथिल-मैथिलीक प्रसंग दर्शककें सोचबाक-विचारबाक लेल विवश केने रहय।

मैथिली नाटकमे 'भफाइत चाहक जिनगी' विद्यापति पर्वक पृष्ठभूमिमे चाह ओ पानबला एवं ओकर गाहकि सभक माध्यमे मैथिल स्वभावक समीक्षाक दृष्टि सँ अद्‌भुत नाटक अछि। अद्‌भुत ई अछि जे परिवर्तित होइत नागर जीवन-शैलीक बीच मैथिलत्वक जे उदारता-संकीर्णता अछि से ओहिमे चरित्र ओ सम्वादक माध्यमे खूब प्रकट भेल अछि। से लगातार चलैत नाटकमे। जतबा काल नाटक चलैत अछि ततबे कालमे 'लाइव' प्रदर्शनक द्वारा। अर्थात् जे घटित भ' रहल अछि से तत्काल घटि रहल अछि। शेखरजी एकरा 'एक कालखण्डी नाट्य प्रयोग' कहैत छथि। एहि नाट्य प्रयोगक प्रसंग हुनक कहब छनि जे, 'पात्र-पात्रीक सम्पूर्ण जीवनमे सँ गोटेक कालखण्डकें ल' क' हम ओकर सम्पूर्ण जीवनक आभास, ओकर सम्पूर्ण जीवनक चिन्तन-प्रक्रियाक आभास, ओकर चारित्रिक परिचय आदिकें प्रेक्षक-सामाजिक धरि पहुँचा देबाक चेष्टा कयने छी।'

'भफाइत चाहक जिनगी' शीर्षक प्रसंग सुधांशु 'शेखर' चौधरीक टिप्पणी अछि, 'भफाइत चाहक जिनगी'क सामान्य अर्थ होइत अछि-एहन जिनगी जे भफाइत चाहक सदृश होअय अथवा एहन जिनगी जे भफाइत चाह पर अवलम्बित हुअय। मुदा नाटकक नाम रखबाक काल हमरा दुनूमे सँ एको अर्थ अभिप्रेत नहि छल। हम जे नाटकक नाम रखने छी से प्रतीकात्मक अछि। भफाइत चाहक अभिप्राय होइत अछि गरम चाह। गरम चाह दर्शयबा मे दू टा प्रतीकार्थ व्यंजक शब्द अछि-गरम आ भाफ। भाफ उड़ि क' बिला जाइबला तत्व अछि, सर्दक विपरीतार्थक द्योतक अछि। तें हम पोथीक नाम रखबामे मानि क' चलल छी जे युवकक पूर्वक जे किछु सोचल छलैक से भाफ जकाँ उड़ि क' विलीन भ' रहलैक अछि, मुदा ओकरा भीतरमे गरमी छैक वर्तमान सँ ठठि सकबाक। अर्थात् ओ अस्तित्व रक्षाक संघर्षक हेतु प्रस्तुत अछि।'

मुदा शेखरजी जेना कहैत छथि ई नाटक खाली नायक महेशक अस्तित्व रक्षाक संघर्ष नहि देखबैत अछि ओ ओकर व्यक्तित्व रक्षाक संघर्ष कें सेहो प्रकट क' जाइत अछि। नाटकक नायक महेश एम॰ ए॰ पास युवक अछि। तीन बेटीक बाप अछि। मैथिलीक कवि अछि। ओकर डिग्री ओकरा

कोनो रोजगार नहि द' पबैत छैक। कोनो नोकरी नहि भेटैत छैक। ओ गाममे रहैत अपन माय-बापकें कहैत अछि जे शहरमे नोकरी करैत छी, मुदा से सत्य नहि थिक। ओ चाह बेचैत अछि। विद्यापति पर्वक आयोजनमे चाहक स्टाल लगौने अछि। ओहिठाम चाहो बेचैये आ मंच पर कविता सेहो पढ़ि अबैये। माइक पर जखन घोषणा होइत छैक जे महेशजी जत' कतहु होथि, मंच पर चलि आबथि। एकर बाद हुनके कविता पढ़बाक छनि।' त' ओ कविता पढ़बाक लेल चल जाइये। अपन स्टाल पर अनायास एक युवती चन्द्रमा, जकर पति ओकरा ओत' छोड़ि ककरो सँ गप्प कर' चलि जाइत अछि, कें दोकान देखैत रहबाक लेल कहि जाइत अछि। स्पष्ट अछि जे कार्यक्रमक आयोजक लोकनिकें ई नहि बूझल छनि जे कवि वैह अछि जे चाहक स्टाल पर चाह बेचि रहल अछि। नाटकमे आयल ई सभ तथ्य कहैत अछि जे नायक महेश अपन परिचय नुका क' रखबाक अभ्यासी अछि। मुदा घटना सभ एना घटित होइत चलि जाइत छैक जे वास्तविकता अनायास प्रकट होइत जाइत अछि। वास्तविकताक प्रकटीकरण ओकर स्टाल पर आयल परिचित-अपरिचित पुरुष-स्त्रीक वार्त्तालाप सँ स्वत: होइत जाइत छैक। गाममे नोकरी करबाक गप्प, ओकर कवि होयबाक बात, विद्यार्थी अवस्थामे प्रतिभाशाली ओ चन्सगर हेबाक बात, चाह बेचितो पढ़ल-लिखल सुसंस्कृत हेबाक बात आदि लोकक चाह-पान करैत ओकरा संग वार्त्तालापमे बूझल भ' जाइत छैक। ई बूझल भ' जाइत छैक जे भले ही ओ चाह बेचि अपन गुजर करैत हो मुदा अछि धरि विशिष्ट लोक। अपन विशिष्टताकें बना क', बचा क' रखबामे ओकर कोशिश देखबा जोगर अछि। नाटकमे एहि विशिष्टता आ सामान्यताक द्वन्द्व ओकर चरित्रमे खूबे उभरल अछि। एहि सभ कार्य-व्यापार सँ अस्तित्व बचेबाक संघर्षक संग व्यक्तित्व बचेबाक संघर्ष सेहो प्रकट होइत अछि। तखन एकटा तथ्य अवश्य विचारणीय थिक। कोन कारण अछि जे महेशकें गाममे अपन चाह बेचबाक काजकें आ शहरमे कविता लिखबाक काजकें नुका क' रखबाक लेल विवश केलक? वस्तुत: ई महेशक चरित्रमे विशिष्टता ओ सामान्यताक द्वन्द्वे थिक।

नाटकमे जखन ओकर गामक-परिवारक लोक दिगम्बर ओकरा कहैत छै जे, 'गाममे क्यो नै जनैए जे अहाँ चाहक दोकान करै छी। अहाँकें बाइली

आमदनी बहुत होइए सेहो लोक चर्च करैए।' त' ओ कहि उठैत अछि, 'असलमे बाबूकें हम सैह कहने छियनि। ओ छथि पुरान लोक... पुरान मान्यतामे जीनिहार। ओ नोकरीकें प्रतिष्ठाक काज बुझैत छथि आ बनियाक काजकें नीच कर्म मानै छथि। हुनकर मान्यता पर हम किए आघात करियनि। हम जाहि संसारमे जीबि रहल छी, अपन अस्तित्व लेल जेहेन संघर्ष हमरा लोकनिकें कर' पड़ि रहल अछि ताहि सँ ओ अपरिचित छथि। ओ अपन संसारमे रहथु, हम अपन संसारक आगि सँ हुनका किए झरकबियनु।' स्पष्ट अछि जे ओकर संसार बदलि गेल छैक, मुदा जाहि समाजक ओ लोक अछि से कोनो काजकें ऊँच-नीचक मापदण्ड पर देखैत अछि। इहो मापदण्ड युगक अनुसार बदलैत रहैत छैक। पहिने 'उत्तम खेती मध्यम बान, निषिध चाकरी, भीख निदान' रहैक त' बादमे नोकरी, ताहूमे सरकारी नोकरी, ऊपर उठि गेल। कहल जाइत छैक जे स्थायी सरकारी नोकरीमे खून-मासक सम्बन्ध भ' जाइत छैक। से बादमे नहि रहल। बादमे नोकरी सँ स्थायित्वक मापदण्ड कमजोर पड़ि गेलैक। आब त' अपन योग्यता, क्षमताक बल पर लोक कतेको नोकरी छोड़ैत अछि आ फेर बेसी पाइ बला नव नोकरी पकड़ि लैत अछि। तत्काल बान अर्थात् व्यापार त' सभ सँ ऊपर चलि गेल अछि। एहि प्रकारें बदलैत युगमे समाजक मापदण्ड बदलला सँ कोनो काज ऊँच वा प्रतिष्ठादायक त' कोनो काज नीच वा अप्रतिष्ठाकारक बूझल जाइत अछि। ई काजकें जाति-वर्ण सँ जोड़ि क' देखबाक फल थिक। अहाँ पोथी लिखै छी, सरकारी नोकरी करै छी त' ऊँच काज करै छी आ यदि चाह-पान बेचै छी, जुत्ता सीबै छी त' नीच काज करै छी। अपना ओहिठाम सामान्यतयाक यैह धारणा वर्गीय अवधारणाक आधार सेहो बनि गेल अछि। वर्ण-जाति वा वर्ग-भेदक मानसिकता मनुक्खकें ओकर काज अर्थात् जीविकासँ नपैत अछि। ई मानसिकता समाजकें काजक संग जुड़ल नैतिक ओ अनैतिक आयामकें देखबा सँ सेहो रोकैए। सरकारी नोकरी ऊँच प्रतिष्ठादायक त' बाइली आमदनी समाज स्वीकृत। वस्तुतः बाइली आमदनिए संग सरकारी नोकरी ऊँच आ प्रतिष्ठादायक। सामाजिक सत्ताक एहि वीभत्स मान्यताकें महेश बूझैत अछि। ओकरामे आक्रोश छैक एहि मान्यता लेल मुदा एहि मोर्चा पर ओ लड़' नहि चाहैत अछि अपन

बापकें फूसि कहि परतारि दैत अछि। जीविका लेल ओ जे काज करैत अछि तकरा प्रति ओकरा निष्ठा नहि छैक। सैह स्थिति ओकर कविता लिखबाक मादे सेहो अछि। ओ कविता लिखबकें 'पैघ' आ चाह बेचबकें 'छोट' काज अपनहुँ मानैत अछि। ओकरा परम्परासँ ई बोध प्राप्त भेल छैक जे कविता लिखब विशिष्ट काज थिक, महान काज थिक आ चाह बेचि गुजर करब निकृष्ट काज।

चन्द्रमा जखन ओकरा कहैत छैक जे, 'माइक पर सँ जखन अहाँक बजाहटि भेल त' अहाँ सेकेण्डो भरि अपनाकें रोकि नहि सकलौं। ई चाहक दोकान जे अहाँक जीविकाक साधन अछि, तर पड़ि गेल आ अहाँ निच्छोह पड़यलौं। जे जीविका सँ अधिक महत्व अपन विशेष भावनाकें द' सकैए से मामूली कोना भ' सकैए। ... अहाँ कवि पहिने छी चाहबला बादमे। बाजू एहि सत्यकें अहाँ हमरा सँ नुकौने छी वा नहि?' त' महेश जवाब दैत अछि जे 'अहाँक आगाँ अपनाकें खोलबाक अवसर नै भेटल ताहि लेल कचोटे टा भ' सकैए। ओना, हम जे छी से अहाँक सोझाँ छी। एक चाहबला एक देवीकें अपन सोझाँमे पाबि धन्य अनुभव क' रहल अछि।' स्पष्ट अछि जे महेश चन्द्रमाक बातकें अस्वीकार नहि करैत अछि। मुदा जेना ओ चन्द्रमाकें कहैत अछि-जे छी से अहाँक सोझाँमे छी से अनका, आयोजक लोकनिकें नहि कहि सकल। ई नहि कहि सकल जे ओ जेना चाह बेचि गुजर करैत अछि तहिना कविता लीखि अपन विचार ओ भावनाकें प्रकट करैत अछि। दुनू एकटा काज थिक। दुनूमे कोनो विरोध नहि छैक। एकटा व्यक्तिगत जीवन लेल, परिवार लेल जरुरी छैक त' दोसर सामाजिक जीवन लेल। अन्तर्विरोध छैक त' ओहि व्यवस्थामे जे कोनो कविकें कविता लिखबाक अवकाश नहि उपलब्ध करा पबैए अथवा चाहबला कविता लीखियो क' अपनाकें कवि नहि कहि पबैए। तहिना अन्तर्विरोध ओहि व्यवस्थामे इहो छैक जे ओ पढ़ल-लिखल युवककें ओकर योग्यता-क्षमताक अनुरूप जीविका नहि प्रदान क' पबैए। मुदा व्यवस्थाक एहि द्वन्द्वकें बुझियो क' परम्परा सँ पोसल विशिष्ट ओ सामान्यक द्वन्द्व ओकर पछोड़ नहि छोड़ि पबैत छैक। ओ विशिष्टताक प्रति एक मोह पोसनहि रहैत अछि। ओहि विशिष्टताक प्रति जे वर्णवादी सामाजिक व्यवस्थामे ओकर सांस्कारिक

अवधारणाक देन थिक। वस्तुत: महेशमे एहने विशिष्टता-बोध जीवन संघर्षमे भाफ बनि उड़ि रहल अछि आ ओ सामान्य मनुक्ख बनबाक प्रक्रियामे संघर्षक गरमीकें बचा क' रखबाक लेल संघर्ष क' रहल अछि। एहि प्रकारें नायक महेशक अस्तित्व रक्षाक संघर्ष व्यक्तित्व रक्षाक संघर्ष सेहो बनि जाइत अछि। स्वाभाविक अछि जे व्यक्तित्व त' सामान्यताक धरातले पर प्राप्त कयल जा सकैत अछि।

मुदा नाटकमे बात खाली महेशक व्यक्तित्वक संघर्ष धरि सीमित नहि अछि। ओहिमे चेतना समिति अछि। विद्यापति पर्व अछि। पर्वमे गाना-बजाना अछि। मुदा ई सभटा बात सम्वादक माध्यम सँ बूझल होइत अछि। एकरे संग पर्वमे आयल विभिन्न वर्गक लोकक मैथिल मानसिकता अछि। स्वभाव अछि। ऊँच-नीचक भावना अछि। आधुनिकताक दम्भ अछि त' अतीतक प्रति मोह सेहो अछि। मैथिलीक प्रति अकुंठ सेवा भाव त' मैथिली-तैथिलीकें पिछड़ल बुझबाक मानसिकता सेहो अछि। एतावता एहि सभ बातमे वर्ग-भेद स्पष्ट दृष्टिगोचर होइत अछि। वस्तुत: ई मिथिलीक क्रिया-कलाप निम्न मध्यम वर्गक आधार पर पसरैत देखाइत अछि त' उच्च वर्गक एहि पर्वमे तफरीह करबाक, मजा लुटबाक प्रवृत्ति सेहो जगजिआर होइत अछि। स्वाभाविक रुपसँ नाटकक एहि सम्पूर्ण सृजित वातावरणक प्रभाव दर्शक पर पड़ैत छैक। ओ नाटकक कथा वस्तुक संग मिथिला-मैथिल-मैथिलीक प्रति सेहो सम्वेदित होइत अछि। हमरा जनैत 'भफाइत चाहक जिनगी'क यैह प्रभाव ओकर सबल पक्ष थिक। तैं 'भफाइत चाहक जिनगी' महेशक जिनगीसँ आगू बढ़ि मिथिला-मैथिल-मैथिलीक सामाजिक सन्दर्भ कें सेहो व्यंजित क' जाइत अछि। जाहिमे मैथिलत्वक वाष्पीकरणक संग सामान्य लोकक सांस्कृतिक उष्मा ठठल रहबा लेल व्याकुल अछि।

बादमे जखन मैथिली नाटकक सम्बन्धमे पढ़लहुँ त' बुझलहुँ जे आधुनिक कालक पहिल नाटक जीवन झाक सुन्दर संयोग थिक जकर सम्भवत: कतहु मंचन नहि भेल। आधुनिक कालमे मैथिलीक पहिल नाटक जकर मंचन भेल से मुंशी रघुनन्दन दासक 'मिथिलाक नाटक' थिक। ओहि समय धरि पारसी स्टेजक प्रचार मिथिलामे भ' गेल रहय। कतेको नाटक

मण्डली बनि गेल छल। ओ मण्डली सभ हिन्दी मे घूमि-घूमि क' नाटक करय। एही मण्डली सभकें ध्यानमे राखि 'मिथिला' नाटक लिखल गेल छल। ओहिमे भारतेन्दु हरिश्चन्द्रक 'भारत दुर्दशा' सन मिथिला दुर्दशाक बात अछि। ओहि नाटकमे मिथिलाक अतीत ओ वर्त्तमानक चित्रण एहि उद्देश्य सँ कयल गेल अछि जे लोक अतीत सँ प्रेरणा ग्रहण क' वर्त्तमान दशा सँ मुक्त होयबाक कोशिश करय। 'मिथिला' नाटकक बाद ईशनाथ झाक 'चिनीक लड्डू' (1941), शारदानन्द झाक 'फेरार' (1950), ओ गोविन्द झाक 'बसात' (1958) अछि जे मंचित भ' लोकप्रिय भेल। मैथिलीमे सामाजिक नाटक सभक बीच विद्यापति पर आधारित नाटकक एक श्रृंखला सेहो अछि। से ईशनाथ झाक 'उगना', विद्यानाथ रायक 'विद्यापति', गोविन्द झाक 'राजा शिवसिंह', 'काञ्चीनाथ झा 'किरण'क 'विजेता विद्यापति', ब्रज किशोर वर्मा 'मणिपद्म'क 'कण्ठहार' सँ ल' क' छत्रानन्द सिंह झाक 'चाही एकटा शिवसिंह' धरि चलैत रहल अछि। विद्यापति ओ हुनकर समय, मिथिला, मैथिल ओ मैथिलीक स्वत्व निर्धारणक प्रस्थान बिन्दु थिक। कोनो रूप ओ विधामे हो, ओ एखन धरि विमर्शक बिन्दु बनले अछि। तहिना विद्यापति पर्वक सम्बन्धमे सेहो विचार-विमर्श चलैत रहल अछि।

कोनो नाटककें देखिनिहार दर्शक होइत अछि। ओहिपर विचार केनिहार समीक्षककें नाटकक दर्शक-प्रेक्षक होएब जरूरी छैक। जें कि नाटकक अभिनय होइत अछि आ से रंगकर्म होइत छैक तैं दर्शक-प्रेक्षकक संग रंगकर्मी सेहो ओहि सँ जुड़ल रहैत अछि। नाटक सँ प्रेक्षक ओ रंगकर्मीक रूपमे जुड़ाओक बिना ओहि पर विचार करब, समीक्षा करब समीचीन नहि भ' सकैत अछि। हम सुधांशु 'शेखर' चौधरीक मात्र एकटा नाटक देखने छी। सेहो बीस वर्ष पूर्व। हुनकर नाटक पर विचार करबाक लेल प्रेक्षक नहि हेबाक अभाव हमरा खटकैत अछि। एक कलाकार रूपमे हुनकर नाटकमे भाग लेबाक अनुभव सँ सेहो हम अपनाकें वंचित पबैत छी। तैं 'भफाइत चाहक जिनगी'क दर्शक पर पड़ल प्रभावक डोरि पकड़ि जेना हम विचार केलहुँ तहिना शेखरजीक नाटक 'पहिल साँझ'क सम्बन्धमे छत्रानन्द सिंह झाक विचार हम पढ़ैत छी। ओ एक कलाकारक रूपमे ओहि नाटकमे भाग

लेने रहथि। ओ नाटकमे रमाकान्तक अन्तिम सम्वाद (जकरा छत्रानन्द सिंह झा नाटकक अन्तिम सम्वाद सेहो कहैत छथि)क सम्बन्ध मे बात करैत निर्देशकक दुविधाक प्रश्न उठौने छथि। ई दुविधा ई छल जे नाटककारकें रमाकान्तक चारित्रिक उत्कर्ष अथवा अपकर्षक सम्बन्धमे अभीष्ट स्पष्ट नहि छलनि। से निर्देशक लग समस्या उपस्थित केलक। से समस्या अभिनयक द्वारा दर्शकक समक्ष रमाकान्तक चरित्रकें फड़िछायब छल। जँ रमाकान्तक अपकर्ष देखओल जाय त' निर्देशक बुझौथिन कलाकारकें- अहाँ हारल-थाकल डेगसँ आगाँ बढ़ू आ अपन पत्नीक हाथ सँ झोरा लिअ' आ भारी डेग सँ मूड़ी झुकौने घर सँ बहरा जाउ। बस। रमाकान्त हारि गेला। मुदा जँ निर्देशक ई सोचथि जे रमाकान्तक चरित्रमे आर दृढ़ता आनल जाय तँ ओ कलाकार कें कहथिन-अहाँ तेज गति सँ बढ़ू आ अपन पत्नीक हाथ सँ झोरा छीनू आ तेज गति सँ बहराउ। बस। मात्र पद्‌गतिक घटला-बढ़लासँ चरित्रमे एतेक परिवर्त्तन आबि जाइत छैक। छत्रानन्द सिंह झा कहैत छथि जे 'भंगिमा' 'पहिल साँझ'क अन्त निर्देशकक दोसर सुझाबक अनुसार केलक। जखन 'पहिल साँझ' पढ़ैत छी त' ओहिमे सेहो निर्देशकक दोसर सुझाबक अनुसार 'झटका मारि झोरी लैत आ 'तेजी सँ रमाकान्तकें बहरा जाइत' देखैत छी। हमरा एकर अर्थ लगैत अछि जे सम्भवत: ई नाटककार ओ निर्देशकक सम्मिलित निर्णय सँ भेल अछि। मुदा रमाकान्तक सम्वाद नाटकक अन्तिम सम्वाद नहि थिक। अन्तिम सम्वाद उदयकान्तक पत्नी भारतीक अछि। मुदा ताहू सँ पहिने रमाकान्तक पत्नी भुवनेश्वरीक सम्वाद अछि-'अहाँ सभ दुख नै करब कनियाँ, ओ ने चलि गेला...हम त' छीहे. .. नेनाक सभ किछु अपन आँखिये देखब...' अर्थात् पत्नी पतिक असम्मत व्यवहारक परिमार्जन करबाक कोशिश करैत अछि।

तैयो नाटक पढ़ि क' हमर समस्या बढ़ि जाइत अछि। रमाकान्त सन अधैर्यवान, चंचल, बेटाक भरोसें जमीन-जथा बढ़ेबाक मनसुआ पोस' बला, झाड़फूकमे विश्वास केनिहार जिद्दी, बजबाक कोनो संयम नहि रखनिहारक चरित्रक उत्कर्ष की देखओल जेबाक चाही? बापक एहन चरित्रक समानान्तर बेटाक चरित्र अछि। उदयकान्त नगरमे अपन सामाजिकता बढ़ेबाक लेल बेटाक जन्म दिन पर भोज-भातक ओरिआओन करैत छथि। ओहि मे व्यस्त

छथि। एहि व्यस्तताक बीच पिताक अप्रत्याशित आगमन सँ प्रसन्न नहि छथि। से एहि कारणे जे पिता एहि बर्थ डे पार्टी कें फिजूल खर्च मानैत छथि। ओ बेटासँ रुपैया ल' खेत-पथार कीन' चाहैत छथि। जखन कि खेती केनिहार कियो समांग नहि छनि। हुनका एहि बातक कोनो चिन्ता नहि छनि जे बेटा सभ शहरे रहि नोकरी करत त' खेत-पथार के देखत? खाली खेत कीनला सँ की हैत? खेती के करत? ओ खेत कीनि खाली गाममे अपन प्रतिष्ठा-प्रभाव बढ़ेबाक भ्रम पोसने छथि। बेटा बापक एहि मनसुआ सँ खिन्न छथि। हुनका ने फाजिल आमदनी छनि ने निरर्थक खेत कीनबाक मोन। मुदा ओ पिता लग अपन मोन खोलि नहि पबैत छथि। अपन विचार प्रकट नहि क' पबैत छथि। एहि बिन्दु पर फराक-फराक सोचक कारण दुनूक बीचमे सम्वादहीनता उत्पन्न भ' गेल अछि। फलत: हुनका गाम सँ आयल पिताक संग जरूरियो सम्वादक खगता नहि होइत छनि। ओ अपनाकें भोज-भातक इन्तजाममे व्यस्त केने रहैत छथि। वस्तुत: ई सम्वादहीनता बापे नहि, बेटोक व्यवहारकें सम्मत नहि रह' देने अछि। फलस्वरुप पहिले साँझ बाप-बेटामे बझि जाइत छनि आ बाप झोड़ी-झपटा ल' क' पड़ाइत छथि। पोताक बर्थ डे क अवसर पर बिना कोनो सूचनाक अप्रत्याशित रूपें पहुँचल दादाक पड़ेला सँ रंगमे भंग होइत अछि। मुदा भुवनेश्वरी बेटा-पुतहुक संग रहि क्षतिपूर्तिक कोशिश करैत छथि।

जेना शेखरजी कहैत छथि जे हुनका एहि नाटकक माध्यम सँ 'जेनरेशन गैप' देखेबाक छलनि, से ओ देखेबामे सफल भेला अछि। तखन कोन चरित्रक उत्कर्ष देखाओल जाय वा अपकर्ष से नाटककार ओ निर्देशकक जीवन-दृष्टि पर निर्भर करैत अछि। जँ ओ मानैत छथि जे बाप कहियो गलत नहि भ' सकैत अछि, बेटाक कमाइ सँ बिना ओकर सहमतिक खेत कीनबाक जिद्द ठीक अछि त' ओकर पक्षमे भ' सकैत छथि। ओकर विजय देखा सकैत छथि। मुदा हम रमाकान्तक चारित्रिक उत्कर्षसँ सहमत नहि भ' पबैत छी। से एहि कारणे जे रमाकान्त विचार ओ व्यवहार सँ विवेकशील लोक नहि छथि। ओ अतीत सँ पोसल सोचक प्रति कट्टरताक सीमा धरि अन्ध भ' गेल छथि। बदलैत समयक आहटि हुनका लग जेना पहुँचबे नहि कयल अछि। एहि सभ कारणे ओ अपन बेटा-पुतहु-पोताक प्रति एकदम

असहिष्णु भ' गेल छथि से अमानवीयता हद्द धरि। केवल अपना लेल जीनिहार एहन चरित्रक उत्कर्ष देखायब समाज-सापेक्ष दृष्टि नहि भ' सकैत अछि। तखन एकटा तथ्य ध्यातव्य थिक। रमाकान्तक अन्तिम सम्वाद नाटकक अन्तिम सम्वाद नहि थिक। नाटककार ओकरा बाद सासु-पुतहु अर्थात् घरक स्त्री लोकनिक अपन आपसी सौमनस्य, सहिष्णुता सँ एक समानान्तर सकारात्मक प्रभाव सृजित केने छथि। एहि सँ रमाकान्त द्वारा बेटाक आयोजनकें भण्डूल क' विजयी भाव सँ पड़ा जेबाक कथ्य-प्रभाव कम भेल अछि। जँ बूढ़ाक सम्वाद नाटकक अन्तिम सम्वाद रहि जइतय त' उदयकान्त स्वार्थी मानल जइतथि, दोषी मानल जइतथि। नाटकमे रमाकान्तक सम्वाद अछि, 'पहिल साँझ, दोसर साँझ... अन्हार राति। जा धरि ई राति रहत, स्वार्थक चमगुदड़ी फड़फड़ाइत रहत। चकभाउर दैत रहत। (झटका मारि झोड़ी लैत) फल्लां चललाह।' ई नाटकक प्रभावकें एकभगाह क' दितय। से स्वाभाविक रूप सँ नकारात्मक होइत।

आधुनिक मैथिली नाटकक एहि सय वर्षक इतिहासमे वस्तुतः नाटकक विकास त' 1960क पश्चाते भेल अछि। से विषय, रूप विधान, टेकनिक ओ परिणाम सभ दृष्टियें भेल अछि। एहि विकासमे कोलकाता, पटना, बोकारो, जमशेदपुरक संग मधुबनी ओ जनकपुर, बेगूसरायक सार्थक योगदान रहल अछि। जहाँ धरि नाटकक कथ्य ओ तदनुरुप शिल्पक विकासक प्रश्न अछि सुधांशु 'शेखर' चौधरीक नाटक 'भफाइत चाहक जिनगी (1974), लेटाइत आँचर (1975), पहिल साँझ (1982) ओ लगक दूरी (1987)क महत्व नाट्य शिल्पक नव प्रयोग ओकर अनुरूप कथा ल' क' अछि। वस्तुतः शेखरजी ओहि कालक रचनाकार छथि जकर मानसिकता शिल्प, नव टेकनिककें ल' क' बेसी चिन्ताकुल रहल अछि। से सभ विधामे। किछु नव करबाक लेल उद्यत। तैं सुधाशु 'शेखर' चौधरी अपन खास नाट्य-शिल्पक अनुसंधानमे एक सेट ओ एक कालखण्डक नव नाट्य-प्रयोग मैथिलीमे अनलनि। एहि प्रयोगक ओ प्रवर्त्तक भ' गेला। हुनकर नाटकक सम्बन्धमे देवशंकर नवीनक टिप्पणी माकूल अछि, 'वस्तुतः जतबा काल प्रेक्षक हिनकर नाटककें भोगैए ततबहि कालक घटना पूर्ण कौशल सँ हिनका नाटकमे चित्रित रहैत अछि-से हिनकर नाट्य-शिल्प आ कथा-विन्यासक

अतिरिक्त गुण थिक।' मुदा 'भफाइत चाहक जिनगी' ओ 'पहिल साँझ'क कथा सन 'लेटाइत आँचर' ओ 'लगक दूरी' कथा नहि भ' सकल अछि। 'लेटाइत आँचर' मे दहेजक मारल परित्यक्ता स्त्रीक व्यथाकें बाप ओ तीनू भाइक क्रिया-कलाप, सोच ओ विचार द्वारा तीव्र नहि कयल जा सकल। तैं अभीष्टक प्रतिकूल प्रभाव क्षीण भ' गेल अछि। 'लगक दूरी' मे एक वृद्ध पारिवारिक व्यक्तिक व्यथा-कथा पर नामी साहित्यकारक सुख-दुख हावी भ' गेल अछि। तैं नाटक अपेक्षित प्रभाव नहि छोड़ि पबैत अछि। मुदा ई बात पढ़ला पर लगैत अछि। रंगमंच पर प्रदर्शन देखला पर प्रभावक सम्बन्धमे विचार परिवर्त्तन सम्भव थिक। मुदा से अभिनेता ओ निर्देशकक योगदानसँ होयत। सुधांशु 'शेखर' चौधरी आधुनिक नाटकक मूल प्रवृत्ति प्रवाहकें मानैत छथि। अपन नाटकमे सभ सँ विकसित नाट्य-शिल्प 'पहिल साँझ' कें कहैत छथि। एक कालखण्डी नाट्य-प्रयोगक जे सभ ओरिआओन भ' सकैत अछि से सभ ओहिमे अछि। शेखरजी अपन चारू नाटकमे एके सेट पर, डेढ़-दू घण्टाक कार्य-व्यापार सँ घटनाक अव्याहत प्रवाह सँ हाँड़ीमे रन्हाइत एके दानाकें पीचि क' सम्पूर्ण हाँड़ीक भातक सम्बन्धमे अर्थात् जीवनक सम्बन्धमे जे बात कहलनि अछि से हुनक जीवन-दृष्टि पर आधारित अछि। ई जीवन-दृष्टि समाज सँ बेसी व्यक्तिकें सत्ता देबाक जीवन-दृष्टि थिक। ओ नव हाँड़ी अनलनि, आगि पजारबाक उपकरण बदललनि मुदा ओहिमे नव चाउरक भात नहि रान्हि सकला। नव चाउर सँ हमर तात्पर्य जीवनकें समाज-सापेक्ष दृष्टिसँ देखैत अन्तर्वस्तुक चयन अछि। मुदा, एतबा धरि अवश्य जे रंगकर्मक प्रति निष्ठा, रंगमंच सँ दीर्घ सम्बद्धताक कारणे ओ अपन नाटकमे एहन परिवेशक सृजन क' नाट्य-प्रेक्षककें सामाजिक-समस्या पर सोचबा-विचारबाक लेल विवश अवश्य करैत छथि। सुधांशु 'शेखर' चौधरीक नाट्य-शिल्पक ई कमाल देखबा जोगर अछि। ई कमाल हुनका समकालीन नाटककार सभ सँ एकदम फराक सिद्ध क' दैत अछि।

आधुनिक मैथिली नाटक, चेतना समिति, नवम्बर-2006

■

कविवर ओ काशी

उन्नैस सए अरसठि-उनहत्तरिक बात थिक। किशोरावस्थामे प्रवेश क' गेल रही। कविता लिख' लागल छलहुँ। मैथिली लेल एक रोमानी भावुकता जागि गेल छल आ क्रमश: ओकर जड़ि मजगूत भ' रहल छल। बच्चे सँ मैथिल छात्र संघ, काशीक कार्यक्रम सभमे मैथिलं, मिथिला आ मैथिली शब्द सुन' लागल रही। एना बुझा रहल छल जेना प्रवासी लोक सभ अपन भाखा, धरती लेल बेचैन भ' रहल होथि। मोन मे तैं भाखा पहिने आएल। पोखरि, गाछी-कलम, खेत-खरिहान, माटिक मोह तकर बाद। साहित्य सभ सँ अन्त मे। साहित्य आएल तखन मैथिल छात्र संघक मंच संतुष्ट नहि क' पाबए। आंतरिक विवाद मे पड़ि तहिया संघक संगठन सेहो किछु कमजोर पड़ि गेल रहए। ओही समय मे अपन तेज-तर्रार, भाषणकलामे निपुण मित्र काञ्चीनाथजीक संग एक साहित्यिक संस्था 'सम्प्रति' प्रारम्भ करबाक निआर केने रही। 'सम्प्रति' क उद्‌घाटन समारोहक अध्यक्षता लेल अनुरोध करबाक हेतु हम सभ गेल रही विश्वनाथ गली मे कविवर सीताराम झाक निवासस्थान पर। बेस वृद्ध भ' गेल छला कविवर। दुखिताह सेहो रहथि। मुदा हमरालोकनिक अनुरोध मनोयोग सँ सुनि हुनक बृद्ध मुखमण्डल पर जे आभा पसरल रहय, आँखिमे जे ज्योति चमकल से आइयो ओहिना मोन अछि। 'सम्प्रति' क उद्‌घाटन मे 'सम्प्रति' शब्दक व्याख्या करैत नवतुरियाक प्रति जे आस्था ओ विश्वास व्यक्त केने छला कविवर से हमरालोकनिक हृदयमे अमूल्य धरोहर बनि ओहिना सुरक्षित अछि। कविवरक प्रेरक पंक्ति सभ आइ धरि सम्बलक काज केलक अछि। यथार्थक कठोर रस्ता मे किशोरावस्थाक ओ रोमानी भावुकता त' आब कर्पूर भ' गेल मुदा कविवरक शब्द दीप बनि क' अवश्य हृदयमे जरि रहल अछि।

कविवर सीताराम झाक दुब्बर-पातर काया, वृद्ध जर्जर शरीर, गोर दपदपाइत सन मुखमण्डल, मैथिली, मिथिलाक प्रति गौरवक अनुभूति सँ भरल संघर्षक आह्वान आइयो निराशाक अन्धकारमे आशाक ज्योति जगबैत रहैए। मैथिल छात्र संघक विभिन्न आयोजनमे पूर्वहिं सँ हम सभ कविवरक उपस्थिति सँ अनुप्राणित-प्रोत्साहित होइत रहलहुँ। साहित्य एवं मैथिलीक प्रति अनुरागक जड़िमे काशी आ कविवरक खाद-बीज कदाचित बाल्यावस्थहिं मे पड़ि गेल हो से सम्भव। साते बरसक अवस्थामे अपन पूज्य पिता स्व० उमापति झाक संग काशी गेल रही असगरे पढ़बाक लेल। ओना ओहि सँ पहिनहुँ हम सभ सपरिवार काशीए मे रहैत छलहुँ। हमर पिता काशीक राममन्दिर बाँसफाटक मे व्यवस्थापक पद पर छला। मुदा 1959 मे अपन स्वनामधन्य अग्रज सुशील बाबू (आब स्वर्गीय) क महाराज लक्ष्मीश्वर सिंह महाविद्यालय, सरिसव पाही मे प्राध्यापक नियुक्त भेलाक बाद सभ गामे रहय लागल रही। मात्र हमर पिता काशी रहथि। गाम मे माएक आंचरिक छाहरि तर पढ़बा-लिखबा मे कोताही कर' लागल रहियैक त' माइयेक अनुरोध पर पिता काशी लेने चल गेला। माइक ममता आ पारिवारिक वातावरणक भूखल हम तैं छात्र संघक क्रियाकलाप मे नेनहिं सँ जुटि गेल रही। छात्रसंघक सभ कार्यक्रम राममन्दिर पर होइत छल। संघक वरिष्ठ सदस्य सभक सान्निध्यमे हमरा सार्वजनिक जीवनक संस्कार पड़ल। परिवारक आयाम बढ़ल। एक वृहत्तर परिवार सँ सम्बद्ध भय गेल रही हम सभ। सरस्वती पूजाक अवसर पर वसन्तोत्सवक आयोजन हुअए। भरि बरख वाद-विवाद प्रतियोगिता आ विभिन्न सांस्कृतिक अनुष्ठान चलय। कोनो सांस्कृतिक आयोजनमे कविवरक उपस्थिति लगभग निश्चित रहैत छल। अपन कोनो पौत्र कें संग क' ओ आबि जाइत छला। हुनकर सहज, स्नेहिल व्यवहार एक विशिष्ट अन्दाजमे बात कहबाक ढंग कहिया, कोना हमरा सभके आकर्षित क' लेलक से मोन नहि पड़ैए। मुदा एतबा मोन पड़ैए जे कविवर के देखब आ सुनब नीक लाग' लागल छल। कोनो-कोनो विषय पर शास्त्रार्थ जकाँ भ' जाइ। जोर-जोर सँ हाथ हिला-हिला कविवर के बजैत देखि हम सभ नेना मे प्रसन्न भेल करी। बात नहि बुझियैक। मुदा कविवरक विशिष्टताक बोध अवश्य हुअए। सभ बातमे कविवरक जेना

अपन खास मान्यता रहनि। अनेक बेर देखियनि कविवरकें काशीक विद्वतजन सँ तर्क करैत, पारम्परिक मान्यता सभकें कटैत। विशिष्ट एवं नवचिन्तन के स्थापित करैत। एहि क्रममे हुनकर स्वर उच्च भ' कए उत्तेजनापूर्ण भ' जाइत रहय। वाल्यावस्था सँ किशोरावस्था धरिक यात्रामे एक वृद्ध महाकविक ई रूप, विद्रोही सन तेवर हमर सुकुमार मोन पर अमिट छाप छोड़ि गेल।

काशी मैथिलीक अनेक ख्यातनामा साहित्यकार, विद्वानक शिक्षा आ कर्मभूमि रहलए। खासक' कविवर सीताराम झा ओ महाकवि यात्री, साहित्यकार डॉ॰ कान्चीनाथ झा 'किरण' क संग काशीनाम नीक जेकाँ जुड़ल अछि।

काशी चिरविद्रोही बाबा भोलेनाथक नगरी थिक। लगैए जेना काशीक माटिए मे विद्रोहक बीज अछि। संघर्षक खाद अछि। मिथिला-मैथिलीक संस्कार काशीक विद्रोह एवं संघर्षक खाद-बीज सँ पोषित-पल्लवित भ' बनैत अछि ओत'। कविवर आ किरणक प्रगतिशीलता आ उग्रभाखा प्रेमक समन्वय कदाचित करैत अछि काशी। वर्तमान मे मैथिली काव्यधाराक दू अमिट, लोकप्रिय हस्ताक्षर कविवर आ किरण के जोड़बाक श्रेय काशी के प्राप्त छैक। दुनू महाकवि एके परम्पराक दू कड़ी-लड़ी छथि। दुनू महाकविक काव्य चिन्तन वर्तमान मैथिली काव्यक नव प्रतिमान थिक। जकर विस्तार महाकवि यात्रीक काव्य मे भेटैत अछि। (इहो एकटा संयोगेक बात अछि जे नवगीतक अप्रतिम हस्ताक्षर बुद्धिनाथ मिश्रक साज-श्रृंगार सेहो काशिए मे भेल छल। कवि आ आलोचक भीमनाथ झाक नेनपन काशीए मे बितलनि।) ई काशी जे हमरा वा अन्य कोनो मैथिल बच्चा कें बोल दैए ओहिमे कविवर सीताराम झा आ काञ्चीनाथ झा 'किरण' क प्रगतिशील चेतना आ संघर्षक स्वर, आशा और आस्थाक विश्वास, भाखा प्रेमक प्रबल उच्छ्वास मिलल रहैए तँ से कोनो आश्चर्यक बात नहि। आवश्यकता अछि त' मात्र एहि धरोहर के, एहि परम्परा के, एहि चेतना के आगू और आगू बढ़ेबाक।

नमन निकुञ्ज, पोथी, 1992 ई॰

■

काञ्चीनाथ झा 'किरण'क रचना मे जीवन-मूल्य

काञ्चीनाथ झा 'किरण' सय वर्षक भ' गेला। 2006 हुनक जन्मशती वर्ष थिक। बीसम शताब्दीक पहिले दशक मे 01 दिसम्बर 1906 कें हुनकर जन्म भेल छलनि। ई वर्ष समाजक कतेको लोकक जन्मशती वर्ष हैत। मुदा कते लोक कें समाज एना मोन पाड़ि रहल अछि जेना किरणजीकें मोन पाड़ि रहल अछि। समाज यदि आइ किरणकें मोन पाड़ि रहल अछि तँ एहि कारणे जे ओ मनुखताक घोषित पक्षधर रहथि। हुनकर लक्ष्य मनुक्ख कें आर बढ़ियाँ बनायब छल। एहि लक्ष्य लेल ओ एहन काज सभ केलनि जाहि सँ ओ स्वयं सेहो बढ़ियाँ मनुक्ख बनि गेला। ओ निरन्तर अपन व्यक्तित्व कें विकसित केलनि। अपन परिवारक आर्थिक आधार कें मजबूत केलनि। मुदा ई सभ किछु केलनि लोभ-लालच सँ मुक्त निरन्तर परिश्रमसँ अपन ज्ञान ओ व्यवहार कें बढ़बैत। अपन रचनामे मनुक्ख विरोधी बंधन ओ जड़ता पर प्रहार करैत। मनुखताक स्थापना करैत।

किरणजी अपन रचना-कर्म सँ सभ प्रकारक दासताक विरोध केलनि। से दासता मनुक्खक हो वा भगवानेक किएक ने हो। किरणजीक एक कविता अछि जे ओ देशक स्वतंत्रता सँ पूर्व लिखने रहथि,

कर्म्म बल सँ एक कुल्ली, ब्रिटिश केर साम्राज्य साजल
ताही ब्रिटिशक दास नृपतिक, हम रहै छी पाछु लागल
धिकधिगति ओहि बुधिकें जे लोक कें कायर बनाबै
त्यागि उद्यम, पेट हेतुक, भीख खुस-आमद सिखाबै।

एहि कविता मे खुस-आमद जँ ठकुरसुहाती, दरबारीपना थिक तँ घूसखोरी सेहो थिक। अहाँकें प्रसन्न करबाक लेल जँ कियो आमद करबैत

अछि अथवा अहीं ककरो प्रसन्न क' आमदक जोगाड़ करैत छी त' से दुनू एक्के बात थिक। एक्के सिक्काक दू भाग। दुनू बात मनुक्खताक विरोधी बात थिक। दुनू दासता थिक। ई दासता लोक कें कायर सेहो बनबैत अछि। सैह बात किरणजी कहैत छथि। जे बात अपन रचनामे कहैत छथि सैह ओ जीवनमे सेहो बरतै छथि। हुनकर कथनी ओ करनीमे कोनो भेद नहि अछि। मैथिलीक संस्थावद्ध मठाधीशलोकनिक ओ कहियो खुशामद नहि केलनि फलस्वरूप हुनकर कोनो पोथी साहित्य अकादेमी वा मैथिली अकादेमी सँ प्रकाशित नहि भेल।

समाजक बहुतो लोकक जँ ओ किरणजी रहथि तँ बहुतोक नत्थू बाबू आ नत्थू भाइ सेहो रहथि। नहि केवल मैथिलीक प्रबुद्ध समाज, जन-मजदूर आ किसान सभक ग्रामीण समाज सेहो हुनका अपन बूझैत रहय। ओ ओकरा संग जहिना चास-बास, खेत-पथार, घर छाड़ब, टाट बान्हबाक गप्प करथि तहिना स्वाधीनताक उद्‌घोष कयनिहार विद्यापतिक राधाकृष्णक गप्प सेहो करथि। सभक पाछू हुनकर तर्क रहनि आ से तर्क एके माटिक उपज रहनि। ओहिमे जेना जन-मजदूर आ कृषक समाज हुनका अपन हित-चिन्तक मानय तेना साहित्यिक लोक सेहो अपन हित-चिन्तक मानय। अपन लोक बूझय।

किरणजी अपन कविता सभमे, कथा सभमे कहैत छथि जे धर्म, जाति, कुल आदि सँ मनुक्खक मान नहि बढ़ैत छैक। मान बढ़ैत छैक गुन सँ,

पोसाक सभ थिक धर्म
ऐ मे छै ने किछुओ मर्म
बौद्ध ज्यू क्रिस्तान
हिन्दू सनातन आर्य ओ इसलाम
सभ थिक एक समान।
एक रंगक सोनित-मासु पर रंग-विरंगक खोल।
खोलेक रंग लेल दुनिया मे मचय अनघोल।।
जाति की? कुल की? गुनक करु मान।
सितुआक पूत मोती हो रतन समान।।

मैथिली साहित्यमे मनुक्खक गुन कें मान देबाक बात, मान्यता देबाक बात लोकधाराक उपजा थिक। ई किरणजीक लोकोन्मुखी दृष्टि कें स्पष्ट करैत अछि। किरणजीक लोकोन्मुखी चेतना कें फड़िछयबाक लेल हुनकर सामाजिक अस्तित्व कें ध्यानमे राखब आवश्यक अछि। हुनकर चेतना के बुझबाक लेल मैथिलीक प्रसिद्ध आलोचक कुलानन्द मिश्रक कथन कें देखल जा सकैत अछि, 'किरणक जन्म एकटा विपन्न परिवारमे भेल रहनि। जकर संस्कार त' कुलीन लोकनिक रहैक मुदा जकरा लग संसाधनक अभाव रहैक। एहन सामाजिक ओ आर्थिक स्थितिक परिवारमे उत्पन्न 'किरण'क लेल प्रतिकूल स्थितिसँ बहरयबाक लेल संघर्ष करब तथा ओहेन स्थितिक सर्जक लोकनिक कर्म ओ कथनक प्रति मोनमे निंदाक भाव राखब एकटा अनिवार्यता भ' गेल रहनि। यथार्थमे 'किरण' ओहेन सभ मान्यता तथा मूल्यक प्रति विद्रोही भ' गेल रहथि जे मनुक्खक बीचमे अन्तर करैत अछि, जे समाजक छोट-पैघ अवधारणा कें कालप्रथित न्याय मानैत अछि, जे आनक शोषण क' अपन सुख-सुविधाक जोगाड़ उचित बूझैत अछि, जे भाग्यक पैरबी क' श्रमक उपहास करैत अछि। किरणक मोनक ई संघर्ष तथा विद्रोह हुनक अपन परिवेशक उपजा रहनि। मुदा ओ समस्त राष्ट्र आ विश्वक परिवेश संग तकर साधारणीकरण कयलनि तथा समस्त शोषित-पीड़ित मानवताक पक्षमे बाजब अपन कर्तव्य बुझलनि। हुनका लेल पैघ सँ पैघ मान्यता निर्रथक भ' गेल अछि यदि ओ सामान्य जनक हितक विरुद्ध जाइत अछि।' स्पष्ट अछि जे किरणजीक चेतना अपन परिवेशक उपजा रहनि। हुनक परिवेश सामान्य लोकक परिवेश छल। हुनक चेतना सामान्यजनक चेतना रहनि। ओ अभिजन नहि रहथि। अभिजन मे जातीय आ धार्मिक कट्टरता होइत छैक। ओ रुढ़िवादी होइत अछि। मुदा सामान्यजन उदार होइत अछि। किरणजीक चेतनाक निर्माणमे सामान्यजनक ओहि लोकवादी धाराक हाथ अछि जे समाजक हितमे आस्था रखैत अछि। क्रियाशील ओ श्रम पर आधारित जीवनक अनुभव ओकरा लेल शास्त्रवचन सँ बेसी महत्वक होइत छैक। स्वाभाविक अछि जे ई धारा परिवर्त्तन करैत अछि। ई परिवर्त्तन मनुक्खक आगू बढ़बामे, ओकर बेहतरीमे निहित छैक। अभिजन

रूढ़िवादी धारा सामान्यजनक लोकवादी धाराक उपलब्धि कें नकारि देबाक अथवा कौशल सँ झाँपि देबाक प्रयत्न लगातार करैत रहैत अछि। किरणजीक रचनामे तें अभिजन मानसिकता पर कठोर प्रहार भेटैत अछि तँ सामाजक शोषित-पीड़ितक प्रति सहज अनुराग सेहो। एहि सहज अनुरागसँ ओ सामान्य जनक पक्षमे ओकरे भाषामे लगातार बजैत रहल छथि। किरणजीक भीतर समाजक शोषित-पीड़ितक प्रति अनुराग सामान्यजनक लोकवादी धाराक चेतने सँ उत्पन्न भेल। हुनकर रचनामे जे जीवन-मूल्य भेटैत अछि से संघर्षक बाटें बहराइत मनुक्ख कें आर नीक, आर बढ़ियाँ मनुक्ख बनबाक जीवन-मूल्य थिक।

किरणजीक मिथिला ओ मैथिलीक काज कें एही दृष्टियें बूझल जा सकैत अछि। किरणजी कविता, कथा, निबन्ध, नाटक, एकांकी सभ विधामे रचना केलनि। एहि संग मैथिलीक मान्यता लेल, समाजक विकास लेल बहुतो लड़ाइ लड़लनि। किरणजीक मानब अछि जे मैथिली, मिथिलाक माटि-पानिक उपजा थिक। एकर प्रकृति संस्कृत सँ भिन्न अछि। एहि भाषामे काव्य रचनाक अपन परम्परा छैक। एहि परम्पराक जनक निरक्षर लोक रहथि। लोक-काव्य एकर ज्वलन्त दृष्टान्त थिक। किरणजी मिथिलाक लोकधाराक इतिहास कें उजागर कर' चाहैत छला। ओहि पर पड़ल खढ़-पात, गदौंस कें झारि-झूरि ओकरा चमकाब' चाहैत छला। एहि क्रममे ओ मानैत छला जे रचना करब आ समाजमे रचनाक ग्रहणशीलता बढ़ैबा लेल काज करब दुनू महत्वपूर्ण बात थिक। किरणजी ई दुनू काज केलनि। मैथिलीक मान्यता लेल संघर्ष केलनि। विद्यापति गोष्ठीक माध्यम सँ लोकक सङोर केलनि। समाज कें मैथिली भाषा, साहित्य ओ ओकर लोकपरम्परा सँ परिचिति-जागृति लेल निष्ठाक संग उद्यम केलनि। तर्क ओ कुतर्क, सहज ओ आडम्बरमे जीबैबला समाज मैथिली भाषा-साहित्यक प्रति ग्रहणशील-सम्वेदनशील भेल। जागृति अयलैक।

किरणजी परिवारक भरण-पोषण लेल नोकरी करैत रहला तँ समाजक भरण-पोषण लेल साहित्य-सृजन केलनि, मैथिलीक लड़ाइ लड़लनि। समाजक विकास संग अपन व्यक्तित्वक विकास कें जोड़ि क' देखब किरणजीक जीवन-दृष्टिक महत्वपूर्ण आयाम थिक। उनसठि वर्षक अवस्थामे

किरणजी एम० ए० केलनि त' चौसठि वर्षक अवस्थामे पी० एच० डी०। एक वैद्यक पेशा सँ जीवन शुरु केनिहार विश्वविद्यालयक प्रोफेसर सेहो भेला। हुनकर जीवन ओ रचना कें फूट-फूट नहि देखल जा सकैत अछि। समाजमे जे कियो हुनका जनैत छल से हुनका हुनकर सम्पूर्ण व्यक्तित्व सँ जनैत छल। कोनो साहित्य प्रेमी कें बूझल छलैक जे किरणजी घरक चाड़ छारब सेहो जनैत छथि। तहिना हुनकर गामक जन-मजदूर, किसान के इहो बूझल रहैक जे ओ कविता करैत छथि। किरणक प्रगतिशीलता हुनक जीवन-शैली, विचार शैली आ किरण साहित्यमे समान रूप सँ रूपायित भेल अछि।

कहल जाइत अछि जे कोनो रचना अपना भीतर घुलल-मिलल विचार कें व्यक्त करैत अछि। रचनामे घुलल-मिलल विचार मनुक्खक लेल जतबा उपयोगी अछि ततबे ओकर मूल्य सेहो अछि। रचनामे विचार वस्तुपरक होइत अछि आ सौन्दर्यबोधीय सेहो। वस्तुपरक आ सौन्दर्यबोधीय दुनू तत्व मीलि क' जँ रचनामे आयल विचार कें मनुखताक पक्षधर नहि बनबैत अछि तँ ओकर मूल्य नहि छैक। किरणजीक रचनामे जे जीवन मूल्य भेटैत अछि से मनुक्ख कें आर उच्चतर स्तर पर ल' जेबाक जीवन-मूल्य सेहो थिक। ओहेन मनुक्ख जे कहि सकय,

नहि चाहै छी सौख्य सान सम्पत्ति ने प्रभुता
नहि वैभव-वलजात ख्याति कीर्ति सम्मान महत्ता
उचित सत्य कहबाक चेतना साहस बनल रहय आजीवन
नहि ताकी यश-अपयश
स्वाभिमान रक्षार्थ सन्नद्ध रहय मन सदिखन
पबितहुँ कष्ट अपार बौएतहुँ रन बन
अत्याचार अन्यायक संग जंग मे बीतय जीवन
रूढ़ि अन्धविश्वास केर कहाबी कट्टर दुश्मन।।

मैथिली अकादमी पत्रिका, मार्च-2006

■

उपन्यासकार यात्री

महाकवि यात्रीक मैथिलीमे तीनटा उपन्यास अछि। पहिल पारो जे 1946मे छपल। दोसर नवतुरिया जे 1954 मे प्रकाशित भेल। तेसर बलचनमा जे 1967 मे छपल। बलचनमा हिन्दी मे 1954 मे प्रकाशित भ' प्रसिद्ध भ' गेल। तैं ई कहल जाइत अछि जे ई उपन्यास मूलतः हिन्दी मे लिखल गेल। मुदा आलोचक मोहन भारद्वाज अपन पोथी 'बलचनमा : पृष्ठभूमि आ प्रस्थान' मे एहि बातक खण्डन करैत बलचनमाकें मूलतः मैथिली मे लिखल उपन्यास मानलनि अछि। प्रकाशन मुदा मैथिली मे हिन्दीक बाद भेल।

'पारो' आ 'नवतुरिया' अनमेल विवाह सन भीषण समस्याक औपन्यासिक प्रस्तुति थिक। पारोमे पारोक मनोरथ सफल नहि भ' सकलैक। ओकर विवाह पचास बरखक बर सँ करा देल गेलैक। ओ अपन बर चौधरीकें कहियो मोन सँ स्वीकार नहि केलक। ओकर कहब रहैक जे, 'जोर-जबर्दस्ती सँ ककरो देहेटा पर क्यो अधिकार क' सकैत छैक। मोन पर किन्नहुँ नहि।' पारोक आशा ओ मनोरथ विफल भ' गेलैक मुदा उपन्यास ओहि अन्यायी व्यवस्था दिस ठोस संकेत क' गेल जे व्यवस्था पारो सन सैकड़ो मैथिल किशोरीक कष्ट ओ विफल मनोरथक मूल कारण छल। वस्तुतः पारोक अपन पसिन्नक पुरुष सँ विवाह करबाक स्वाभाविक मनोरथ समस्त विकृत परम्परा, प्रथा, रीति-रेवाज, कर्मकाण्ड पर प्रश्न-चिन्ह ठाढ़ क' दैत अछि। ओहि पर निस्सन चोट करैत अछि। पारो अपन पसिन्न ओ मनोरथक आगू ककरो सँ, कथू सँ समझौता नहि क' पबैत अछि। ओकरा अपन भविष्य बूझल छलैक। असलमे बन्धन सँ मुक्तिक अकुण्ठ आकांक्षा पारोमे भरि

गेलैक। तें ओ आत्महत्या नहि क' लैत अछि। कतहु सँ कायर अथवा कमजोर नहि छल ओ। मैथिल ललनाक एहन स्वतंत्रचेता व्यक्तित्व एहि सँ पूर्व मैथिली उपन्यासमे नहि आयल छल।

पारो सँ पूर्व जनार्दन झा 'जनसीदन'क 'निर्दयी सासु', 'पुनर्विवाह', जीवछ मिश्रक 'रामेश्वर', कुमार गंगानन्द सिंहक 'मनुक्खक मोल', रास बिहारी लाल दासक 'सुमति', पुण्यानन्द झाक 'मिथिला दर्पण', कांचीनाथ झा 'किरण'क 'चन्द्रग्रहण', हरिमोहन झाक 'कन्यादान' ओ 'द्विरागमन', गंगापति सिंहक 'सुशीला', योगानन्द झाक 'भलमानुस', आदि उपन्यास प्रकाशित भेल रहय। एहिमे मैथिल ब्राह्मणक वैवाहिक समस्या पर लिखल उपन्यासमे मनुष्यक मोल, मिथिला दर्पण, कन्यादान, सुशीला, भलमानुस प्रमुख अछि। पारोक बाद आयल चतुरानन मिश्रके 'कला' सेहो एही विषय पर अछि। कन्याक बाप टाका गनबैत छला। तकर कुपरिणामक भीषण चित्रण कुमार गंगानन्द सिंहक 'मनुष्यक मोल' (1924) मे भेल अछि। तँ स्त्री शिक्षाक अभावक संग अंग्रेजिया बरके ठकि क' विवाहक दुष्परिणाम कन्यादान (1933) क बुच्चीदाइ के भोग' पड़ल। वृद्धक संग अल्पवयस्क कन्याक विवाहक कारणे वैधव्यक दुख आ कुलक्षणी, अलच्छीक उपाधिक संग नैहर-सासुरक अत्याचार सँ जतय सुशीला (1943) अपन देहमे आगि लगाक' मरि गेल ओतहि पति द्वारा दोसर विवाह क' लेबाक शोक सँ 'भलमानुस' (1944) क निर्मला सेहो रोग सँ मरि गेल। ओकर पति जगदीश पड़ाक' लड़ाइमे भर्ती भ' गेला। कला (1948) गाम सँ पड़ाक' काशी चल गेल। ओत' दुष्टा ओ कुटनी विधवा सभ सँ बाँचि एक प्रगतिशील डाक्टर कलानन्द सँ विवाहक' विधवा सभक उद्धारमे लागल। काशीक ई विधवा सभ एहि कुरीतिक दुष्परिणाम भोगि रहल छली। मुदा एहि सभ उपन्यासमे भलमानुसकें छोड़ि सामाजिक समस्या सँ उत्पन्न लेखकक सदिच्छा, सुधारक आकांक्षा उपरे-उपर स्थितिक चित्रण धरि सीमित रहि गेल अछि। लगैत अछि जेना कुप्रथा पर केवल चोट करबे लेखकक अभीष्ट होइन। घटनाक प्रधानताक कारणे ने चरित्र पुष्ट भ' सकल आ ने ओकर कोनो व्यक्तित्वे ठाढ़ भ' सकलै। स्त्रीक प्रति लेखकक

सम्वेदना सहानुभूतिक अछैतो स्त्रीक अपन कोनो व्यक्तित्व नहि ठाढ़ भ' सकल। कोनो प्रकारक प्रतिरोधक स्वर तँ भलमानुसोमे नहि फूटि सकल। वस्तुत: एहि सभ उपन्यासमे पात्र सभ परिस्थितिक दास बनिक' रहि गेल अछि। कने उकस-पाकसक बाद सभ व्यवस्थाक जाँत तर पिसा जाइत अछि। 'कला' मे साहस देखाओल गेल अछि मुदा से लेखकक जोश-खरोश थिक। पात्रक गढ़निमे से समाहित नहि अछि। तें उपन्यास सभ मे मैथिल कन्याक व्यक्तित्वक कोनो संस्थापन सम्भव नहि भेल अछि। तत्कालीन उपन्यास सभमे मैथिल कन्याक व्यक्तित्वक कोनो संस्थापनक ई अभाव पारोमे आबिक' खतम भ' जाइत अछि। पार्वती अर्थात् पारोक वैचारिक दृढ़ताक चरित्रांकनक संग बिरजूक माध्यम सँ कथा कहबाक शिल्पक नव प्रयोग सेहो ई सम्भव कयलक अछि। ई स्वाभाविक थिक जे बिना आन्तरिक वैचारिक दृढ़ताक यदि ढाँचा तैयार कयल जायत तँ व्यक्ति मूर्तिमान नहि भ' सकत। बिना हड्डीक मनुक्ख केहेन होयत? एकरे संग पारोमे यात्री जें कि समाज, व्यवस्था आ अन्यायी कुप्रथाक प्रबल घेराबन्दी सँ आगू बढ़ि मानवीय चेतनाक संग चरित्र आ कथाक ढाँचा तैयार करैत छथि तें पारो के ओकर व्यक्तित्व देबामे सफल भ' सकला अछि। मैथिली उपन्यासक सन्दर्भमे एकटा बात ध्यान देबाक योग्य अछि। कन्यादान मे लजायल, कतुआयल बुच्चीदाइक चुप्पी पारोमे आबिक' टूटि गेल अछि। पारो मुखर होइत अछि। बाज' भुक' लगैत अछि। एहि सँ ओकर व्यक्तित्व बनैत छैक।

एहि क्रममे ई विचारबाक थिक जे पात्रकें पहिने मनुक्ख होयब आवश्यक अछि। हाड़-मांसक मनुक्ख। जकरा अपन सख-सेहन्ता, मनोरथ होइ। प्रेम-घृणा होइ। एहने मनुक्ख रूढ़ि-भंजक भ' सकैत अछि। अहितकर परम्परा आ विश्वासकें नकारि सकैत अछि। अपन नैतिकताक परम्परा स्वयं गढ़ि सकैत अछि। स्वाभाविक अछि जे एहन मनुक्खक क्रियाकलाप नैतिकताक बनल-बनौल लीक पर नहि चलत तें ओकर विरोध सेहो स्वाभाविक। उपन्यासमे आयल एहने आधुनिक मनुक्ख सभ भाषा-साहित्यमे हड़बिरड़ो मचौलक। रूढ़िवादी लोकक कोप-भाजन बनल। मैथिलीमे सेहो

विरोधक मूलमे यैह कारण छल, जकरा ममियौत-पिसियौत, मामी-भागिनक यौन आकर्षणक नामपर चर्चित-चर्वित कयल गेल। ई ओहिकालक पोंगापंथी मानसिकताक द्योतक रहय। आइ जखन पारो पढ़ल जाइत अछि तँ ककरो ओहेन प्रतिक्रिया नहि होइत अछि, जे तहिया भेल रहैक। एकरा मैथिल पाठकक मानसिक विकास मानल जा सकैत अछि।

यात्रीक पारो उपन्यासमे नायिका पार्वतीक मनोरथ त' पूर नहि भ' सकलैक मुदा नवतुरियाक विसेसरीक मनोरथ सफल भ' गेलैक। से मुदा सम्भव नहि भ' सकितैक जँ गामक नवतुरिया मण्डल विरोध नहि करितैक। विसेसरी सँ विवाहक लेल ओकर नाना पण्डितजी बृद्ध चतुरा चौधरीकें सभागाछी सँ उठा अनैत छथि। एहि लेल हुनका चौधरीसँ नौ सए टाका भेटल रहनि। चौधरी अपन घोड़ा पर चढ़िक' पन्द्रह बरसक किशोरी सँ विवाह करबाक लेल अबैत छथि। विवाहक सभ इन्तजाम बात कन्यागत घरमें भ' रहल छल। मुदा गामक नवतुरिया सभ एकर विरोध केलक। एहि विरोधमे कन्यागत पण्डितजीक एक बालकक संग विसेसरीक सहयोग सेहो नवतुरिया सभकें भेटलैक। एकटा योजनाबद्ध रूपमे चुपचाप सभटा काज भेल। वृद्ध विख्या चौधरीकें विवाह छोड़ि पड़ाय पड़लनि। संग आयल खवास आ भागिन सेहो पड़ेला। विसेसरीक नाना पण्डितजी सभकें विखिन्न-विखिन्न गारि पढ़ैत रहि गेला। एक बेर नवतुरियाक अगुआ दिगम्बर पर ठेंगा सेहो चलौलनि। गामक मुखिया आ विवाहक अन्य समर्थक सभ नवतुरिया मण्डलक रूखि देखि घसकि गेला। पतनुकान ल' लेलनि। बादमे कन्यागत पण्डितजी चौधरीकें बोल भरोस देबाक लेल खासक' भेटल टाका बचेबाक लेल अगहनमे आनठाम जाक' विवाह करा देबाक आश्वासन देलनि। चौधरी विवाह नहि हेबाक कारणे तिलमिलाइत रहला। ई अफवाह उड़ौलनि जे विवाह त' भ' गेल मुदा दुरागमन अगहनमे होयत। ई चालि ओ एहि कारणे चललनि जे विसेसरीक विवाह आनठाम नहि भ' सकै। नवतुरिया मण्डलक संग विसेसरीक घरक आन सदस्य सभ एहि कुचालि सँ परिचित भ' गेल रहथि। ओ सभ एहि प्रयासमे लागि गेला जे विसेसरीक शीघ्र विवाह भ' जाइक। ओकर नाना पण्डितजी आन-ठाम पूजा-पाठ करेबा

लेल गेल रहथि। नवतुरिया दिगम्बर अपन मित्र वाचस्पतिकें विसेसरी सँ विवाहक लेल तैयार केलनि। वाचस्पति पढ़ल-लिखल, प्रगतिशील सामाजिक कार्यकर्ता रहथि। वाचस्पति आ विसेसरीक विवाह सभक सहमति सँ सम्पन्न भेलैक। उपन्यासक अन्त दुनूक प्रथम मिलनक रातिमे प्रेमालाप सँ होइत अछि। एहि प्रकारें पारोक अगिला कड़ी थिक नवतुरिया।

पारोक जे मनोरथ सफल नहि भ' सकलै से विसेसरीक सफल भ' गेलैक। हमरा जनैत 'पारो' आ 'नवतुरिया' दुनूकें एक संग पढ़िएक' एक सम्पूर्ण चित्र समक्ष अबैत अछि। ई बात हरिमोहन झाक 'कन्यादान' आ 'द्विरागमन' पर सेहो लागू होइत अछि। ओहू दुनू उपन्यासकें एक संग पढ़ब जरूरी थिक। मुदा दुनू उपन्यासकारक दुनू उपन्यासमे बहुत अन्तर अछि। ई अन्तर विभिन्न रूपें अछि। पारो आ नवतुरियामे पात्र ओ चरित्रक नाम सभ बदलि गेल अछि। मुदा कन्यादान आ द्विरागमनमे से बात नहि छैक। ओहिमे वैह बुच्चीदाइ छथि वैह सी॰ सी॰ मिसरा। कन्यादान आ द्विरागमन जत' एके व्यक्ति, एके परिवारक कथाक विस्तार थिक त' पारो आ नवतुरिया व्यक्ति, परिवार नहि, एके समाजक कथाक विस्तार थिक। तें कन्यादान आ द्विरागमनमे जत' व्यक्ति चेतना अछि त' पारो आ नवतुरियामे सामाजिक चेतना। परिणामस्वरूप दुनू उपन्यासकारक अगिला दुनू उपन्यासमे समस्याक समाधान सेहो बदलल अछि। द्विरागमनमे व्यक्तिपरक समाधान अछि त' नवतुरियामे समाजपरक। कन्यादानमे बुच्चीदाइक कोनो मनोरथ अभिव्यक्त नहि भेल अछि। मनोरथ भेटैत अछि त' सी॰ सी॰ मिसरक। अंग्रेजी बजनिहार, अंग्रेजिया चालि-चलन वाली स्त्री चाही। एकदम आधुनिक। आधुनिकताक परिभाषा हुनकर अपन छनि। से कदाचित ओहि समयक वा अजुको नवयुवकक भ' सकैत अछि। एहि मनोरथक समाधान अन्ततः द्विरागमनमे ओ बुच्चीदाइकें छबे मासमे अंग्रेजी बजनिहारि-भुकनिहारि बना स्कर्ट ब्लाउज पहिराक' बैडमिंटन खेलेबाक लूरि सिखाक' करैत छथि। अपन योग्य बुच्चीदाइ कें बना लैत छथि। मुदा पारोमे मनोरथ अभिव्यक्त भेल अछि पार्वतीक। ओकर मनोरथ रहैक जे बिरजूए भैया सन जँ ओकरा बर होइतैक। अर्थात् जकरा देखि ओकरा आकर्षण होइक। जे ओकरा सँ प्रेम

करैत होइ एहन पुरुष। मुदा से मनोरथ पूर नहि भ' सकलै। किएक? समाजक कारणे। समाज जे ओकरा बूढ़, धुत्थुर सँ विवाह करा देलकै। ओ किछु नहि क' सकल। ओकर बिरजूओ भैया किछु नहि क' सकलै। उपन्यासकार यात्रीक चेतनामे सुनगैत ई ताप, आक्रोश, नवतुरिए आबओ आगाँक समाधान तकलक। नवतुरिया मण्डल आगाँ आयल। एहिठाम आबि क' पारोक मनोरथ एक चेतना बनि गेल। सामाजिक चेतना। एही संग पारो चुपचाप बिसेसरीक भीतर सेहो गुबदी मारि क' बैसि गेल। नवतुरिया मण्डलक अवलम्ब पाबि ओकर मनोरथ पूर भ' गेलैक। वस्तुतः उपन्यासकार यात्रीक अभिलाषा नवतुरियामे आबिक' सफल होइत अछि, पूर्ण होइत अछि। मुदा से की उपन्याकार हरिमोहन झाक विषयमे कहल जा सकैत अछि?

'बलचनमा' यात्रीक तेसर उपन्यास थिक। ई उपन्यास कृषक लोकनिक आजादी लेल संघर्ष कें देखबैत अछि। वस्तुतः ई उपन्यास मिथिलामे किसान-आन्दोलनक इतिहास सेहो थिक। किसान-संघर्षक इतिहास। कृषकक समाज, संस्कृति, आर्थिक पराभव, राजनीतिक चेतना सभ एहिमे खूबे जगजियार भ' क' आयल अछि। मुदा से सभ विशेषतः मैथिली समाज आ मैथिली संस्कृतिक सन्दर्भ मे। मिथिलाक सामाजिक ओ सांस्कृतिक इतिहासकें बुझबा लेल, किसानी-सौन्दर्य बोधकें जनबाक लेल यात्रीक 'बलचनमा' पढ़ब जरूरी अछि। ई एहि कारणे जरूरी अछि जे वस्तुतः मिथिलाक समाज-संस्कृति अभिजन-पण्डितक समाज-संस्कृति नहि सामान्यजन-कृषकक समाज संस्कृति थिक। एहि उपन्यासकें बुझबाक-गुनबाक लेल आलोचक मोहन भारद्वाजक पोथी बलचनमा : पृष्ठभूमि आ प्रस्थान खूबे सहायता क' सकैत अछि। पोथीक अन्तमे ओ कहैत छथि बलचनमा वस्तुतः आदर्श पात्र अछि। ओकर जन्म भेल रहैक अठाबन वर्ष पहिने मुदा ओ आइयो प्रासंगिक आ तें महत्वपूर्ण अछि। यात्री कतिआयल किसानकें केन्द्रमे आनि देलनि। किसान मिथिला कि भारतक अस्मिताक रूपमे स्थापित भ' गेल। किन्तु यात्रीक इच्छा केवल ओकर व्यक्तित्व स्थापन धरि सीमित नहि छल। हुनक अभीष्ट रहनि ओहि सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, आ राजनीतिक

कारणकें प्रकाशित करब जे बलचनमा आ किसान विद्रोह कें जन्म देलक। जाधरि ओ कारण सभ रहत ता धरि बलचनमा जनमैत रहत। किसान विद्रोह होइत रहत।

हमरा जनैत मैथिल समाजमे स्त्री आ किसान एखनो समस्याग्रस्त अछिए। समाज आ परिवारमे स्त्रीक स्थिति आ खेत-खरिहानमे किसानक स्थिति बदलैत रहल अछि, मुदा एतेक नहि, एहन नहि बदलल अछि जे सामाजिक विकासकें अपेक्षित गति द' सकय। एकर कारण एखनो मौजूदा समाजक ओ व्यवस्था थिक जे स्त्री आ किसानकें दोयम दर्जाक स्थितिमे रखने अछि। स्त्री, किसानकें हाशिया पर राखि क' समाजक विकास सम्भव नहि थिक। वर्ण वा वर्ग पर आधारित खण्ड-पखण्ड भेल समाजमे स्त्री आ किसान दुनूक पराभव चलिते रहत। एहि प्रकारें सामाजिक विकास लेल वर्ण-वर्ग आधारित व्यवस्था सँ लगातार संघर्ष चलैत रहब अनिवार्य अछि। जा धरि स्त्री आ किसान केन्द्रमे नहि आओत ता धरि व्यवस्था परिवर्तन सम्भव नहि अछि। वस्तुतः उपन्यासकार यात्री अपन उपन्यास सभक माध्यमे एही सामाजिक चेतनाकें जगेबाक रस्ता देखा गेला अछि।

यात्री साहित्यावलोकन, चेतना समिति, जून-2011



जीवन-आस्थाक कथा

मैथिलीक प्रसिद्ध कथाकार मनमोहन झा जहिया कथा लेखन शुरु केलनि तहिया बुच्चीदाइ सभ पढ़'-लिख' लागल रहथि। घरे-आँगनमे रहि चिट्ठी-पतरी कर' लागल रहथि। हिसाब-बाड़ी लीखि लेल करथि। किताब-काँपी बाँचि लेथि। रामायण-महाभारत सँ आगू बढ़ि मैथिलीक कथा-पिहानी पढ़ि लेथि। बंगलाक कथा-उपन्यास पढ़ि जाथि। धिया-पूताक लालन-पालन आ भानस-भातक अतिरिक्त साहित्य पढ़ब हुनका लोकनिक हिस्सक बनैत गेल। भने मनोरंजन लेल एकर शुरुआत भेल मुदा क्रमशः साहित्य जीवनकें सेहो प्रभावित कर' लागल। मैथिलीक साहित्यकार लोकनि समाज मे होइत एहि परिवर्तन सँ अनभिज्ञ नहि छला। ओ लोकनि जनैत रहथि जे मैथिली साहित्यमे आयल समाज-सुधारक अनुगुंज मैथिल ललना धरि पहुँच' लागल अछि। हरिमोहन झाक कन्यादान उपन्यास समाज के हिला-डोला गेल अछि। घर-परिवारमे मैथिलीक पत्र-पत्रिका पहुँच' लागल अछि। आब समाज ई नहि चाहैत अछि जे ओकर धी-सुआसिनक दुर्दशा बुच्चीदाइ सन होइ। बुच्चीदाइ सभक आँखि सेहो पसरि रहल छलनि। क्रमशः जड़ता टूटि रहल छल।

पाँचम दशक अबैत-अबैत साहित्यकार सभ बुच्चीदाइक कथा सँ आगू बढ़ि क' पाठक बुच्चीदाइ पर ध्यान केन्द्रित कर' लगला। मनमोहन झाक समकालीन कथाकार उमानाथ झा 1950 मे अपन कथा-संग्रह रेखा-चित्रमे लिखलनि,'चारि ढाकी कहबाक नहि अछि-एक मौनी मात्र। बुच्चीदाइ लोकनिक समक्ष उपस्थित भेल छी, परन्तु हुनका अनरसाक हिसख, मलपुआ रुचिकर, ऐहबक फड़ ओ बगेया सँ परिचय, बिस्कुट-सएण्डविच-केक नीक लगतैन्ह? के कहय? मएदा, आँटा, घी,

चिनी-ई सभ वस्तु तँ परिचित केवल बनएबाक विधि भिन्न। तें धृष्टता कएल। नीक लगैन्ह तँ आओरो भेटतैन्ह। नहि नीक लगैन्ह तँ दोष सोड़हो आना हमर-केक ओ बिस्कुटक नहि।' उमानाथ झाकें आशंका रहनि जे बुच्चीदाइ सभकें नव वस्तु अर्थात् नव तरहक कथा रुचतनि की नहि, मुदा मनमोहन झाकें एहि तरहक कोनो आशंका नहि रहनि। ओ 1948 मे अपन कथा-संग्रह 'अश्रुकण' ल' क' उपस्थित भेला। बनएबाक विधि हुनको भिन्न छलनि मुदा एतेक भिन्न नहि जे वस्तु अपरिचित लागय। मनमोहन झा पूर्व सँ चल अबैत कथाक शिल्पमे परिवर्तन त' अनलनि परन्तु एतेक नहि जे कथा अनचिन्हार लागय। ओ नव रसज्ञता सँ परिचित भैयो क' पुरना ढाठीकें पूरापूरी नहि छोड़लनि। खाली ओहिमे नवताक समावेश केलनि। ओ नवता जे पश्चिमसँ चलि क' बंगला ओ हिन्दीक माध्यमे भारतीय साहित्यमे प्रवेश केने छल। एही संग हुनका समक्ष मैथिलीक आधुनिक कथाक पच्चीस-तीस बरसक इतिहास सेहो छलनि।

ई ओ समय छल जखन भारतीय साहित्यमे देश-प्रेम ओ स्त्रीक दुर्दशा ओ दुखक प्रति सम्वेदनाक धार तेज हुअ' लागल छल। बंगलाक शरतचन्द्र चट्टोपाध्याय अपन उपन्यास सभक माध्यमे स्त्रीत्वक गौरवक संगे स्त्री-जीवनक जड़ताकें तोड़बाक प्रयत्न क' चुकल छला। प्रेमचन्द्र 'निर्मला' लिखि चुकल रहथि। हरिमोहन झा 'कन्यादान' लीखि समाजकें झकझोरि चुकल रहथि। ताराक वैधव्य, करुणा आदि कथा मैथिल स्त्रीक कारुणिक चित्र प्रस्तुत क' समाजकें स्त्री-जीवनक प्रति सोचबाक लेल प्रेरित केने रहय। देशमे 1942 क आन्दोलन भ' गेल रहय। द्वितीय विश्वयुद्ध लड़ल जा चुकल छल। देश, समाज आ घर-परिवार पर एहि आन्दोलन आ विश्वयुद्धक प्रभाव सघन रूपें पड़ल रहय। मनमोहन झा लग साहित्य आ समाजक परिप्रेक्ष्य एकदम स्पष्ट छलनि। ओ 1942क आन्दोलन मे भाग लेनिहार क्रांतिकारीक 'आहत आत्मा' कें कथाक माध्यमे प्रस्तुत केलनि त' द्वितीय विश्वयुद्धमे लड़निहार सैनिकक मुँहसँ मैथिल ललना 'रुना'क कथा सेहो कहलनि। ई दुनू कथा 'अश्रुकण' मे संग्रहीत अछि। बादमे ओ 1971क बंगला देशक मुक्ति संग्रामक पृष्ठभूमिमे 'वीरभोग्या' कथा सेहो लिखलनि। ओ प्राचीन मिथिलाक

इतिहासमे सेहो गेला। हुनकर 'मीनाक्षी' कथा मिथिलाक ऐतिहासिक नरेश नान्यदेवक कालक थिक। जाहिमे नगर वधू 'मीनाक्षी' मिथिला-प्रेममे अपन प्राण तक त्यागि दैत अछि। एहिमे बंगालक बल्लाल सेन आ मिथिलाक नान्यदेवक बीच भेल युद्धक वर्णन अछि।

'अश्रुकण' कथा-संग्रहक पहिले कथा अछि रुना। कथाक आरम्भे होइत अछि द्वितीय विश्वयुद्धक पृष्ठभूमिमे। कथा कहनिहार सैनिक छथि। छुट्टीमे गाम अयलाहे। अबिते गामक लोक सभ लड़ाइक मादे हुनका सँ पुछय लगैत अछि। कतेक दिन चलतैक लड़ाइ? लोकसभ लड़ाइ सँ अकच्छ अछि। कथावाचक सैनिक अपन ग्रामीण सभकें आश्वस्त करैत छथि जे हम सभ शीघ्रे विजय लाभ करब। इटलीक अध:पतन भ' गेल छैक। अन्यो शत्रु राष्ट्र सभ हारि रहल अछि। ओ अपन ग्रामीण सभकें भरोस दैत अछि जे कोनो वस्तुक क्लेश हुअय त' कहू जयबा काल हम जिलाक कलक्टरकें कहने जेबनि। सभ वस्तुक सुविधा क' देता। प्रथम पुरुष कथावाचकक शिल्पमे रचित कथा शुरुहेमे अपन एक पृष्ठभूमिक निर्माण क' लैत अछि। तखन अबैत अछि रुना। रुना ओही गामक थिक। रुनाक पति भागि क' मिलीट्रीमे भर्ती भ' गेल छैक। जेबा सँ पहिने ओ रुना सँ गहना मंगने रहैक। गहनाकें बन्हकी राखि ओ मेरठ जा क' लड़ाइमे भर्ती होइतय। लड़ाइमे जेबाक इच्छा बहुत दिन सँ रहैक मुदा माय-बाप जाय नहि देब' चाहैत छलै। रुनाकें गहनाक मोह नहि छलै मुदा ओहो पतिक लड़ाइमे भर्तीक विरुद्ध रहय। तें ओ गहिना नहि देलक। रुनाकें होइत छलै जे एहि दुआरे पतिकें ओकरा सँ घृणा भ' गेल छैक। ओ सैनिककें अपन पतिक नाम लीखिक' बतबैत अछि। रुनाक पति सँ ओ सैनिक परिचित छथि। रुनाकें आश्वासन दैत छथिन जे फेर सँ गाम अयला पर ओ ओकर पतिकें संग ल' क' अओता। फ्रंटपर वापस गेला पर हुनका रुनाक पति सँ भेंट होइत छनि। सैनिककें बुझाइत छनि जे रुनाक प्रति स्नेह त' हुनका छनि मुदा अयबा कालक मनोमालिन्य खतम नहि भेलनि अछि। तथापि ओ रुनाक पतिकें भविष्यमे गाम जयबाक लेल मना लैत छथि। मुदा जखन सैनिककें फेर सँ गाम जयबाक भेलनि त' रुनाक पति लड़ाइमे घायल भ' क' मरि

गेल रहैत छैक। सैनिक सोचैत छथि जे आब ओ गाम कोना जयता। रुनाकें की कहथिन, कोना कहथिन। ओ गाम पहुँचला पर रुनाकें पतिक मृत्युक समाचार नहि कहि पबैत छथि। एम्हर-ओम्हरक गप कहि रुनाकें परतारि दैत छथि। कहैत छथिन जे ओ आब' त' चाहैत छला मुदा दू-चारि सय रुपैया जाबत हाथमे नहि रहितनि ताबत कोना अबितथि। रुना ओहि समय दुखताहि छल। सैनिकक गाम सँ विदा हेबाक काल रुना आबि क' साड़ीक खूंटमे बान्हल दस-दसटाक बीस नोट दैत अछि, जे ओ झंझारपुर जा क' अनने रहय। दू सय टाका दैत रुना कहैत अछि जे, 'ई रुपैया चुपचाप हुनका दए देबेन्ह। हमर शपथ थिक आन कियो नहि बूझय। हुनका कहबैन्हि जे गाम पर कहथिन्ह जे कमा कए अनलहुँ अछि। ओ रहता तँ बन्हकी छूटि जेतैक।' सैनिककें आबो सत्य कथा उद्‌घाटित नहि कयल होइत छनि। ओ सोचैत छथि जे जहिया फेर गाम आयब त' कोनो व्याज सँ रुपैया वापस क' देबैक। अवरुद्ध कण्ठ सँ एतबे कहना गेलनि जे, 'लाबह हम दए देबन्हि।' एहि प्रकारें 'रुना' द्वितीय विश्वयुद्धक परिप्रेक्ष्यमे दाम्पत्य प्रेमक अद्‌भुत कथा बनि जाइत अछि। दाम्पत्य प्रेमक बहुतो नीक कथा बादोक समयमे मैथिलीमे आयल अछि। मुदा ओहि सभक बीच 'रुना'क फूट महत्व छैक। से महत्व ओकरा द्वितीय विश्वयुद्धक पृष्ठभूमि प्रदान करैत छैक। विशेषता ई जे, कथा जखन लिखल गेल तखन युद्धक प्रभाव समाज पर सँ खतम नहि भेल छल। मैथिलीमे युद्ध आ युद्धक प्रभावक पृष्ठभूमिमे उल्लेखनीय कथा नहिएँ जकाँ आयल अछि। आ ताहूमे पारिवारिक आ दाम्पत्य जीवनक राग-कथा। एही संग कथामे नारी हृदयक जाहि प्रकारक उदारता आ उच्चता रुना देखबैत अछि से परम्परा पोषित, मैथिल स्त्रीक पत्नीत्वक गौरवकें प्रकट करैत अछि। एहि ठाम ई कहब असंगत नहि होयत जे 'रुना'क बाद आयल काञ्चीनाथ झा 'किरण'क 'मधुरमनि' सेहो दाम्पत्य जीवनक अद्‌भुत कथा थिक। ई दुनू कथा एहन पत्नीक कथा थिक जत' पा..-पुरुष जेना झूस भ' जाइत अछि। एहि कोटिक स्त्रीक कथा दुनू लेखकक विशिष्ट बनबैत अछि।

परम्परा सँ मिथिलाक समाजमे स्त्रीक प्रति पुरुषक दृष्टि वर्चस्वक मानसिकता सँ भरल रहल अछि। स्त्रीकें सभ दिन ओ अपन अधीन मानैत

रहल अछि। अधीनस्थकें प्रतिष्ठित करब सहज नहि होइत छैक। लेखकोलोकनि साहित्यमे स्त्रीक दुर्दशाक प्रति साकांक्ष भेलो पर पुरुषवादी मानसिकता सँ मुक्त नहि भ' सकला। स्त्रीकें ओकर सम्पूर्ण सत्ताक संग स्वीकार करबा मे असोकर्य होइत रहलनि। पुरुषवादी ई दृष्टि आइयो समाप्त भ' गेल अछि से बात नहि मुदा क्रमशः समानताक दृष्टि आ व्यवहार बढ़ि रहल अछि। जकर कथात्मक अभिव्यक्तियो भ' रहल अछि। मुदा आइसँ साठि-पैंसठि वर्ष पूर्व नारीक हृदयमे पैसि क' चरित्रक उच्चता, उदारता, प्रेम आदिक भाव देखब आ ओकर चित्रण करब खास क' मिथिलाक परिप्रेक्ष्यमे, साधारण बात नहि थिक। स्त्रीक प्रति सम्मानक भावना बिना ई सम्भव नहि भ' सकैत अछि। मनमोहन झामे स्त्रीक प्रति सम्मानक भावना लेखनेटामे नहि जीवनमे सेहो छलनि। यैह सोच आ मानसिकता हुनका तत्कालीन मैथिल उच्चवर्गीय पुरुष मानसिकता सँ फराक करैत अछि।

हमरा मनमोहन झा सँ पहिल भेंट गाममे नहि, काशीमे भेल छल। काशीक राम मन्दिर पर रहैत रही। नेने रही। मनमोहन झा सरिसब स्कूलमे शिक्षक रहथि। काञ्चीनाथ झा 'किरण' सेहो ओही स्कूलमे शिक्षक रहथि। दुनूकें सम्पूर्ण इलाकाक लोक मास्टर साहेब कहनि। हमहूँ कहियनि। मास्टर साहेब काशी आबथि त' राम मन्दिर पर रहथि। ओ सपरिवार आबथि। हुनकालोकनिक संग हम घूमै-टहलै लेल जाइ। ओहि समय ई त' नहि बुझियैक जे ई एतेक पैघ लेखक छथि, परन्तु ई अवश्य बूझाय जे आन लोक सँ दोसर तरहक छथि। ओहि कालक स्मृति एक विशिष्ट अनुभूतिक संग आइयो बनल अछि। से स्मृति मनमोहन झा आ हुनकर पत्नी तूलिका झाक पारस्परिक प्रेम-भाव आ साहचर्यक अछि। एहन स्नेही दम्पति हमरा जीवनमे बहुत कम भेटल छथि। एही संग कोनो पतिकें अपन पत्नीकें एतेक मोजर दैत, एतेक सम्मान दैत हम ओहि सँ पहिने नहि देखने रहियैक। जीवन भरि दुनूक बीच स्नेह आ प्रेम ओहिना बनल रहलनि। प्रेमक ई पराकाष्ठे छल जे पतिक विछोह तूलिका झा दसो दिन नहि सहि सकली। पतिक देहावसानक लगले बाद ओहो एहि संसारकें छोड़ि देलनि।

मनमोहन झाक कथा-संसार स्त्री आ पुरुषक बीच स्नेह-प्रेम, सम्मान आ उदारता, त्याग आ बलिदानक संसार थिक। वस्तुतः ई संसार मनुखताक संसार थिक। प्रेम, चाहे ओ कोनो प्रकारक हो, मनुखताक खोराक चाहैत अछि। प्रेम लेल मनुख होयब जरूरी छैक। मनमोहन झाक कथा-संसारमे त' निर्जीव वस्तु, घरक खिड़की सेहो प्रेममे पड़ि मनुख भ' गेल अछि। प्रेम ओकरा राग-अनुराग, हास्य, ईर्ष्या-करुणा सभ सँ ओत-प्रोत क' दैत छैक। एक 'खिड़की' गहन सम्वेदनाक संग स्त्री-जीवनक करुण कथा कहि जाइत अछि। स्त्रीक प्रेममे पड़ि चन्द्रहार कथाक मोगल सुलेमान सेहो अपन देश जाक' बापे जकाँ पामीर लग पहाड़ काटि क' सोलह वर्षमे पाइ जमा क' चन्द्रहार गढ़ा क' फेरसँ ओहि स्त्रीक आदर करबाक लेल अबैत अछि, जकरासँ प्रेम भ' गेल रहैक। मनमोहन झाक कथा-संसारमे पुरुष सभ बदलल-बदलल सन लगैत छथि। सम्वेदनशील आ मानवीय। ई प्रेमक प्रभाव थिक। राग-भाव थिक।

कथाकार मनमोहन झाक कथाक मादे मैथिलीक किछु आलोचकक ई कहब अछि जे ओ कथामे कनैत रहला अछि। नोरझोरक कथा कहैत रहला अछि। वस्तुतः ई वैह आलोचक सभ छथि जे हरिमोहन झाकें हास्यरसावतार कहैत छथि। ई एक अतिवादी आ असंगत दृष्टि थिक। जे कथा हमरा मानवीय बनबैत अछि, जीवनक प्रति आस्था बढ़बैत अछि, से पलायनक प्रलाप अथवा व्यथाक कथा भइये नहि सकैत अछि। जँ मनमोहन झाक कोनो कथा पढ़ि क' आँखिमे नोर भरि अबैत अछि त' ई विचारबाक थिक जे ई नोर कोन कारणें आयल? बहुतो पाठककें नोर नहियो आबि सकैत अछि किछुकें कम वा बेसी नोर आबि सकैत अछि। उदाहरण लेल 'झगड़ा' कथाकें लेल जाय। ई कथा पढ़ि अहू बीचमे हमरा आँखिमे नोर आबि गेल। ई नोर आबि गेल त' हम विचार' लगलहुँ जे नोर किए आयल? विचारलहुँ त' लागल जे दुनू दम्पतिक झगड़ाक बीच एक मात्र संतान ननकिरबी सुधाक मृत्युक संताप नोर अनलक। झगड़ा त' दम्पतिक बीच चलिते रहैत छैक। कथोमे खतम नहि भेलैक। कम भने भ' गेल हो। त' ई करुणा कोन करुणा छल? ई त' वात्सल्यक अश्रु छल। कथा जँ हमरा भीतर वात्सल्य

भाव जगा देलक त' से जीवन लेल कोन अनर्थ केलक? यैह बिन्दु अछि जत' आबि क' कथा पाठकक मनोदशाकें झकझोरैत अछि। कथा कनबाक लेल नहि, सोचबाक आ किछु करबाक लेल कहैत अछि।

झगड़ा वस्तुतः पति-पत्नीक झगड़ाक कथा नहि अछि। ई अछि राग-चेतनाक कथा। जिजीविषाक कथा। लगैत अछि जे सुधाक मृत्यु पति-पत्नीक झंझ-मंझक कारणें भेल। पति महोदय पत्नीक व्यवहार सँ तमसा गेला। बेटी सुधाकें एक चाट मारि देलथिन। बाल-मनपर एकर तीव्र प्रतिक्रिया भेल। सुधाकें ज्वर भेलैक मरि गेल। स्पष्ट अछि जे मुख्य विषय पति-पत्नीक मतभेद नहि, सुधाक मृत्यु अछि। कथाक अन्त झगड़ा पर नहि, मृत्यु पर अछि। मृत्युओ पर नहि, सुधाक पिताक प्रति राग-भावक विपर्यय पर होइत अछि। पत्नी झगड़ाकें अनठबैत सामान्य स्थितिमे आबि हवाइ जहाज अपन भाइक बेटाकें सनेशमे देब' चाहैत छथि। किन्तु पति ओहि हवाइ जहाजकें बेटीक स्मृति स्वरूप जोगा क' रखबाक विचार कयने छथि। एहि प्रकारें हवाइ जहाज सुधाक प्रतिरूप बनि क' जीवनक सुख-सपनाक आधार बनि जाइत अछि। कथाक अन्त सुधाक लेल पिताक एही स्नेह-भाव पर, राग-चेतनाक एही अमरता पर होइत अछि। मनमोहन झाक कथाक मूलाधार अछि मनुक्खक जीवनासक्ति। ललित अपन प्रसिद्ध उपन्यास 'पृथ्वीपुत्र' मे कहैत छथि जे मनुख लेल पहिने जीयब जरूरी अछि। मनमोहन झाक कथा ई बात बहुत पहिने कहने अछि-कनेक दोसर तरहें प्रकारान्तर सँ। यदि हुनक कथाक दुखद प्रसंग सँ उबरि क', नोर-झोर पोछि क', वैचारिकताक धरातल पर आबि क' आस्वादन करी त' ओ जीबाक बाट देखबैत भेटत, जीवनक प्रति आस्था उत्पन्न करैत लागत।

अमर कथा-शिल्पी स्व॰ मनमोहन झा स्मृति ग्रन्थ, 2010

■

ललितक पृथ्वीपुत्र

भारतीय उपन्यास मे किसान जीवनक महागाथा रचबाक परम्परा उड़ियाक कथाकार फकीर मोहन सेनापतिक उपन्यास 'छौ विगहा आठ कट्ठा' (1887) सँ शुरु होइत अछि। एही उपन्यासक संग उड़िया मे उपन्यासक उदय भेल आ भारतीय उपन्यास मे किसान-जीवन पर आधारित यथार्थवादी उपन्यासक परम्पराक सूत्रपात सेहो भेल। प्रेमचन्द्रक उपन्यास 'गोदान' त' किसान-मजदूरक दुख-दर्द सँ भरल अछि। 'गोदान'क मुख्य समस्या ऋणक समस्या थिक। प्रेमचन्द किसान जीवनक हरेक कोण सँ परिचित रहथि। ओ जनैत रहथि जे किसान सभक 'नरम चारा' थिक। अनेको प्रकारक शक्ति सभ ओकर खून चुसबा पर लागल अछि। ओ इहो मानि क' चलैत छला जे किसान आ ग्राम्य-संस्कृतिक रक्षे सँ ग्राम्य-जीवनक उद्धार भ' सकैत अछि। सम्पूर्ण आर्थिक तन्त्र किसाने पर अवलम्बित अछि। अही कारण ओ किसान आ मजदूरक स्वराजक मांग करैत लिखलनि, 'हम गरीब, काश्तकार आ मजदूरक स्वराज चाहैत छी।[1]

मुदा स्वराज भेटला पर से भ' नहि सकल। सत्ता पर आने शक्ति सभ आसीन भ' गेल। किसानक लगातार अवहेलना होइत रहल। देश मे खेत, खेती आ खेतिहरक समस्या आइ विकराल रूप धारण कयने अछि। खेत खतम भ' रहल अछि। खेती अलाभकर भ' रहल अछि। खेतिहर परेशान छथि। आत्महत्या क' रहल छथि। ई सभटा आजुक विकासक कारी पक्ष थिक। सड़क, उद्योग, आवासीय मकान आदि लेल खेत ओ जमीनक अधिग्रहण भ' रहल अछि। खेतिहरक आर्थिक शोषण उद्याम भेल अछि। राशि-राशिक कानून बनि रहल अछि। कृषि योग्य भूमि किसान सँ छीनल जा रहल अछिं खेत बचेबाक लेल किसान कतेकोठाम संघर्ष क' रहल

छथि। किसानक हत्या भ' रहल अछि। किसानक पराभव आइ सहस्रमुख भेल अछि। मुदा साहित्य मे किसानक जीवन, ओकर संघर्ष, सुख-दुख नहि आबि रहल अछि।

एहना मे, खेतिहरक जीवन पर आधारित उपन्यासक परिप्रेक्ष्य मे, जखन मैथिली उपन्यास दिस तकैत छी त' तीनटा उपन्यास समक्ष अबैत अछि। यात्रीक बलचनमा, ललितक पृथ्वीपुत्र आ धीरेन्द्रक भोरुकबा। ई तीनू उपन्यास मैथिली मे 1965-1967क बीच प्रकाशित भेल। पोथीक रुप मे। भोरुकबा आ पृथ्वीपुत्र 1965 मे आयल त' बलचनमा 1967 मे। एही उपन्यासक संग मैथिली उपन्यास मे खेतिहर, मजदूर आ अछोप उपन्यासक नायक बनल। एहि सँ पूर्वक उपन्यास मे रहरहां नायक अथवा नायिका ब्राह्मण अथवा कायस्थ छल। उपन्यासक मुख्य प्रवृत्ति समाज-सुधारक रहय। स्त्री उपन्यासक केन्द्र मे छलय। भारतक आन भाषा-साहित्यक सामान्य प्रवृत्तिक संग पूरैत मैथिलियो उपन्यास मे स्त्री-जीवन मे सुधारक आकांक्षा अभिव्यक्त भेल अछि। हरिमोहन झाक 'कन्यादान' आ यात्रीक 'पारो' उपन्यास समाज मे हड़बिरड़ो मचौलक। रुढ़िवादी लोक सभ एकर विरोध केलनि त' आधुनिक लोक एकर स्वागत। कन्यादान आ पारोक विरोधक मूल मे वर्णवादी मानसिकता सँ भरल लोक सभ रहथि। वस्तुतः मैथिली साहित्य लेखन आ साहित्य विवेचन मे एहि मानसिकताक लोक पसरल रहला अछि। मैथिली साहित्यक एहि विशेष सन्दर्भ के ध्यान मे रखैत ई कहल जा सकैत अछि जे मैथिली उपन्यास मे खेतिहर वा अछोप के नायक बनायब कम हिम्मतिक बात नहि छल। मुदा यात्री, ललित ओ धीरेन्द्र से केलनि। से केलनि आनो उपन्यासकार जेना मायानन्द मिश्र, रमानन्द रेणु आदि। मुदा हुनका लोकनिक नायक खेतिहर नहि थिक। खोंता आ चिड़ै (मायानन्द मिश्र) आ दूध-फूल (रमानन्द रेणु) खेतिहर वा किसान-जीवन पर आधारित उपन्यास नहि थिक।

मिथिला मे खेतिहर, किसान आ गृहस्थ रहरहां समानार्थक बूझल जाइत रहल अछि। ई गृहस्थ ओहेन किसान होइत छथि जे खेती-बाड़ी मे शारीरिक रुप सँ संलग्न रहैत छथि आ जिनका अपन किछु भूमि सेहो रहैत छनि।[2] यात्रीक उपन्यास बलचनमाक बालचन, ललितक पृथ्वीपुत्रक विशेखी

पासवान आ धीरेन्द्रक भोरुकबाक ठकबा कियोट एहने गृहस्थ थिक। एहन गृहस्थ सभ अपन भूमि पर स्वयं खेती करैत छथि आ कोनो पैघ काश्तकारक ओहिठाम हरबाही आ चरबाही सेहो करैत रहैत छथि। सभक घर मे कृषि-कर्म लेल काज आब' बला कोनो ने कोनो औजार-पाती अवश्य रहैत छनि। से हर सँ ल' क' कोदारि-खुरपी धरि भ' सकैत अछि। हिनका लोकनिक जीवन-शैली श्रम पर आधारित होइत अछि। ई मूलत: श्रमिक होइत छथि। महाकवि यात्री अपन लेखन-कर्म कें सेहो कृषि-कर्म सँ जोड़ैत कहलनि अछि जे,

तखन की त' एखन एकटा काज मे
बाझल छी...
इएह लिखउआ काज मे
अप्पन इएह खेती-बाड़ी थीक
नइ कोदारि त' खुर्पिये...

कृषि-कर्म सँ जुड़ल एहि वर्गक आचार-विचार मे समानता होयब स्वाभाविक थिक। ई समानता सामाजिक-पारिवारिक जीवनक अनेकानेक सूत्र सभ मे देखल जा सकैत अछि। ई सूत्र सभ जीवन-राग सँ भरल आ सामूहिकताक भावना सँ ओत-प्रोत रहैत अछि। कोनो प्रकारक कट्टरताक प्रवेश एहि मे नहि भ' सकैत अछि। ई गृहस्थ सभ पृथ्वीपुत्र होइत छथि पण्डितपुत्र नहि। हिनका सभक लेल शास्त्रीय कि वर्णवादी सँ बेसी लौकिक कि समूहवादी ज्ञान महत्वपूर्ण होइत अछि। आपसी प्रेम आ सहयोगक भावना जीवन-यापनक लेल व्यावहारिक स्तर धरि पहुँचल रहैत अछि। मुण्डे-मुण्डे मर्तिभिन्ना एहि गृहस्थलोकनिक लेल स्वीकार्य नहि होइत अछि। हिनकेलोकनिक बलें मिथिलाक गाम जड़ नहि भेल अछि। परिवर्त्तनशील बनल अछि।

आलोचक मोहन भारद्वाज कहैत छथि जे मिथिलाक अधिकांश लोक कौमुदी सँ नहि, कोदारि सँ जुड़ल अछि। खेती एहिठामक जीवनाधार रहलैक अछि। ...मिथिलाक संस्कृति कृषिधर्मी अछि। कार्य कें कर्त्तव्य आ श्रम कें शक्ति बूझब एहि संस्कृतिक मूलाधार थिक। तैं संस्कृति मे सौन्दर्य-बोधक संग मूल्य-बोध सेहो जनमैत आ पनपैत अछि।[3] मुदा कोदारि

सँ जुड़ल लोकक जीवन पर आधारित उपन्यास मैथिली मे बहुत कम लिखल गेल। लिखल गेल त' बलचनमा, पृथ्वीपुत्र आ भोरुकबा। मुदा जेना होइत छैक, तीनू उपन्यासक संरचना पर लेखकक जीवनदृष्टि आ मूल्यबोध अपन छाप छोड़ि देलक अछि। एहि कारणे तीनू उपन्यासक प्रकृति आ प्रवृति मे अन्तर देखल जा सकैत अछि। यात्री 'बलचनमा' मे जत' व्यवस्था परिवर्त्तनक प्रयोजनीयता कें रेखांकित करैत छथि त' धीरेन्द्र भोरुकबा मे समाजक बदलैत मनोवृत्ति कें आ ललित पृथ्वीपुत्र मे खेत जोतनिहारक भूमिक प्रति ममत्व के। स्वाभाविक रूप सँ यात्रीक दृष्टि-बोध अधिक व्यापक ओ गहींर छनि। मुदा जरुरति आइ तीनूक एक्के संग पड़ि गेल अछि। वस्तुत: खेती आ खेतिहरक समस्ये आइ बेसी जड़िया गेल अछि। तैं खेतक प्रति मोह-ममता, खेतिहरक प्रति शेष समाजक सहयोगी भूमिका आ अन्तत: खेतीक प्रति विद्वेषी व्यवस्थाक परिवर्त्तनक प्रयोजन आइ पहिने सँ बेसी जरुरी भ' गेल अछि।

पृथ्वीपुत्र मे खेतिहरक जीवन अछि त' ओकर संघर्ष सेहो अछि। ई संघर्ष जमीन्दार आ खेतिहरक बीच भूस्वामित्वक संघर्ष थिक। जमीन्दार आ खेत जोतनिहारक संघर्ष थिक। पृथ्वीपुत्र मे खेत जोतनिहारक एहि संघर्ष मे विजय देखाओल गेल अछि। ई उपन्यास कहैत अछि जे खेत जोतनिहारक थिक। जे जोतय-खेत ओकरे। एहि बात के वर्त्तमान मे बहुत कम राजनीतिक दल मानबाक लेल तैयार अछि जखन कि दाबा सभ दल गरीब, खेतिहरक उत्थान के करैत अछि। इतिहास साक्षी अछि जे खेत आ खेतीक लेल खेतिहरक संघर्ष लगातार जारी रहल अछि। संघर्षक विश्लेषण मे तीन बिन्दु मुख्य रुप सँ विचारणीय अछि-संघर्षक कारण, स्वरूप आ परिणाम। यात्रीक बलचनमा उपन्यास मे खेतिहरक संघर्षक कारण कें दू कोला मे खतिया सकैत छी। तात्कालिक आ दीर्घकालिक। उपन्यास मे तात्कालिक कारण तीनटा अछि-भूस्वामित्वक समस्या, सूदखोरीक प्रथा आ मालगुजारीक नालिश।[4] पृथ्वीपुत्र मे भूस्वामित्वक समस्या अछि। संघर्ष जमीन्दार आ खेतिहरक बीच होइत अछि। ई संघर्ष सामूहिक रुप सँ होइत अछि। विशेखीक जेठ बेटा गेना एहि मे मारल जाइत अछि। ओकर पत्नीक सोहाग उजड़ि जाइत छैक। उपन्यास मे विशेखीक छोट बेटा सरुप संघर्ष मे

अगुआ होइत अछि। ओ जमीन्दारक चालि के छहोछित्त क' खेतिहर सभ मे लड़बाक लेल प्राण फूकैत अछि। सभ मीलि जमीन्दार सँ लड़ैत अछि। अपन-अपन खेत बचा लैत अछि। खेत मे पटुआ उपजबैत अछि। बाद मे सरुप अपन भाउज बेनी सँ बियाह क' लैत अछि।

पृथ्वीपुत्र उपन्यास मे खेतिहरक संघर्ष किसान-जीवनक अंग बनि क' अबैत अछि। जीवन अछि त' संघर्ष अछि। जीवन सँ फूट संघर्षक महत्व नहि अछि। पृथ्वीपुत्र खेतिहरक संघर्ष देखेबाक लेल लिखल गेल उपन्यास नहि थिक। बलचनमा सेहो केवल किसान-संघर्षक नहि, किसान-जीवनक उपन्यास थिक। तहिना भोरुकबा मे सेहो किसान परिवारक जीवन-संघर्ष अछि। एहि संघर्ष मे प्रगतिशील नवयुवकलोकनि सेहो खेतिहर परिवार के संग दैत छथि। समाज मे सौहार्दक एहि तरहक बदलैत मनोवृत्ति आ चेष्टा कें समाज परिवर्त्तन लेल जरुरी तत्व मानल गेल अछि। समाजक जड़ताक विरुद्ध ई प्रगतिशील चेतना उल्लास उत्पन्न करैत अछि।

ललितक पृथ्वीपुत्र मे विशेखी पासवान एक गृहस्थ छथि। पहिने यादवलोकनि कें छोड़ि समस्त टोल भूमिहीन रहय। मालिक रहथि जंगबहादुर बाबू। हिनके जमीन्दारी मे बसैत छल सभ। मुदा जमीन्दारी उन्मूलन भेल। पूर्णिया मे सर्वे आयल। सर्वे मे सभक नाम सँ थोड़-बहुत खेतक खाता खुजलै। अपन-अपन बास-भूमि भेलै। दू बीघा, तीन बीघा क' खेत सभ के भेटलैक। अपन स्वामित्व भेला उत्तर पहिल बेर भूमि सँ ममता आ सम्बन्ध भेलैक। परती-पराँटक छाती चीरि मकइ, कुरथी, पाट उपजौलक। विशेखी पहिने इलाकाक माशूल चोर रहय। सीनियर, सी क्लासक। बी॰ सी॰ रहय अर्थात् बैड कैरेक्टर। अन्हरिया मे बीटक सिपाही जकर हाजिरी लैक। हाड़-काठ सँ सक्कत आ मजगूत रहय। दू टा बेटा रहैक विशेखी के। गेना आ सरुप। एकटा बेटी रहैक बिजली। विशेखी एकटा समारोह मे जिलाक एस॰ पी॰ लग चोरि नहि करबाक सप्पत खेने रहय। से सप्पत मोन सँ खेने रहय। सप्पत खेलाक बाद ओकर मुँह पर गर्वक दीप्ति रहैक। परिवार मे नवजीवनक उत्साह रहैक। अपन बाँहिक बलें खेती क' गुजर-बसर कर' चाहैत छल।

विशेखीक बेटी बिजलीक बियाह भ' गेल छलैक। द्विरागमन भ' गेल रहैक। पति हीरालाल रेलवे मे पैटमैन रहय। नाम, पातर। कारी। छोट-छोट सुगरकेसा एकदम ठाढ़। बड़कीटा नाक। चकचक करैत दाँत। छोट-छोट आँखि। हाथ-पयर सक्कत। एकदम हड़ाठी-फराठी सन। पसिन्न नहि भेलै बिजली के। रेलबी क्वाटर पिजड़ा जकाँ लगै। मोन मे बसल रहै गोरका चक्काबला कलपू। लाल ठोर बला कलपू मिसर। भरि दिन बिजलीक मुँह ताक'बला कलपू। नीक-नीक वस्तुक उपहार दिअ'बला कलपू। कहाँ देवदारु सन ओ आ कहाँ खएरक कुबड़ाह गाछ सन पैटमैन हीरालाल। आठे मास मे पड़ा आयल बिजली। माय डटलकै। टोल-पड़ोसक स्त्रीगण ए-छी केलकै। भाउज पुछलकै त' बिजली कहलकै-'एकोरत्ती रस नै छै मोनसाक देह मे। जेहने बगय छै सुग्गर जकाँ तेहने स्वभावो छैक बेलस।' सासुर सँ पड़ा क'आबय त' पति हीरालाल आबि क' ल' जाइ। मुदा बेर-बेर पड़ाइत रहल। तेसर बेर पड़ा क' आयल त' नहि गेल। छोट भाइ सरुप आ बिजली मिलि क' ओकर योजना पर पानि फेरि देलक। पंचक निर्णय भेलै जे हीरालाल कें बिजलीक तरफ सँ जबाब भेटैक। नीक घर-बर ताकि विशेखी अपन बेटीक सम्बन्ध करा दिअय। सरुप के बिजलीक लेल बोझ बनल बियाह- बन्धन सँ मुक्ति पर गौरवक अनुभव भेल रहैक। जेना कोनो लड़ाइ जीत लेलक अछि।

पृथ्वीपुत्र मे बिजली आ सरुपक अद्भुत चरित्र अछि। तेजस्वी, साहसी आ स्वतंत्रचेता। दुनू चरित्र एक-दोसराक पूरक सेहो अछि। एक दोसरा के सपोर्ट करैत। वस्तुतः ई दुनू भाइ-बहीन उपन्यासक नायक-नायिका थिक। बलचनमा उपन्यासक बलचनमा, पृथ्वीपुत्रक सरुप आ भोरुकबाक मुसहरबा नब पीढ़ीक प्रतिनिधि चरित्र अछि। बलचनमा, सरुप आ मुसहरबा तीनू सामाजिक, राजनीतिक चेतना सँ लैस अछि। बलचनमा आ सरुप किसान-संघर्ष मे भाग लैत अछि। मुसहरबा गाम सँ दरभंगा आबि रिक्शा चलबैत अछि। कर्जा चुकेबाक लेल जी-तोड़ मेहनति करैत अछि। पढ़ब-लिखब सीखैत अछि। रिक्शा-यूनियनक सेक्रेटरी भ' जाइत अछि। तीनू नायक अपन आचार-विचार सँ परिवार एवं समाजक दुलरुआ आ अगुआ बनैत अछि। पृथ्वीपुत्र मे कलपू मिसर सेहो एक विशिष्ट चरित्र

छथि। एहि प्रेम मे छिनरपन नहि अछि। चोरा-नुका क' बिजली संग सम्बन्ध नहि बनौने छथि। एहि सम्बन्धक लेल सभ वर्जना के ढाहि दैत छथि। बिजली आ बिजली परिवारक सभ प्रकारें हितचिन्तक बनल रहैत छथि। परिवार के आपद-विपद मे संग दैत छथिन। बिजली सेहो हुनका प्रति एकनिष्ठ अछि। सिपाही दुरजोधन सिंह द्वारा जबर्दस्ती केला पर एकदम भीड़ि जाइत अछि। अपना के बचा लैत अछि। चिचिया के सरुप कें सोर करैत अछि। बिसेखी बेटाक हाथ सँ गड़ाँस छीनि क' हत्याक इलजाम अपना उपर ल' लैत अछि। ओकरा जेल भ' जाइत छैक। जेले मे ओकर मृत्यु भ' जाइत छैक। कलपू मिसर बिजली सँ बियाह कर' चाहैत छथि। अपन दादी आ मायक पहिरल सभ गहना-गुड़िया बिजली के पहिराब' चाहैत छथि। मुदा बिजली हुनका परतारि दैत अछि। कहैत अछि जे, 'तों हमर सींथ छुबितह तेहेन हमर भाग नहि। तों देबता छह हमर। मगर ई गहना पहिरबाक हमर भाग नै अछि एहि जन्म मे। ओ गहना पहिरब त' हम जरि जायब। ओइ जन्मक हमर चूक रहय जे ई गहना-गुड़िया पहिर क' तोहर नै भ' सकलियह। अइ जन्म मे हमरा तोहर छाहरिएटा लिखल अछि। अगिला जन्म तोरा सङ बियाह हैत।' एतेक निश्चयात्मक बुद्धिवाली, एकनिष्ठ प्रेमिका, साहसी आ उदात्त नायिका बिजली के अछोप हेबाक संज्ञान समाप्त नहि भ' पबैत छैक। ब्राह्मणीक गहना पहिरत त' जरि जायत। नष्ट भ' जायत। किएक? बिजली एहि यू टर्नक की कारण? वस्तुतः ई बिजलीक मूल्यबोध नहि, बिजलीक चरित्र गढ' बला ललितक मूल्यबोध थिक। एकरे आलोचक रमानाथ झा 'आदर्श रूप' कहैत छथि।[5] ई रमानाथ झाक मूल्यबोध थिक। आइ जखन समाज मे अन्तर्जातीय बियाह रहरहां भ' रहल अछि त' कलपू आ बिजलीक बियाहक प्रसंग लेखक आ आलोचकक ई मूल्यबोध कतेक सार्थक रहि गेल अछि? की ललित पचासो बरख आगू नहि देखि सकला? की ललित समाज-जीवन सँ बेसी अपन मूल्यबोध के मोजर देलनि? वस्तुतः बात सैह लगैत अछि। आलोचक मोहन भारद्वाजक कहब अछि जे एहन अनेक उकडू प्रसंग अछि जाहिठाम नैतिक चेतना जीवन सँ नियन्त्रित नहि होइत अछि। लगैत एहन सन अछि जे ललित जीवने के नैतिक चेतना सँ नियन्त्रित करबाक प्रयास करैत छथि।[6] एहिठाम

मोहन भारद्वाजक तात्पर्य के फड़िछाएब जरुरी लगैत अछि। हमरालोकनि जनैत छी जे जीवन लेल नैतिक चेतना अथवा मूल्यबोध त' आवश्यक अछिए। प्रश्न अछि जे ई नैतिक चेतना अथवा मूल्यबोध कत' सँ उपजल अछि। एकर स्रोत की थिक? जँ एकर स्रोत वर्णवादी वा ब्राह्मणवादी मानसिकता मे निहित अछि तँ से मनुक्खक जीवन के कोला मे बाँटि क' जीवन-प्रवाह के ठमका देत। सामाजिक-जीवन मे दरारि उत्पन्न क' देत। सत्ताधारी विशिष्ट वर्गक हित-साधन करत। सामान्य लोक लेल हितकर नहि होयत। तैं कलपू संग बियाहक प्रसंग बिजलीक विचार ने त' बिजलीक लेल हितकर अछि ने खेतिहर समाज लेल। एहि प्रकारक नकारात्मक चेतना कि मूल्यबोध सँ जीवन के नियन्त्रित करबाक प्रयास करब जीवनक पक्ष मे नहि थिक।

एत' ई स्वाभाविक प्रश्न उठैत अछि जे ललित खेतिहरक जीवन-संघर्षक उपन्यास रचैतकाल कलपू आ बिजलीक प्रेम-प्रसंग के बीच मे किएक अनलनि? ब्राह्मण आ अछोपक बियाह-सम्बन्ध सन सामाजिक समस्या के उठायब किएक जरूरी लगलनि हुनका? ललित सन चेतना सम्पन्न लेखक अनेरे ढाही किएक लेलनि? ललित जनैत छला जे किसान एक वर्ग थिक। मुदा ई वर्ग अनेक जाति-वर्ण मे बँटल अछि। अनेक जाति-वर्ण मे बँटल रहबाक कारणे वर्गक रूप मे एकजुटता सम्भव नहि भ' पबैत अछि। एकजुटताक अभाव मे सामूहिक हित लेल सामूहिक संघर्ष कमजोर पड़ि जा सकैत अछि। तैं खेतिहरक आर्थिक समस्याक समाधान वा खेती ओ खेतिहरक उत्थान तावत् धरि नहि भ' सकैत अछि जावत धरि समाज मे कृषकक बीच जाति-वर्णक भेद-भाव रहत। कृषि पर आधारित समाजक विकास लेल ललित जाति-वर्णवादी नहि, वर्गवादी सामाजिक-संरचनाक आवश्यकता के बूझैत छला। मुदा ई सभ बूझियो क' ओ मोनक 'मैथिल संस्कार'क वशीभूत भ' मूल योजना सँ फराक हटि प्रेम-प्रसंगक अन्त केलनि। ई बात ओ डा॰ रामदेव झा कें बिजलीक प्रसंग गप चलाओला पर गछने रहथिन।[7] वस्तुतः ललितक मैथिल संस्कारक ई अवधारणा वर्णवादी वैचारिकताक देन थिक।

एकर बाबजूदो मैथिली उपन्यास मे पृथ्वीपुत्रक महत्व कम नहि होइत अछि। तकर कतेको कारण अछि। से अछि खेतक प्रति ममत्व। उत्पादक किसानक आत्मगौरव। पसेना सँ उपजल आत्मविश्वास। जीवन लेल संघर्षक माद्दा। आइ जखन जूट कि पाटक मांग बाजार मे बढ़ि रहल अछि जखन कि अनेक कारण सँ जूट आ पाटक उत्पादन मिथिलाक भू-भाग मे घटि रहल अछि। चीनीक आवश्यकता बढ़ि रहल अछि मुदा कुसियारक खेती घटि रहल अछि। तखन पृथ्वीपुत्र मे पाटक खेती केनिहार सरुप कि कुसियारक खेती केनिहार ठकबा कियोट सन गृहस्थ मोन पड़ब स्वाभाविक थिक। एहि खेतिहरलोकनिक पराभव आइ बेसिए बढ़ि गेल अछि। कृषि-कर्म सँ पलायनक एहि परिदृश्य मे कृषि कें उद्योग सँ जोड़ब, कृषि आधारित उद्योगक विकास होयब आवश्यक भ' गेल अछि। तखने मिथिलाक कृषि-जीवन कि ग्राम्य-जीवनक उत्थान सम्भव थिक। एहना मे पृथ्वीपुत्र सन उपन्यासक महत्व आ प्रासंगिकता स्वतः बढ़ि जाइत अछि। बलचनमा कि पृथ्वीपुत्र कि भोरुकबा उपन्यास मे आयल खेतिहर-गृहस्थक जीवन-संघर्ष के मोन मे जोगा क' राखब जरुरी थिक। खेत, खेती आ खेतिहरक आजुक सहस्रमुख समस्याक समाधानक दिशा मे ई उपन्यास सभ किंचितो प्रेरणा देबाक काज करैत अछि त' से कम महत्वक बात नहि थिक।

सन्दर्भ संकेत :

1. प्रियम्वद : प्रेमचन्द के किसान और मजदूर
2. Hetukar Jha : A Peasant's View of Peasant life and its categories : A study of the Proverbs of North India.
3. मोहन भारद्वाज : बलचनमा : पृष्ठभूमि आ प्रस्थान
4. वैह
5. रमानाथ झा : पृथ्वीपुत्रक भूमिका
6. मोहन भारद्वाज : ललितक लेखन-विमुखता, अनवरत पोथी,
7. वैह

'मैथिली'', ल.ना. मिथिला विश्वविद्यालय,
मैथिली विभागक शोध पत्रिका-2012

■

राजकमलक ललका पाग

ललका पाग पहिल कथा छी जे राजकमल मूल रूप सँ मैथिली मे लिखलनि। एहि सँ पूर्वक तीनटा कथा-अपराजिता, अन्धकार आ फुलपरासवाली ओ अपने हिन्दी मे लिखलनि जकर अनुवाद मैथिलीक प्रसिद्ध कथाकार ललित कयने रहथि। ललित लिखने छथि जे राजकमल हुनका वादाक अनुसार अपन कथा अपराजिता पठौने रहथिन जकर मैथिली अनुवाद कय वैदेही मे ओ छपने रहथि। तकर बाद फुलपरासवाली तक के जे कथा रहैक से मूल हिन्दी आ तकर भाषानुवाद हुनके कयल छल। ई मानबा मे ककरो असोकर्य नहि भ' सकैत अछि जे ललित तीनू कथाक नीक अनुवाद केने छला। ललका पागक पूर्वक तीनू कथा पढ़लाक बाद ललका पाग पढ़ला पर भाषाक स्तर पर कोनो झटका नहि लगैत छै। तखन एकटा बात अवश्य जे ललका पाग ओ पहिल कथा छी जत' सँ राजकमल अपन प्रकृति मे आबि गेला। प्रकृतिए मे नहि आबि गेला मैथिलीक जे कथा-परम्परा छल ताहि सँ एकदम जुड़ि गेला। तकर बाद त' हुनक गाड़ी बढ़ैत गेल आ ओ खाँटी मैथिल जनजीवनक कथाकार रूप मे एकदम ठाढ़ देखाइत छथि।

जखन हम राजकमलक मैथिली कथा-परम्परा सँ जुड़बाक बात कहैत छी त' हमर तात्पर्य ई नहि अछि जे ओ पाम्परिक रूपें ओही कथा-धाराक अनुगमन कर' लगला जे हुनका सँ पूर्व प्रवाहित भ' रहल छल। ओ अनुगमन नहि कयलनि ओ त' ओहि धारा मे ज्वारि आनि देलनि। एहन ज्वारि जे नदीक पाट के चौड़ा क' देलक। धार आब वेग सँ प्रवाहित हुअ' लागल। बिना अपन कथा-परम्परा सँ जुड़ने कियो पैघ कथाकार नहि भ' सकैत अछि। मुदा केवल जुड़िये गेने बात नहि बनैत अछि। पूर्व सँ प्रवाहित धारा मे जँ ज्वारि नहि उठा सकल त' ओ पैघ कथाकार नहि छी।

राजकमल चौधरीक मैथिली कथा सभ कें पढ़ैत अहाँकें लागत जे ओ अपन पूर्वज ओ समकालीन कथाकार सभ सँ अद्भुत रूपें कनेक्टेड छथि।

फुलपरासवालीक सम्बन्ध मे त' सभ के बुझले अछि जे ओ कथा ललितक 'मुक्ति' कथाक उत्तर मे लिखल गेल अछि। कमलमुखी कनियाँ कथा मे ओ हरिमोहन झाक प्रसिद्ध उपन्यास 'कन्यादान'क 'बुच्ची दाइ चुप' वला दृश्य के पुनर्सृजित केलनि। हरिद्वारवास कथा मे कथाकार लिली रेक प्रसिद्ध कथा 'रंगीन परदा'क उपयोग क' ओहि कथा कें अपना हिसाबें आगू बढ़ौलनि। हरिद्वारवास मे मालती मोहनजीक हत्या क' दैत छथि। राजकमलक सहस्र मेनका कथा त' मैथिलीक पहिल आधुनिक कथा 'ताराक वैधव्य' सँ कनेक्ट होइत अछि। मिथिला मे गाम-गाम मे विधवा स्त्रीक जेना भरमार छल। हुनका लोकनिक जीवन असहय कष्ट आ पीड़ा सँ भरल रहनि। जीवन मे कोनो सुख नहि। युवती विधवा सभक प्रति पुरुषक लोलुप दृष्टि दुराचारक असंख्य कथा गढ़ि रहल छल। एहि असहाय आ दारुण विधवा जीवनक मूल मे बिकौआ प्रथा त' रहबे करय, अनमेल विवाह सेहो छल। एक पुरुषक मृत्यु पर दस-बीसटा स्त्री, विधवा भ' जाइत छल।

मैथिली मे कतेको कथा विधवालोकनिक जीवन पर लिखल गेल जे पूर्व मे करुणा उपजबैत अछि आ क्रमशः व्यवस्थाक प्रति आक्रोश भरैत अछि। राजकमल एहन विधवालोकनिक जीवन-यापनक समस्या, हुनका लोकनिक प्रति होइत अमानुषिक व्यवहार आ तिरस्कारक दिस ध्यान आकृष्ट करैत छथि। ओ कहैत छथि जे व्यवस्थाक जाँत पर पिसाइत एहन स्त्री जेना मनुक्ख नहि रहि गेल छल। मनुक्खक स्थिति मे त' नहिये छल। हुनक कादम्बरी उपकथा एहि अमानुषिक व्यवस्थाक बीच मनुष्यत्वक प्रतिष्ठाक कथा कहैत अछि।

राजकमल चौधरीक कथा पर आलोचक सभक टिप्पणी सभ सँ ज्ञात होइत अछि जे हुनक कतेको कथा विवादित भेल। ओकरा यौन सम्बन्ध आ सेक्सक उद्याम चित्रण सँ जोड़ल गेल। ओकरा पौर्नोग्राफी तक कहल गेल। ई सभ बात पढ़ैत हमरा लगैत अछि जे एहि प्रकारक विरोध आ प्रहार त' हरिमोहन झा आ यात्री पर सेहो भेल छल। मुदा जेना हरिमोहन झाक साहित्य आब खाली हास्यरस लेल नहि पढ़ल जाइत अछि तहिना राजकमलक कथा मे सेहो कतहु सेक्स नहि भेटैत अछि। राजकमलक कथा पढ़ि जँ ककरो सेक्स वला गुदगुदी लगैत छनि त' हमरा जनैत हुनका अपन

मनोविकारक इलाज करेबाक चाही। सेक्सक समस्या राजकमलक कथा मे कतहु नहि अछि। समस्या ओहि पाठक लोकनि मे रहनि जे ओकरा पढ़ि रोमांचित होइत रहथि। एहि क्रम मे हमरा मोन पड़ैत अछि कथाकार शिवशंकर श्रीनिवासक हरिमोहन झाक कन्यादान पर टिप्पणी। ओ कहने छथि जे कन्यादान मे जे समाज चित्रित भेल अछि, झारखण्डी नाथक जेहेन भीषण गरीबी अछि से यथार्थ बुझियो क' जाहि पाठक कें हँसी लगैत छनि से धन्य छथि। तहिना हमरो कहबाक मोन करैत अछि जे मिथिला मे स्त्री समाजक एहन दारुण स्थितिक चित्रण के पढ़ि क' जाहि पाठक के ओहि मे सेक्स देखाइत छनि सेहो धन्य छथि।

राजकमलक कथा मे मैथिल स्त्रीक प्रवेश होइत अछि फुलपरासवाली सँ। जे मिथिलाक कोसिकन्हा मे पालित छली। तकर बाद अबैत छथि ललका पागक त्रिपुरा वा त्रिपुर वा तिरु। ओ ओहि वर्गक कन्या छली जे जाँत मे गहूँम पिसैत अछि। ढेकी पर चाउर छँटैत, ऊखरि मे चूड़ा कुटैत अछि। सिलौट पर पिठार पिसैत कोनो नव-पुरान पद नहुँए-नहुँए गबैत अछि। ई मैथिल नारि तुलसी-चौड़ा निपैत, अरिपन पर सिन्दूर आ पिठारक रक्त-श्वेत फूल-पात उगवैत अछि। सामा आ नुका-चोरी क' जट्टा-जटिन खेलाइत अछि। तिरु जखन पेट मे पिल्ही, देह मे घाव-फोसरी, आँखि मे सेर-दू-सेर काँची लेने, फाटल-चीटल फराक मे नेटा-पोटा पोछैत खरिहाने-खरिहान गाछिए-गाछी बौआइत बाँसक नवका कोपड़ सन कोमल, कविश्रेष्ठ वाणभट्टक श्यामांगी नायिका भ' गेली तखन हुनकर भाय के बियाहक चिन्ता भेलनि। तिरुक भाय के डाक्टरी पढ़ैत बर भेटलनि। बियाहक गप पर तिरु घर मे जाक' अन्हार मे चित्त पड़ि सुबक' लगली। राजकमल लिखैत छथि जे 'मिथिलाक छौड़ी सभ एहिना कनैत अछि। नीको मे अधलाहो मे कानब-कलपब मैथिल स्त्रीक परम्परा भ' गेल अछि।' किन्तु तिरु कानथि अथवा नहि विवाह भइए गेलनि। शुभलगन मे विवाह भेलाक बाद नवमे दिन दुरागमन सेहो भ' गेलनि। तेरहम बयस रहनि। दुरागमनक बाद हुनकर भाय अपन माय के संग क' जेना निश्चिन्त भ' कलकत्ता चल गेला। एम्हर खेलाइ-धुपाइ वाली तिरु विवाहक बाद कोठली मे कैद भ' गेली। मुदा से तिरु पहिने नहि बुझलनि। से बुझलनि बाद मे। पहिने त' ननगिलाटक ललका दसगज्जी घोघ तर सँ ओ वर के

देखलनि जे बड़ सुन्दर छथि, सदिखन हँसिते रहैत छथि। एकर संग ओ ईहो देखलनि जे सासुरक आंगनक पछुआर मे बड़की टा बाड़ी अछि आ बाड़ीक पछुआर मे बड़की टा पोखरि। तिरु-विचारलनि जे नैहरे जकाँ हरीनक बच्चा बनि बाड़ी मे बउआयब आ माछ बनि पोखरि मे चुभकब। तैं जखन भोजभात आ गीतनादक पश्चात् गाम-घरक कनियाँ-बहुरिया, दाइ-माइ, बूढ़ि-नवीना तिरुक गोल मुँह, आमक फाड़ा सन आँखि, पुष्ट पकिया श्याम रंग आ बाँसे सन पातर-छीतर देह के ठोकि बजा, अपन-अपन कैफा करैत चल गेली त' अपन अधवयसू सासु चननपुरवाली सँ पुछलथिन 'माय, अहाँ कें पोखरि मे हेल' अबैत अछि?' अपन नवीना पुतहुक एहि विचित्र प्रश्न पर सासु बजली, 'बहुआसिनो कतहु पोखरि मे हेलैत छैक?' एहि पर तिरु-विस्मय सँ आँखिक पकोट उठा भौंह वक्र क' क' पुछलथिन, 'से किएक? पोखरि मे हेलने की बहुआसिन कें पानि लागि जेतनि।' बस, तिरुक यैह पुछबे विष भ' गेल। भोर होइत-होइत सौंसे गाम मे हल्ला भ' गेल जे राति मे कमलपुरवाली कनियाँ पोखरि मे नहाइत रहथि। एतेक तक जे तिरुक पति राधा सेहो गाम मे भेल हल्ला पर विश्वास क' लेलनि। तिरुक उत्तर हुनका फूसि लगलनि। क्रोध सँ दोसर कात मुँह फेरि क' सुति रहला। तिरु नोर बहबैत रहली। अलगनी सँ चद्दरि तीरि नीचा मे सिमटीक फरस पर पड़ि रहली। राधा क्रोधित, चिन्तित, दुखित भ' सोच' लगला जे किएक एहि मूर्ख छौड़ी सँ विवाह केलहुँ। हुनका मोन पड़लथिन शम्भुनाथ मिसरक डाक्टर सुपुत्री कामाख्या दाइ। जे नीक चाह बनबैत रहथि। नीक सिनेमाक गीत गबैत रहथि। एहना मे तिरुक हिचुकि-हिचुकि कानब राधा के आर क्रोधित क' देलकनि। ओ बिगड़ि क' 'राच्छसनी नहितन! सुतइयो नहि देत, जो आब तोरा दिस तकबो नहि करब...' कहैत कोठली सँ बहरा गेला। तिरुक कोठली सँ बहरा क' भगबाक पश्चात् पूरे एक वर्ष धरि राधा तिरुक कोठली मे नहि गेला। बारहो मास बीति गेल। कनियाँ-वर के भेंट नहि भेल। पति-पत्नीक सम्बन्ध नहि भेल। कोनो सम्पर्क नहि। शारीरिक सम्पर्कक त' प्रश्ने नहि। बियाह की भेल, बुझू त' बियाहे नहि भेल। तिरु कनैत रहली। कनिते रहली। हुनकर सासु चननपुरवालीक विजय भेलनि। हुनकर सतरंजक गोटी सुतरि गेलनि। राधाक वियाह, दोसर वियाह आब कामाख्या दाइ सँ ठीक भेलनि। जे

चननपुरवाली हुनकर मायक इच्छा छलनि। एहि सभ निश्चयक उपरान्त एक दिन राधा तिरुक कोठली मे सूत' गेला। तिरुकें सूचना देलथिन जे ओ दोसर वियाह क' रहल छथि। एहि पर तिरु चुप्पे रहली। राधा पुछलथिन, 'की कहैत छी, अहाँ के दुख नहि हैत?' आब एहि प्रश्नक की उत्तर दितथि तिरु। फेर चुप्पे रहि गेली। राधा फेर पुछलथिन। तिरु कहलथिन जे किए दुख होयत अहाँक कुल मे त' दोसर बियाह लिखले अछि। राधाक कुल मे त' दूटा-तीनटा बियाह भेल रहनि। ई युग त' थोड़ेक बदलल छल। एहि समाज मे त' दर्जनक हिसाब सँ बियाह होइत छल। एहना मे दुखक की बात? बात त' एतबे जे राधा ई बात पुछलथिन। पुछबे टा नहि केलथिन, तिरुक दुख नहि होयबाक गप सुनि किछु नरमो भेला। पुरुष मे ई भाव आयल से ध्यान देबाक जोगर विषय छी। स्त्री त' उचिते पतिएक सुख मे अपन सुख तकैत छल। मैथिल स्त्री त' जीवन भरि सहैत रहैत अछि। बजैत किछु नहि अछि। से तिरु कोना ओहि लौह परम्परा के अतिक्रमण करितथि। तै पर ई परम्परा त' सामन्ती पुरुष समाजक बनाओल रहय। एही समाजक लोक तिरुक ससुर रामसागर चोधरी सेहो तँ रातुक एहि घटनाक बाद हरिद्वार दिस विदा भ' गेला। तिरुक लज्जा त्यागि हमरो हरिद्वार लेने चलू कहला पर जेना पुरुष कहैत आयल अछि सैह कहलथिन जे अहाँक चचरीए एहिठाम सँ बहरेबाक चाही, जीबित देह नहि। जहल मे त' सजायक समय बीतला पर लोक जीबितो निकलैत अछि मुदा एहि समाजक स्त्री बियाहक कैदखाना सँ जीबित कोना निकलत? तिरु धरती पर उखड़ल गाछ जकाँ खसि पड़ली त' खसल रहथु। पानि सँ निकलल माछ जकाँ छटपट करैत छथि त' छटपटाइत रहथु। मुदा एहनो अहुरिया कटैत मरैत गाय, चोटायल सर्पिणी सन क्रोध क' सकैत अछि। सासुक ई कहला पर जे एक्के वर्ष मे घर मे आगि लगा देलक। आब कनैत अछि। हड़ाशंखिनी नहितन। तिरु सासु लग सटि के कहलथिन, 'अहाँ हमर सासु छी। तैं किछु नहि कहैत छी। नहि त'...।' सासु चननपुरवाली एहि पर डरे पड़ेली। हुनका बुझेलनि जे ई त' साक्षात दुर्गा छी। मुदा एहि सभ सँ की हो। राधा दोसर बियाह लेल तैयार भेला। बियाह दिन नबका रेशमी कोट पहिरिलनि। नबका जूता पहिरिलनि। जेबी मे तिरुक काढ़ल रुमाल आ छोट-छीन चानीक पनबट्टी रखलनि। तखन माथ पर पाग रखबाक बात

आयल। इहो बात आयल जे एहि मे उजरा पाग सँ नहि हैत। तखन राधा के तिरुक समाद आयल अंगना अयबाक लेल। राधा तिरुक कोठली मे गेला। तिरु काठक बड़का बक्सा खोलने किछु ताकि रहल छली। राधा दिस मूड़ी घुमा क' बजली, 'सत्ते बड्ड सुन्दर लगैत छी अहाँ। एक बेर फेर अहीं सँ बिआह करबाक इच्छा होइत अछि।' राधा के ई बात हँसी बुझेलनि। ओ विदा हेबाक लेल अगुतायल छला। समय बीतल जाइत रहैक। तखन तिरु बक्सा सँ जे वस्तु बहार केलनि से घुनेस आ सुखायल फूल आ कागदक माला सभ सँ सजाओल पाग छल। ललका पाग। राधा के स्मरण भ' अयलनि जे इएह पाग थिक जे पहीरि कमलपुर विवाह करय गेल छलहुँ। इएह पाग थिक जाहि पर सभ सँ नुका क' तिरु नित्य फूल-माला चढ़बैत छली। तिरु स्वामी के पाग पहीरि लेबाक लेल देलथिन। राधाक हाथ मे पाग दैत तिरुक छाती फाटि गेलनि। मुदा एहि बेर ओ कनलीह नहि हृदय कठोर क' अपन नोर पीबि गेली। तिरु सँ ललका पाग लेलाक बाद राधा सँ कोठली मे ठाढ़ रहल नहि भेलनि। आँगन मे आबि कुर्सी पर बैसि रहला। ललका पाग माथ पर भारी भेल चल जा रहल छलनि। माथ मे बिहाड़ि उठि रहल छलनि। ओ कान' लगला, तीन वर्षक नेना जकाँ कान' लगला। गामक अलिखित दैनिक-पत्रक अवैतनिक महा सम्पादक श्री भोला मास्टर कें सभ बात बूझ' मे आबि गेलनि। राधा के उठबैत बजला, "राधा भाइ, उठ', चिन्ता जुनि कर', पुरुषक माथक ललका पाग त' स्त्री होइत छैक। से त' तोरा संग मे छहे। तखन तों किएक कनैत छह...।' राधा किछु नहि बजला। किएक नहि बजला? एही प्रश्न सँ कथा समाप्त होइत अछि। मुदा एहि प्रश्न सँ पूर्व जे भोला मास्टर द्वारा कहल गेल अछि से की कहैत अछि? हमरा जनैत से कहैत अछि जे तोहर स्त्री के जखन कोनो आपत्ति नहि छनि ओ तोहर दोसर विवाह मे संग द' रहल छथुन तखन तोरा कथी के दुख आ चिन्ता? मुदा वैह स्त्री अर्थात् ललका पाग राधा के आइ भारी पड़ि गेलनि। हुनकर माथ मे बिहाड़ि उठि गेलनि। ओह, एहन स्त्री जे हमर क्रोध, हमर अवहेलना, हमर तिरस्कार सभटा बरदास्त केलक। जेकरा हमर दोसर विवाह सँ जेना कोनो प्रकट दुख नहि छै। जे हमरे सुख मे अपन सुख तकैत अछि। एहनो स्थिति मे हँसि रहल अछि भीतरे-भीतर दुखी होइतहुँ खुलि क' किछु बाजि नहि रहल अछि। कोनो झगड़ा, झंझट, प्रतिरोध नहि क' रहल अछि। एहन स्त्री के

मोजर नहि द' लहक-चहक मे पड़ि दोसर स्त्री सँ विवाह कर' विदा भ' रहल छलहुँ। ओह! ई सभ भावना जखन राधा के मथ' लगलनि त' ओ आवेग मे कान' लगला। एहना मे मुदा ओ बजितथि की? बजबा जोकर त' हुनकर मुँह नहि रहि गेल छलनि। किएक त' सभटा अपने किरदानी रहनि। डाक्टरी पढ़ितो कोनो सुस्थिर विचारक लोक त' ओ छला नहि। शुरुहे सँ ई देखल जा सकैत अछि जे राधा ने विचारवान लोक रहथि ने हुनका मे कोनो समीचीन निर्णय लेबाक क्षमता रहनि। ओ त' जेना हवा मे पताइत चल' बला लोक रहथि। राधाक विपरीत तिरु अपन स्टैण्ड पर कायम रह' बाली स्त्री रहथि। भले ही ओ स्टैण्ड एक पारम्परिक मैथिल स्त्रीक होइक। मुदा ओ एम्हर-ओम्हर डोल' बाली नहि छली। जेहेन परिवेश ओ वातावरण मे पालित-पोषित रहथि ताहि मे ओ पति परमेश्वर लग एहि सँ फराक किछु कोना क' सकैत छली? तैं ओ अपन लीक धेने चलैत रहली। मुदा एहि सभक बाबजूद ओ चिचिअएली नहि। पतिक पैर नहि पकड़लनि। समर्पण नहि केलनि। गिड़-गिड़ेली नहि। दयाक भीख सेहो नहि मंगलनि। सत्त पुछू त' यैह सभ बात राधा के छटपटी छोड़ा देलकनि। ओ दोसर विवाह कर' नहि जा सकला। धुस द' बैसि रहला। ई कोनो कम बात नहि भेल। एहि प्रकारें ई कहल जा सकैत अछि जे अन्ततः राधा विवाह के खेलौड़ मानै वला समाज सँ अपना के बिलगा लेलनि। अपना के बचा लेलनि। ललका पागक मर्यादा रहि गेल। मुदा जाहि प्रकारक कथा सभ ल' क' राजकमल बाद मे चर्चित भेला, हुनकर विरोध भेल, खिधांश भेल ताहि प्रकारक कथा ललका पाग नहि छी। स्वाभाविक अछि जे तैं पारम्परिको लोक कें एहि कथा सँ कोनो आपत्ति नहि भेलनि। मुदा एहि कथा मे तिरु एकटा स्त्रीक माध्यम सँ प्रतिरोध करबाक बीज ताकब वस्तुतः समय सँ आगुक गप होयत। ललका पाग तँ भावनाक परिधि मे अपन कारबार करैत अछि। तैं एहि कथा के दमयन्ती हरण, हरिद्वारवास, कमलमुखी कनियाँ, ननदि भाउज आदि कथाक संग पढ़ल जाय तखन ई स्पष्ट होयत जे ई कथा कोना सर्व स्वीकार्य कथा बनि गेल। एहि क्रम मे ई नहि बिसरबाक छी जे ललका पाग राजकमल चौधरीक अपने सँ मैथिली मे लिखल पहिल कथा छी।

– स्मारिका, चेतना समिति, 2014

■

मायानन्द मिश्र

मायाबाबू नहि रहला। एकतीस अगस्तक भोर मे ओ चल गेला। युवा कवि अजित आजाद मोबाइल पर दुखद सूचना देलनि। मर्माहत भ' गेल रही। एक दिन पहिने अस्पताल मे हुनका देखि क' आयल रही। स्थिति ठीक नहि रहनि। बेहोश जकाँ सूतल देखने रहियनि। इलाज चलि रहल छलनि। किछु दिन पहिने अस्पताले मे जेना स्वस्थ हुअ' लागल रहथि। अपन युवा साहित्यिक मित्र सभ कें देखि क' भरिसक अहू अवस्था मे नव जोश आबि गेल रहनि। साहित्य अकादेमी मे मैथिलीक प्रवेशक कथा सुनाब' लागल रहथि। पण्डित नेहरुक समक्ष सुनाओल अपन कविताक पाँती सभ गुनगुनाब' लागल रहथि। सभ लोक हुनका बजैत देखि प्रसन्न भ' रहल छल। मुदा ओ बेर-बेर कहि रहल छला, 'ने ओ जमाना रहल, ने ओ जवानी रहल।' हुनकर स्वास्थ्य अचानक फेर खराब भेलनि आ खराबे होइत चल गेलनि। पटनाक प्राइवेट अस्पताल सँ हुनका इन्दिरा गांधी आर्युविज्ञान संस्थान आनल गेल। ओतुका डाक्टर सभ पूरा कोशिश केलनि मुदा अन्ततः ओ चले गेला। हुनकर गेला सँ मैथिली साहित्यक क्षेत्र मे एक युगक अन्त भ' गेल।

मायानन्द मिश्र स्वरूपवान रहथि। गोर-नार। नाम। सुदर्शन। कोनो सभा मे पहुँचि जाथि त' लोक सभ हुनका देखबा-सुनबा लेल उत्सुक भ' जाय। ओ सभारोशन व्यक्ति रहथि। सुमधुर गीतकार रहथि। सांस्कृतिक कार्यक्रम आ कवि सम्मेलनक दुलारु उद्घोषक रहथि। जे सभ हुनका मंच पर देखने-सुनने छथि, से सभ हुनकर जादूगरीक खिस्सा सुनबैत नहि थकैत छथि। हुनका गीतक राजकुमार कहल गेल। रेशमी भावनाक कथाकार कहल गेल। जे हुनकर गीत सुनलनि से मंत्र-मुग्ध भ' गेला। जे हुनकर कथा पढ़लनि, ओ हुनकर विलक्षण कथन-शैलीक प्रशंसक भ' गेला। कथाक मार्मिक, आकर्षक प्रसंग सभ के बिसरि नहि सकला। आइयो ओहि प्रसंग सभ के मोन पाड़ैत छथि। कतेको लोक भेटि जेता जिनका लग माया बाबूक

बहुतो स्मृति अछि। मारिते रास खिस्सा-पिहानी अछि। प्रसिद्ध साहित्यकार हरिमोहन झाक बाद मायानन्द मिश्रे रहथि जे मैथिली भाषा-साहित्य के आम लोक धरि व्यापक रूप सँ लोकप्रिय बनौलनि।

ओ आकाशवाणी पटनाक चौपाल कार्यक्रम सँ सेहो किछु वर्ष तक जुड़ल रहला। कृषक सभ लेल विशेष रूप सँ प्रसारित एहि कार्यक्रमक 'घूटर भाइ'क रूपमे ओ प्रसिद्ध भ' गेला। गप कहबाक अपन विशिष्ट शैलीक कारण हुनकर चर्चा हुअ' लागल। आकाशवाणी हुनकर लोकप्रियता के बढ़ौलक। ओहि सँ पहिने सन् 1950 ई० सँ अपन सुमधुर गीतक कारण हुनका प्रसिद्धि भेट' लागल रहनि। तुलसी जयन्ती, विद्यापति जयन्ती सभमे श्रोतालोकनि हुनकर गीत पर झूम' लागल रहथि। 'मैं अंतर में तूफान लिए चलता हूँ, मैं ध्वंसों में भी निर्माण लिए चलता हूँ।' आ 'नभ आंगन मे पवनक रथ पर कारी-कारी बादरि आयल।' मैथिली ओ हिन्दी गीतक ओ प्रिय गायक बनि गेला। हुनका सुर-तालक सेहो ज्ञान रहनि। जेकर प्रशंसा संगीत विशेषज्ञ सेहो करथि।

मायानन्दक मामा रामकृष्ण झा 'किसुन' मैथिलीक प्रसिद्ध साहित्यकार रहथि। मैथिलीक आधुनिक कविता के प्रतिष्ठित करबा मे हुनक महत्वपूर्ण भूमिका रहल अछि। हुनके संग सुपौल मे रहि मायानन्द स्कूली शिक्षा पूर्ण केलनि। साहित्यक प्रति लगाओ सेहो मामेक सानिध्य मे उत्पन्न भेलनि। किसुनजी सुपौल मे पुस्तकालय स्थापित केने रहथि। स्कूलीए जीवन मे मायानन्द ओही पुस्तकालय मे बैसिक' बंगला ओ हिन्दी साहित्यक परिचय प्राप्त केलनि। दुनू भाषाक अनेक साहित्यकारक रचना सभ के पढ़लनि। मैथिली मे हरिमोहन झाक रचना सभ कें हुनकर मामा घर पर सुनाओल करथि। सम्पूर्ण परिवार बैसिक' सुनय। मायानन्द मिश्र पर प्रारम्भ मे एही कारण हरिमोहन झाक जबर्दस्त प्रभाव रहल। हुनके तर्ज पर कथा लिख' लगला। ऐहेन कथा सभक एक संग्रह 1951 मे 'भांगक लोटा' नाम सँ प्रकाशित भेल। एकर बाद ओ कालेजक पढ़ाइ लेल दरभंगा आबि गेल रहथि। दरभंगो मे हुनका लोकप्रिय कवि चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'क स्नेह-संरक्षण भेटल। मायानन्द, अमरजीक संग कवि सम्मेलन मे जाय लगला। फेर अकस्मात् हुनकर भेंट कथाकार ललित सँ भ' गेलनि। राजकमल चौधरी सँ भेलनि। ललित-राजकमल-मायानन्द आ हुनकालोकनिक दोस्त सभक गोष्ठी

दरभंगा मे जम' लागल। केवल कथा-कहानीक चर्चा। नव-नव कथ्य ओ शिल्पक खोज। धुरझार बहस। एहना मे मायानन्द हुनका सभ संग मीलि नव-नव कथा लिख' लगला। हरिमोहन झाक प्रभाव सँ दूर हटि अपन निजता स्थापित केलनि। ललित-राजकमल-मायानन्दक तिकड़ी आधुनिक मैथिली कथा के नव मोड़ देलक। 'आगि, मोम, पाथर' आ 'चन्द्रबिन्दु' हुनकर प्रसिद्ध कथा-संग्रह थिक। मैथिली अकादेमी सँ 'अभिनन्दन' नाम सँ नव संग्रह आयल अछि। एहि संग्रह के छपल ओ देखि नहि सकला। मैथिलीक प्रसिद्ध कथाकार राजमोहन झाक कहब छनि जे, 'चन्द्रबिन्दु (संग्रह) धरि माया बाबूक कथाकार मोटामोटी व्यक्तिपरक छल। मानव-मनक राग-विराग, नेह-छोह, संघर्ष-उल्लास, आदिक ताना-बाना मे ओकर मन बेसी रमैत छल। बादक कथा सभ मे एहि परिधि सँ बहरा अपेक्षाकृत एकटा व्यापक आ वृहत्तर भाव-भूमि सँ ओ कथ्य चुन' लगला। ई प्रचेष्टा ई सिद्ध करैत अछि जे माया बाबूक कथाकार, सभ कथाकार जकाँ, अपन बनल-बनाएल छवि कें तोड़बाक, ओहि सँ ऊपर उठि जयबाक प्रवृत्ति वा आवश्यकता अनुभव करैत अछि। आ खाली अनुभवे नहि करैत अछि, सफलतापूर्वक क' क' देखाइयो दैत अछि। 'भांगक लोटा' बेर मे पहिनहुँ देखा चुकल अछि।' कथाक अतिरिक्त मायानन्द मिश्र कविता, गीत, नवगीत सेहो लिखलनि। अपन किछु गीत के ओ 'गीतल' नाम सेहो देलनि। 'दिशान्तर' नाम सँ हुनक कविताक आ 'अवान्तर' नाम सँ गीतक संग्रह पूर्वहिं प्रकाशित भ' चुकल अछि। ओ 'अभिव्यंजना' नाम सँ मैथिलीक एक साहित्यिक पत्रिकाक सम्पादन सेहो केने रहथि।

मायानन्द मिश्र मैथिली ओ हिन्दी मे उपन्यास सेहो लिखलनि। मैथिली मे हुनक पहिल उपन्यास 'बिहाड़ि-पात-पाथर' बहुत लोकप्रिय भेल रहय। ई उपन्यास 1960 मे प्रकाशित भेल छल। पहिनेक मैथिली उपन्यास सँ फराक चारित्रिक द्वन्द्वक चित्रणक कारण ई उपन्यास आकर्षित करैत अछि। मैथिली मे हिनकर तीन उपन्यास आर अछि। 'खोंता आ चिड़ै', 'मंत्रपुत्र' आ 'सूर्यास्त'। 'मंत्रपुत्र' पर हिनका साहित्य अकादेमी पुरस्कार सेहो भेटलनि। 'खोंता आ चिड़ै' उपन्यास मिथिलाक निम्नवर्गक जीवन-प्रसंग के प्रकाश मे अनबाक कारणे विशेष रूप सँ उल्लेखनीय अछि। परन्तु हिन्दी मे प्रकाशित हिनक उपन्यास 'माटी के लोग सोने की नैया' उपन्यासकारक

रूपमे मायानन्द मिश्रक श्रेष्ठता के अधिक प्रतिष्ठित करैत अछि। मिथिलाक कोशी नदीक कात मे बसल मछुआ-मल्लाह-कृषकक जीवन-संघर्ष के चित्रित कर'बला ई एक रोचक उपन्यास थिक। एही अंचलक बनैनियाँ गाम मे 17 अगस्त 1934 कें मायानन्द मिश्रक जन्म भेल रहनि। आइ ओहि गामक कोनो अस्तित्व नहि अछि। कोशी सम्पूर्ण गाम के अपना मे समाहित क' लेलक।

अपन गीत, कविता, कथा तथा मैथिली मे बिहाड़ि-पात-पाथर, ,खोंता आ चिड़ै, हिन्दी मे माटी के लोग सोने की नैया, उपन्यास सभक बाद मायानन्द मिश्र प्राचीन इतिहास आ मानव सभ्यताक शुरूआती विकास-प्रसंग सभक दिस आकृष्ट भेला। हिन्दी मे एहि श्रृंखलाक हुनकर चारिटा उपन्यास प्रकाशित भेल। प्रथमं शैल पुत्री च', मंत्रपुत्र, पुरोहित आ स्त्रीधन। स्त्रीधन वर्ष 2007 मे नेशनल बुक ट्रस्ट सँ प्रकाशित भेल अछि। 'मंत्रपुत्र' मैथिली आ हिन्दी दुनू भाषा मे लिखल गेल अछि। 'प्रथमं शैल पुत्री च' मे ईसा पूर्व बीस हजार सँ ईशा पूर्व अठारह सय तक के कालखण्ड के कथा-सूत्र मे बन्हबाक प्रयास कयल गेल अछि। मनुक्ख द्वारा हाथ आ दिमागक एक संग उपयोग, आगिक खोज, संग्रहक संस्कृतिक जन्म, हजारो वर्षक संघर्ष सँ प्राप्त उपलब्धि सभक, विकास-परम्परा के एहिमे प्रस्तुत कयल गेल अछि। मंत्रपुत्र आर्यावर्त्तक जन्म कथा थिक। सरस्वती सँ यमुना तट धरि आर्य तथा आर्य-संस्कृतिक प्रचार-प्रसारक प्रक्रिया आ आर्य-अनार्यक द्वन्द्व-मिलनक घटना के एहिमे चित्रित कयल गेल अछि। पुरोहितक काल-सीमा उत्तर वैदिक युगक ब्राह्मण काल ई०पू० 1200 सँ ई०पू० 1000 थिक। ई उपन्यास ओहि कालखण्डक शिक्षा कार्य, पौरोहित्य कर्म, कृषि-कर्म, राज-काज आ मानवीय जीवन-दर्शनक चित्र उपस्थित करैत अछि। सरस्वती नदीक सूखि गेलाक कारण सरस्वती-पूजन क प्रारम्भ हेबाक कथा सेहो एहि मे कहल गेल अछि। सूत्र-स्मृति कालीन मिथिलाक इतिहास पर आधारित एहि श्रृंखलाक चारिम उपन्यास, स्त्रीधन मे मिथिलाक राजतंत्रक समाप्ति, जनक वंशक अंतिम राजा कराल जनकक अन्याय, दुराचार, स्वेच्छाचार आ एक कुमारि कन्याक संग कयल गेल दुर्व्यवहार सँ राजवंशक पतन एहि कथा मे अछि। माया बाबू स्वयं एहि उपन्यास सभ कें इतिहासाख्यान कहलनि अछि। वस्तुतः विलक्षण भाषा-शैली एवं कथात्मकता

कारणे ई उपन्यास सभ अत्यन्त पठनीय बनि गेल अछि। सरसता, सहजता आ सामंजस्यक गुण सँ सम्पन्न अद्भुत कल्पनाशीलताक कारण ई उपन्यास सभ अपन एक फराक छवि निर्मित करैत अछि। मायानन्द मिश्र समन्वयक संस्कृति सम्बन्धी विचार सँ ओतप्रोत भ' पात्रक चरित्रांकन मे विशिष्ट दक्षता प्रदर्शित केलनि अछि। प्रेम तथा दाम्पत्यक चित्रण मे माया बाबू सदैव बेजोड़ रहल छथि। प्रेम हुनकर स्थायी भाव रहल अछि। मायानन्द मिश्रक अपन दृष्टिकोण सँ भारतीयताक खोज सेहो एहि उपन्यास सभक माध्यम सँ करैत छथि। मुदा ई भारतीयता साधारण जनक भारतीयता नहि भ' क' सम्भ्रान्त जनक भारतीयता थिक। हिनकर मैथिली उपन्यास 'सूर्यास्त' सँ सेहो लेखकक एहि दृष्टिकोणक पुष्टि होइत अछि। ई उपन्यास भारत मे रहयबला अंग्रेज सभक संस्कार मे भारतीयताक खोज थिक। ई अपन अध्ययन-शोध सभ पर 'भारतीय परम्पराक भूमिका' नामक पोथी सेहो मैथिली मे लिखने छथि। मैथिली साहित्यक इतिहास नामक हिनक पोथी सेहो प्रकाशनाधीन अछि। जेकर प्रतीक्षा पाठक कें बेसब्री सँ छैक। (ई पोथी प्रकाशित भ' गेल अछि।) मायाबाबू अपन जीवन-काल मे बहुतो उपलब्धि हासिल केलनि। सम्मानित आ प्रतिष्ठित भेला। प्रबोध साहित्य सम्मान सँ सेहो हिनका सम्मानित कयल गेलनि। अनवरत ओ साहित्य आ भाषाक सेवा मे लागल रहला। शोकक नदी कहबैबला कोशीक कछेड़ मे जन्म ल' क' मिथिला आ भारत भरि मे ख्याति अर्जित केलनि। आकाशवाणी, पटना सँ ओ सहरसा मे कालेज मे प्राध्यापक भ' गेला। प्राध्यापक रूपमे ओ विद्यार्थी सभक बीच लोकप्रिय रहला। हुनकर नेतृत्व मे छात्रलोकनि मैथिली लेल आन्दोलन केलनि। वर्ष 1994 मे ओ विश्वविद्यालयक सेवा सँ सेवानिवृत भेला। अन्तिम समय धरि हुनका मे जोश-खरोश, भाषा-साहित्यक चिन्ता, किछु आर सृजित करबाक ललक बनल रहल। ओ कठिन परिश्रम केलनि। अपार लोकप्रियता पौलनि। समाजक आम लोक हुनका हुनक सुमधुर गीतक कारण, रोचक गपक छवि-छटाक कारण, जादुई आवाजक कारण, समाज आ साहित्यक बहुमूल्य आ बहुमुखी सेवाक कारण सदैव मोन राखत।

स्मारिका, मैथिल समाज, रहिका, 2014

■

प्रभास कुमार चौधरी

प्रभासजी चल गेला। मुदा हमरा लोकनिक लग बहुतरास प्रश्न छोड़ि गेला। बहुतरास प्रश्न हुनकासँ पुछबोक छल। बहुत-बहुत गप करबाक छल। मुदा से नहि भ' सकल। 'सन्धान'क लेल हुनकासँ अन्तरंगवार्त्ताक क्रममे बहुत तैयारी केने रही। हुनक सभ पोथी पढ़ि गेल रही। सभटा कथा पढ़ि गेल रही। प्रश्नावली तैयार क' हुनका पठौलियनि। ओ गछने रहथि जे एहि बेर आयब त' अहाँक उत्तर लेने आयब। मुदा उत्तर नहि आयल। आयल हुनक मृत शरीर। ओ हमरा कहि नहि सकला जे –

- कोन उद्दाम भूख, कोन अतृप्ति हुनकासँ लिखबैत छनि? एतेक रास सृजनात्मक काज करबैत छनि?
- कोनो बुढ़िया वा मोदिआइन, झिल्ली-मुरहीवाली स्नेहिल स्त्रीक सानिध्य हुनका किएक नीक लगैत छनि?
- पूर्व जमीन्दार परिवारक जेठ बेटा होयब केहेन लगैत छनि हुनका?
- अपन नेनपन किएक एतेक पसिन्न छनि?
- हुनकर नायक लोकनि अपन नेनपनक सखी जेना-चम्पा, नीरू, बिढ़नी आदि के अपन कैरियरक पाछू छोड़ैत रहला। कहियो हुनकर हाथ पकड़बाक हिम्मति किएक नहि भेलनि?
- की हुनका लगैत छनि जे पतिक कर्त्तव्य बहुत जटिल भेल जा रहल छैक? लोक निखालिस 'अपन सुख' किए भोग' चाहैए?
- बंगाली स्त्री हुनका किएक नीक लगैत छनि? मैथिली उपन्यासकार बंगलासन 'इन्द्रजाल' किएक नहि रचि पबैत छथि?
- की ओ अपन रचना सभक माध्यमे अपन आत्मकथा लीखि गेल छथि?

आब प्रभासजी एहि सभ प्रश्नक उत्तर कहियो ने द' सकता। आब त' हमरे सभके एकर उत्तर ताक' पड़त। हुनकर रचना मे...।



पछिला वर्षक घटना थिक। इलाहाबादमे विद्यापति पर्वक संग प्रो॰ हरिमोहन झाक स्मृति दिवस सेहो रहय। हम, शिवशंकर श्रीनिवास, मोहन भारद्वाज, विभूति आनन्द, रमानन्द झा 'रमण' आदि संगहि गेल रही पटनासँ। इलाहाबादमे तारानन्द वियोगी सेहो पहुँचला। कार्यक्रमसँ ठीक किछु क्षण पूर्व। हमरा सभकें प्रसन्नता भेल। आब जमि गेलैक। गप्प चलतैक। हमरा, वियोगी आ शिवशंकर के फूटसँ बहुत रास गप्प करबाक छल। योजना सभ बनेबाक छल। तैं निश्चय भेल जे आइ राति कार्यक्रमक बाद तीनू गोटे एल॰ आई॰ सी॰ गेस्ट हाउससँ होटलमे चल जाइ। वियोगी होटल मे ठहरल छला। हम आ शिवशंकर गेस्ट हाउसमे रही। वियोगी होटलेमे चलबाक लेल आग्रह केलनि। आरामो करब आ गप्पो करब। एक्कहिठाम रहब। कार्यक्रम चलि रहल छल हिन्दी साहित्य सम्मेलन भवनमे। हम प्रभासजीकें कहलियनि जे हम तीनू गोटे रातिमे कार्यक्रमक बाद गेस्ट हाउससँ होटलमे चल जायब। ओ अकचकेला,

- रातिमे कोना जायब?

- किए? चल जायब। रिक्शा क' लेब।

- नहि, रिक्शा ओतेक राति के नहि भेटत। गेस्ट हाउससँ होटल दूर छै। हमरो सभके जिद्द लागि गेल छल। कहलियनि,

- की हेतै? पैरे चल जायब? तीनू गोटे। प्रभासजी कने तमसेला।

- पैरे कोना चल जायब? समान सभ ल' के। अन्हार सुनसान राति। शहरक स्थिति ठीक नहि रहैत अछि। ओ हमरा सभक जिद्दसँ चिन्तामे पड़ि गेला। मुदा हम सभ अपन योजनाके कार्यान्वित करबा पर अड़ल छलहुँ। कहलियनि,

- तखन कोनो गाड़ीक इन्तजाम भ' जइतए। गाड़ी पहुँचा देत।

- गाड़ीक त' दिक्कत अछि। ओ सोच' लगला। फेर कहलनि, एकटा भ' सकैए। हमरा उषाजी (श्रीमती उषाकिरण खान) के स्टेशनसँ आबि क' गेस्ट हाउसमे ठहरेबाक अछि। तकर बाद अहाँ सभकें हम पहुँचा देब। मुदा एहिमे बारह-एक बाजि सकैए। हमरा सभके कोनो हर्ज नहि छल। कखनो रातिमे पहुँचि जाइ। गेस्ट हाउसमे जाक' खा-पीबि गप्प-सप्पमे लागि गेलहुँ। करीब एक बजे रातिमे प्रभासजी, उषाजीक संग अयला। उषाजी अपन कोठलीमे चल गेली। प्रभासजी ओहीठाम हमरा सभक लग बैसि गेला। गेस्ट हाउसक खानसामा के अपना आ उषाजीक लेल खेनाइ अनबा लेल कहलथिन। उषाजी सेहो मुँह-हाथ धो क' अयली। टेबुल पर ओ दुनू गोटे खाइत रहला। गप्प होइत रहल। हमरा सभ के बूझल छल जे प्रभासजी ओ उषाजी स्कूलक संगी छथि। तैं स्कूल दिनक गप्प सभ पूछि देलियनि। ओ लोकनि स्मृतिमे चल गेला। विभोर होइत अनेक प्रसंग सुनौलनि। उषाजी सेहो सुनब' लगली। हमरा लोकनि हम, शिवशंकर आ वियोगी मैथिलीक दू ख्यातनामा कथाकारसँ हुनकर नेनपनक कथा सुनि रहल छलहुँ। दुनू सिद्धहस्त कथाकार। समयक कोनो ज्ञान नहि रहल। ने हमरा सभके रहल आने हुनके लोकनिकें रहलनि। अकस्मात् प्रभासजी उठला। अरे, अहाँ सभकें त' होटलो छोड़बाक अछि। जखन ओ हमरा तीनू गोटाके होटल छोड़लनि त' राति करीब-करीब शेष भ' रहल छल। भोरहरबामे हम सभ होटलमे जा क' सुतलहुँ। प्रभासजी कहि गेला जे भिनसर नौ बजे तैयार रहब। फेर होटलसँ खेबा-पीबाक हेतु गेस्ट हाउस पहुँचा देब। ओ ठीक नौ बजे पहुँचि गेला। हम सभ सोचने रही जे नौ बजे धरि पहुँचि नहि सकता। तै पर सँ गप्पक सुरसरिधार। प्रभासजीक संग नहि जा सकलहुँ तैयार भ' क'। बादमे गेलहुँ। लताम-केरा खाइत। घूमैत-फिरैत। अपनाके किछु स्वतंत्र अनुभव करैत...। मुदा प्रभासजीक चिन्ता, उत्तरदायित्व आ ममत्व मोन पड़ैत रहल हमरा सभकें।

सगर राति दीप जरय अथवा युवा लेखन कार्यक्रम सभमे ओ हमरा सभके बड़ काज अढ़बैत छला। व्यवस्थापरक नहि। कार्यक्रमपरक। हमरा सभके हरदम आगूमे राख' चाहैत छला। अक्सर कार्यक्रमक संचालन आदि

लेल हमरा भार दैत रहैत छला। बीच-बीचमे निर्देश सेहो चलैत छल। ओ चाहैत रहैत छला जे हम सभ कतहु एम्हर-ओम्हर नहि जाइ हरदम कार्यक्रममे बैसल रही। मनोयोग पूर्वक भाग ली। हुनकर आँखिक सोझाँ रही। एम्हर दू-दू दिना कार्यक्रम ओ संचालित आ आयोजित कर' लागल रहथि। कार्यक्रम लगातार चलय। सगर राति, फेर पूर्वाह्न सँ साँझ धरि दोसर कार्यक्रम। विभिन्न तरहक सृजनात्मक वैचारिक कार्यक्रम। मोन-दिमागके चैन नहि। हम सभ कखनहुँ के आँखि बचाक' निकलि जाइत छलहुँ। पान खा' अबैत छलहुँ। कने बाहर जा मोन बहटारि अबैत छलहुँ। मुदा निकलियो क' ई चिन्ता बनल रहैत छल जे बेसी देरी नहि लागय। प्रभासजी तकैत हेता। कहियोके घूमि क' फेर कार्यक्रममे बैसी त' कहथि-अहाँसभ पान खाइ लेल निकलि गेल रही? थम्हू! एहीठाम पान मंगा दैत छी। फेर कोनो कार्यकर्ता के बजा पान अनबा लेल कहथि। हम सभ मुसकुराइत रही। किछु नहि कहि सकियनि।

सगर राति...मे आधा रातिक बाद ओ कने पसरि जाइत छला। आँखियो मूनि लैत छला। शुरूमे हमरा सभके लागय जे ओ सूति रहला। कथा नहि सुनलनि। मुदा से बात रहैत नहि छल। ओ आँखि मुनने सभटा सुनैत रहैत छला। से जखन ओ कथा पर अपन प्रतिक्रिया व्यक्त करैत छला त' स्पष्ट भ' जाइत छल। कथा हुनका सम्पूर्ण मोन रहैत छलनि। ओ पात्रक नाम आ स्थल आदि चिन्हित क' अपन प्रतिक्रिया दैत छला। कतेक बेर हमरा सभके लागल अछि जे कथामे ओ एहन बिन्दु दिस ध्यान आकृष्ट क' रहल छथि जे कथा लिखबाककाल दिमाग मे नहि आयल छल। कथा हुनकर प्रिय विधा छलनि। कथा ओ रूचिपूर्वक सुनितो छला आ पढ़ितो छला। वास्तवमे कथा ओ नीक जकाँ बुझितो छला। कोनो कथाकारके सगर रातिमे ई शिकायत हुनकासँ नहि भ' सकैत छलनि जे ओ कथा नहि बुझलनि। कतेक बेर उलटा वा भखरल, अस्पष्ट प्रतिक्रिया व्यक्त करैत अनेक महानुभावके अपन सटीक आ सोझराएल टिप्पणी सँ ओ आलोकित क' दैत छला।

प्रभासजीके दू बेर हर्ट एटैक भ' चुकल छलनि। स्वाभाविक अछि जे परिवारक लोक-शुभचिन्तक हुनकर स्वास्थ्य लेल चिन्तित रहैत छल। मुजफ्फरपुरमे वर्ष 1990 मे पहिल सगर राति...क आयोजनसँ पूर्व ओ अस्वस्थ भेल रहथि। हुनका रात्रि जागरण नहि करक चाहैत छल। मुदा ओ माननिहार नहि। कतेक लोक एहि दुआरे सगर राति...मे इच्छा रहितो भाग नहि ल' पबैत छथि जे स्वास्थ्य एहि लेल हुनका अनुमति नहि दैत छनि। रात्रि-जागरणक कष्ट ओ नहि उठा सकैत छथि। समय पर सुतनिहार, समय पर खेनिहार लोक एको दिनक व्यतिक्रम बरदास्त नहि क' पबैए। मुदा एतेक अस्वस्थताक अछैतो, भारी शरीरक संग भरि राति जगैत प्रभास कुमार चौधरी साहित्यक प्रति आ साहित्यिक गतिविधिक प्रति अपन प्रतिबद्धता आ उद्देश्यपूर्ण जीवनक प्रति निष्ठाक प्रमाण लगातार उपस्थित करैत रहला। देह कहियो एहिमे बाधा उत्पन्न नहि केलकनि। देहके कहियो अवरोधक ओ नहि हुअ' देलथिन। जीवनक अन्तिम दम धरि सक्रिय रहला। एहेन सक्रियता जेकरा देखि ककरो एकर सेहन्ता भ' सकैए। एहेन स्नेह-सम्मान जाहि लेल कियो तरसि सकैए। मैथिली संसारमे हुनका प्राप्त अधिकार हुनक एही प्रकारक निष्ठा आ कर्तव्यपरायणतासँ अर्जित छल।



तारानन्द वियोगी कहैत छथि, 'मैथिली अपना सक्क भरि हुनका पूरा सम्मान देलकनि, मुदा ई बात सभ कियो मानता जे एहि सम्मानक पाछाँ हुनक रचनाशीलताक संज्ञान आ स्वीकृति कम, मैथिलीक लेल हुनका द्वारा कयल जाइबला सेवा बेसी जवाबदेह छल।' वियोगीक एहि वक्तव्य सँ परिस्थितिवश हम असहमतिक गुंजाइश नहि देखैत छी। ई वास्तवमे एक दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति अछि जे मैथिली क्षेत्रमे सृजनात्मकता सँ बेसी गतिविधिमे संलग्नता के पैघ स्थान देल जाइत अछि। कदाचित् मैथिली सेवामे एखन धरि लेखक-कविक रचना ओ ओकर अध्ययन-मनन पूर्ण रूपें सम्मिलित नहि भेल अछि। लेखकक रचना पढ़ब आ रचनाक आधार पर लेखकक सोच ओ विचारक महत्त्व स्थापन प्रारम्भ नहि भेल अछि। यदि किछु ठाम-ठीम प्रारम्भो भेल अछि त' ओकरा सर्वस्वीकृति नहि भेटल अछि।

मैथिली सेवक भइयो क' अधिकांश लोक मैथिलीक पाठक नहि होइत छथि। मात्र भाषा ओ ओकर अधिकार प्राप्ति धरि सीमित रहैत छथि। सेहो कोनो पर्व, करबेताक मानसिकताक संग भोज-भात, गीत-नादक सुख उठेबाक लोभ-लालसावश। भाषा लेल झण्डा उठायब सभ सँ पैघ कर्त्तव्य बूझल जाइत अछि। सम्पूर्ण रूपें निष्ठा ओ गम्भीरताक अभाव मैथिली क्षेत्रक दारुण यथार्थ बनिक' सोंझा आयल अछि। यैह कारण अछि जे मैथिली भाषायी आन्दोलन आ मैथिली भाषामे साहित्य सृजनक बीच एक द्वैध आ अन्तर्विरोध उत्पन्न भेल अछि। सृजनात्मक वातावरण निर्माण मे सेहो अवरोध उत्पन्न केलक अछि। प्रभासजी यदि अपन शताधिक कथा आ पाँचटा उपन्यासक रचनाक आधार पर कम आ एल॰ आई॰ सी॰ क बड़का हाकिम, उँच कुल-मूल आ मैथिलीक अन्य सेवाक आधार पर बेसी महत्वपूर्ण मानल जाइत छथि, तँ से एही यथार्थक उद्घाटन करैत अछि। जखन कि हुनकर वास्तविक महत्व एक रचनाकारक रूपमे अथवा रचनाक माध्यम सँ हुनक जे एक व्यक्तित्व बनैत अछि, ताहि आधार पर आंकल जेबाक चाही। तैं जखन शिवशंकर श्रीनिवास प्रभासजीक कथा पर विचार करैत ई कहैत छथि जे अपन भूमि ओ लोकक प्रति अद्भुत रूपें हिनक कथामे जुड़ाव अछि जे सभ बात मानवीय सम्बन्धके कवच प्रदान करैत अछि तँ ओ प्रभासजीक रचनाकार व्यक्तित्वकें रेखांकित करैत ओकरा महत्त्व प्रदान करैत छथि। एक रचनाकार के ओकर रचनाक माध्यम सँ जानल जेबाक बेगरता हेबाक चाही नहि कि मात्र अन्य गतिविधिमे सलग्नताक आधार पर। एहि बातक दुख प्रभासजीकें छलनि। एकर कारण तकैत मोहन भारद्वाज जखन प्रभासजीक साहित्यिक गुरु ललितक लेखन विमुखता पर टिप्पणी करैत लिखैत छथि जे 'पूंजीवादी व्यवस्थामे व्यक्ति वस्तु भ' गेल अछि सेहो पण्य वस्तु। ओकर उपयोगिता-मूल्य समाप्त भ' गेलैक अछि, विनिमय मूल्य मात्र शेष रहि गेल छैक। एहने पतित समाजमे हम सभ रहि रहल छी। ...ललित विनिमय मूल्य नहि, उपयोगिता मूल्य चाहैत छला। जे भेटबाक नहि छलनि। नहि भेटलनि।' तँ ओ मैथिली जगतक एही दारुण यथार्थ के स्वर दैत देखाइत छथि। ओना ई सत्य जे प्रभासजी कदाचित अपन गुरु ललितक पराभवकें देखि मैथिलीक अन्य

गतिविधिमे सेहो लगातार संलग्न रहला। तैं मैथिली सँ ओ अपन शक्क भरि पूरा सम्मान पौलनि। मुदा अपन रचनाक बल पर मैथिलीक पाठक आ आलोचक वर्ग सँ जे सम्मान आ स्वीकृति हुनका अपेक्षित छलनि से नहियें भेटि सकलनि। एकर कारणमे मैथिली साहित्य कें मैथिल बुद्धिजीवी वर्ग द्वारा अपेक्षित महत्त्व नहि देब सेहो लगैत अछि। ई एक तथ्य थिक जे मैथिल बुद्धिजीवी मैथिली साहित्य सँ आइयो धरि विमुख छथि। तैं ओ मैथिली रचनाकारक रचनाशीलताक संज्ञाने नहि लैत छथि। ओकर कोनो वास्तविक उपयोगिता नहि बूझैत छथि। यैह बात मैथिली सेवी वर्ग पर सेहो लागू होइत अछि। ई अपना लोकनिक क्षेत्रमे व्यक्तित्वक लगातार ह्रासक कारणे भेल अछि। जाहि व्यक्तित्वक गरिमा हमरा लोकनिक संस्कृतिक अभिन्न अंग रहल अछि से विभिन्न कारणसँ क्षरित-स्खलित भेल अछि।

प्रभासजी अपन गाम अपन भूमि ओ अपन लोक-वेदसँ सघन रूपें जुड़ल छला। सैह हुनकर सम्पूर्ण रचना-यात्रा सँ प्रकट होइत अछि। यैह सघन ओ सम्वेदनात्मक जुड़ाव हुनक उर्जाक स्रोत सेहो रहल अछि। प्रभासजी भने हिन्दीमे अनेक कथा लिखने होथि परन्तु मूलतः ओ मैथिलीक रचनाकार छला। विभिन्न प्रतिकूल परिस्थिति-स्थितिक संग ओ मैथिलीक रचनाकार एहि दुआरे रहि सकला जे हुनकर जुड़ाव ओ सम्बन्ध लगातार अपन लोक सँ बनल रहलनि। एहि कारणे प्रभासक कथामे, उपन्यासमे अनेक पात्र सेहो अबैत अछि जे अपन लगैत अछि-अविस्मरणीय बनि जाइत अछि। जेकरा बिसरब कठिन अछि। एहीठाम ईहो तथ्य स्पष्ट होइत अछि जे अपन सृजित अनेकानेक चरित्र सभक माध्यमे ओ सभ दिन हमरालोकनिक बीच जीवित रहता। ओ ओहिना जीवित रहता आ हमरा लोकनि ओहि तमाम प्रश्नक उत्तर तकैत रहब जे हुनकर रचना पढ़ि हमरा सभक मनमे उत्पन्न हैत। भने आब ओ अपन मुँहसँ एकर उत्तर देथि वा नहि जे...।

प्रवासी, मार्च-दिसम्बर, 1998

■

जीवकान्त

जीवकान्त के सभ सँ पहिने चेतना समितिक विद्यापति पर्व मे देखने रही। ओ पर्व एकासी-बिरासी ईसबीक रहय। पटनाक पुरनका बस स्टैंड लग हार्डिंग पार्कक ओहि अगगह सँ बिगह मैदान मे रंग-विरंगक रोशनी जरि रहल छल ओ उज्जर धोती-कुर्ता मे कोनो निछच्छ देहाती सन घूमि रहल छला। ऐनमेन कोनो खेतिहर जकाँ। हुनका जगमगाइत बिजलीक रोशनी मे भकचक लगैत छलनि। ओ जल्दी ओहि पर्वक मैदान सँ निकसि जाय चाहैत छला। कहलनि जे एते जगमग करैत रोशनी हुनका सँ सहल नहि जाइत छनि। गाम मे एते रोशनी नहि रहैत छै। अन्हार रहै छै। तेँ अन्हारेक हुनका अभ्यास छनि। एहन जगमगाइत तेज रोशनी मे हुनका कोनादन लाग' लगैत छनि। किछु काल लोक सभ सँ भेंट-घाँट, गप-सप क' ओ ठीके पर्व-स्थल छोड़ि चल गेला।

तकरबाद जीवकान्त केँ कतेक बेर देखलहुँ। कतेक बेर सुनलहुँ। हुनकर कतेको पोथी पढ़लहुँ। हुनकर कतेको चिट्ठी आयल। सोचैत रहलहुँ जे एक बेर निचेन सँ ड्योढ़ जायब। जीवकान्त सँ भरिपोख गप करब। मुदा से भ' नहि सकल। पटना आबथि त' भेंट हुअय। कहियो हुनक बालक अरुणजीक डेरा पर। एम्हर छोट बालक बरुणजीक डेरा पर। हुनका चलबा-फिरबा मे कष्ट हुअ' लागल रहनि। ठेहुन कज्जी भ' गेल रहनि। हुनकर कष्ट देखि मोन दुखी हुअय। एहन लोक के कतहु एतेक कष्ट होइ। एना कष्ट होइ। मुदा कष्टक परबाह केने बिना ओ गप करैत रहथि। मैथिलीक गप। साहित्यक गप। ओ जाबत रहला लोकक मोन के छेकने रहला। अपन विचार सँ। अपन पोथी सँ। अपन चिट्ठी सँ। अपन फोन सँ। आ जखन गेला त' आछन्न क' गेला।

किछु दिन पूर्व मायानन्द मिश्रक निधन सँ लोक शोकाकुल भेल छल। सहरसा मे भेल हुनक श्राद्ध सँ पटना घुरिते सुनलहुँ जे जीवकान्त सेहो नहि रहला। माया बाबू 31 अगस्त 2013 के चल गेल रहथि। चेतना समिति मे शोक सभा रहय। मंत्रेश्वर बाबू अपन श्रद्धान्जलि मे कहलनि जे माया बाबू एहन लेखक छला जिनकर परिचिति अखिल भारतीय स्तर पर छल। मैथिली मे लिखनिहारक अखिल भारतीय परिचिति नहि बनि पबैत अछि। हमरा लागल रहय जे नहि हमरा सभक बीच मे आइ एहन दोसर लेखक जीवकान्त छथि जे अनुवादक माध्यम सँ अखिल भारतीय ख्याति अर्जित केने छथि। से बात हम ओहि शोक सभा मे बजबो केलहुँ। तहिया ई नहि जनैत रही जे कनियें दिनक बाद जीवकान्तो हमरा सभ के छोड़ि क' चल जेता। ओ चल गेला। अकस्मात् चल गेला। जाइये त' सभ मुदा ककरो-ककरो जायब अद्भुत रूपें सीदित करैत अछि। पीड़ा दैत अछि।

मैथिली साहित्य मे जीवकान्त पचास वर्ष सँ सक्रिय रहथि। कविता लिखलनि। कथा आ उपन्यास लिखलनि। आत्मकथा, संस्मरण लिखलनि। टिप्पणी आ समीक्षा लिखलनि। मारिते रास चिट्ठी सभ लीखि क' विभिन्न लोक के पठौलनि। मैथिली साहित्य मे काज केनिहार एहन कियो विरले हेता जिनका लग जीवकान्तक कोनो चिट्ठी-पत्री नहि हुअय। जे कियो मैथिली मे काज करैत अछि तकरा ओकर खगताक अनुसार ओ अवश्य प्रेरित-प्रोत्साहित करैत छला। हमरा मोन पड़ैत अछि जे वर्ष 1987-88 मे ओ हमरा कहने रहथि जे कथा मे छोट-छोट वाक्य लिखू। हम हुनकर सुझाओ के अनुसार जे पहिल कथा लिखलहुँ से छल 'सरिसवक साग'। तकर बाद सँ कथा हो अथवा अन्य कथेतर गद्य, हम छोट-छोट वाक्य लिखबाक कोशिश करैत रहलहुँ। लगैत अछि जे एहि सँ रचना मे फर्क आयल। मैथिली मे बहुतो गोटय लग जीवकान्तक एतेक चिट्ठी अवश्य अछि जे सम्पादित क' छापल जाय त' फूट-फूट कतेक पोथी भ' जायत। मैथिली साहित्य लेल से महत्वपूर्ण होयत। प्रदीप विहारीक एहन चिट्ठी सभक एक पोथी हेबनि मे प्रकाशित भेल अछि।

जीवकान्तक पहिल मैथिली कविता 'इजोरिया आ टिटही' मिथिला-मिहिर मे जनवरी 1965 मे छपल। पहिल कथा 'हाहि' 1966 मे आयल। पहिल उपन्यास 'दू कुहेसक बाट' 1968 मे प्रकाशित भेल। एहि सँ पूर्व 1953-54 मे आर्यावर्त मे हुनकर हिन्दी कविता सभ प्रकाशित भेल रहय। मुदा मूल हिन्दी मे कोनो पोथी नहि अयलनि। जीवकान्त अपन हिन्दी लेखनक दस बरखक बाद मैथिली मे अयला। फेर हिन्दी मे कहियो नहि लिखलनि। खाली अपन मैथिलीक रचनाक हिन्दी मे कखनो क' अनुवाद करथि। से हिन्दीक पत्रिका सभ मे छपय। जीवकान्तक मैथिली रचनाक अनुवाद मैथिलीक आनो प्रसिद्ध रचनाकार सभ केलनि अछि। जाहि मे केदार कानन, नारायण जी, तारानन्द वियोगी आदि प्रमुख छथि। मैथिली मे कतेको एहन प्रसिद्ध लेखक छथि जे मैथिली आ हिन्दी दूनू भाषा मे लिखलनि अछि। एहि कारणे अखिल भारतीय ख्यातिक संग अपनो समाज मोजर देलकनि। मुदा जीवकान्त एहन विरल लेखक मे सँ छथि जे अपन मैथिलिए रचनाक कारण राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति आ परिचिति पौलनि। ओ विरल अहू कारणे छला जे अपन पाइ सँ पोथी छपा क' ओ उत्साहपूर्वक ओकर मुफ्त वितरण सेहो करैत छला। एहि सम्पूर्ण आयोजन के एक उत्सव रूप मे लैत छला। विशेषता ई जे एहि सँ हुनका आनन्द होइत छलनि।

जीवकान्त एक अद्‌भुत पढ़ाकू लोक रहथि। भरि जीवन गामे सभ मे रहला। मुदा डाक सँ पोथी मंगा क' पढ़ैत रहथि। संगहि पढ़ल पोथी सभक सम्बन्ध मे अपन मित्र सभ कँ चिट्ठी मे लिखितो रहथि। एहि प्रकारक अध्ययन सँ हुनकर अपन लेखन सेहो समर्थ भेलनि। ओहि मे व्यापकता आ गहराइ अयलनि। जीवकान्तक जीवन सम्पूर्ण रूपें एक साहित्यकारक जीवन छल। सहित्ये जेना जीवनक आधार छलनि। ओ सहित्ये सँ जीवन मे बल ओ सामर्थ पबैत छला। जीवने के साहित्य मे रचैत छला।

जीवकान्त कृषक आ शिक्षक दूनू रहला। हुनका पर दूनूक जीवन-दर्शनक प्रभाव रहलनि। एक खेतिहर परिवार मे जन्म भेलनि। पढ़ाइ मे अत्यन्त मेधाबी रहलाक बाबजूद इन्टरेक बाद शिक्षकक नौकरी कर' पड़लनि। साइंसक विद्यार्थी रहथि तँ विज्ञान पढ़ब' लगला। एक नीक शिक्षक रूप मे

सेहो विद्यार्थी-अभिभावकक बीच मे हुनकर ख्याति रहलनि। हुनकर गणना एक दक्ष शिक्षक आ विद्यार्थीक जीवन-निर्माता रूप मे समाज मे कयल जाय लागल। प्रदीप बिहारीक उपन्यास (शेष) मे शिक्षक जीवकान्त के सम्बन्ध मे चर्चा आयल अछि। हुनका बहुत आवेस आ श्रद्धाक संग स्मरण कयल गेल अछि। बाद मे ओ बी.ए. विशिष्टताक संग केलनि। फेर डिप. इन.एड. भेला। आई. एस. सी. 1957 मे केलनि त' बी. ए. सात बरखक बाद 1964 मे केलनि। डिप.इन.एड 1969 मे। हुनक जीवन दृष्टिक निर्माण मे तें कृषक आ शिक्षक दूनू वृत्तिक योगदान रहलनि। जीवकान्तक साहित्य एकर गवाही दैत अछि। ई दूनू वृत्ति एहन थिक जे मनुक्ख मे आत्मीयता आ व्यापकता अनैत अछि। परम्परा सँ कृषक आ शिक्षक केवल अपना लेल नहि जीबैत अछि। अन्न आ ज्ञानक वितरण क' ओ स्वतः सामाजिक बनि जाइत अछि। सामूहिकताक भावना ओकर कार्य-प्रणाली सँ सहजे उत्पन्न भ' जाइत छैक। तैं जीवकान्त नहि केवल अपन साहित्य सँ मैथिली साहित्य के समृद्ध केलनि अपितु आन बहुतो गोटय कँ प्रेरित-प्रोत्साहित क' मैथिली साहित्यक विकास लेल तत्पर केलनि। साहित्य सृजन हुनका लेल व्यक्तिगत काज नहि छलनि। व्यक्तिगत शुभ-लाभ लेल ओ कविता-कथा नहि रचलनि। मैथिली साहित्य आ समाजक सर्वांगीण शुभ-लाभ हुनकर हृदय मे रहनि। सर्वोपरि रूप सँ साहित्यक माध्यम सँ मनुक्खक मंगल कामना जे हुनकर दृष्टि मे अयलनि तकर जड़ि मे कृषक आ शिक्षक वृत्ति सँ उपजल जीवन दृष्टिए रहनि। मुदा समाज मे क्रमशः कृषक ओ शिक्षकक प्रति ओ धारणा नहि रहल। जँ जँ धनक घाँटी बाजब शुरु भेल तँ तँ कृषक आ शिक्षकक गौरव के हाशिया दिस ठेलबाक उपक्रम हुअ' लागल। एहन लोकक मोजर समाज मे कम हुअ' लागल। से समाज मे डीलर-लीडरक बढ़ैत वर्चस्वक कारणे भेल। एहि सँ कृषक आ शिक्षक दूनू कुंठित भेला। जीवकान्त एहि स्थितिक पीड़ा के भोगलनि। फलतः हुनकर रचना मे सेहो ई पीड़ा अभिव्यक्त भेल। जीवकान्तक कथा सभ के पढ़ैत ई लगैत छैक जे ई कथा सभ दुर्व्यवस्थाक संकट भोगैत निम्न मध्यमवर्गीय खगल लोकक कथा थिक। एहन खगल लोक जकरा लेल पाइक आमदनी बहुत महतवक बात छैक। हिनकर कथा ईहो बात कहैत अछि जे पाइक

आमदनी बढ़ेबाक काशिश करैत लोक क्रमशः ओकर स्रोतक प्रति जागरुक नहि रहल। श्रम सँ उपार्जनक प्रति निष्ठा-विश्वास जेना घटैत गेलैक अछि। एहना मे लोक कोना लम्पट होइत गेल अछि तकरो अनुभूति जीवकान्तक कथा करबैत अछि।

जीवकान्तक कथा-उपन्यास सभ पढ़ैत ओहि समयक मिथिला खास क' खेतिहर समाजक चित्र उभरि क' समक्ष अबैत छैक। मिथिलाक तत्कालीन समाजिक-जीवन, स्त्री-पुरुषक भीतर चलैत मानसिक परिवर्त्तन-प्रक्रिया, असगर होइत चल जेबाक संताप, निर्धनताक प्रति क्षोभ, व्यवस्थाक प्रति आक्रोश, बहुतो एहन यथार्थ अछि जे पाठक केँ बहुत प्रमाणिक रूप सँ संवेदित करैत छैक। आछन्न करैत छैक। जीवकान्तक कथा साहित्य नेहरू युगक बादक मोह-भंग कालक मिथिलाक गाम, खेती-बाड़ी, सामाजिक उथल-पुथल, क्षोभ-विक्षोभ, संताप आ आक्रोश के संस्पर्शी गद्यक संग बहुत प्रामाणिक रूपें अभिव्यक्त करैत अछि। हुनकर कथा हो वा कविता गाम मे रहनिहार असगरुआ स्त्री, चिड़ै-चुनमुनी, नदी-धार, गाछ-वृक्ष, रस्ता-पेड़ा, खोंड़ा, डबरा, चौर, माल-जाल सँ बहुत आत्मीयतापूर्वक परिचय करबैत अछि। मिथिलाक बदलैत गाम सँ जँ परिचित हेबाक हो, अपनैती करबाक हो त' जीवकान्तक साहित्य पढ़ब जरुरी थिक। जीवकान्त पण्डित पुत्रक गाम सँ फराक पृथ्वीपुत्रक गामक एक विरल चित्रकार छथि। हुनकर साहित्य अहाँके अपना भीतर तकबाक लेल प्रेरित करैत अछि। मनुक्खक भीतरक कुरूपता आ सुन्दरता के बहुत प्रभावकारी रूपें स्पर्श करैत अछि। एहि स्पर्श सँ जे स्वर निकलैत छैक से कहैत छैक जे कनेक आर सुन्दर मनुक्ख बनबाक लेल अग्रसर भेल जाय। लगैत अछि जे जीवकान्त एहि विचार मे विश्वास करैत छला जे सामाजिक रूप सँ सुन्दर मनुक्खे समाज-जीवन सँ कुरूपता के, असमानता के उकन्नन करबाक लेल डेग उठेबाक साहस क' सकैत अछि। मुदा हुनकर साहित्य मे सामूहिक प्रतिरोध वा व्यवस्था परिवर्त्तन दिस सामाजिक चेतना के ल' जेबाक उपक्रम नहि भेटैत अछि। ओ एहि विचार मे विश्वास करैत छला जे मनुक्ख बदलत त' व्यवस्था बदलत।

वर्ष 1990क नजदीक आबि क' जीवकान्त लोकक पीड़ा, क्षोभ-विक्षोभ, आक्रोशक बदला लोकक उल्लास आ उत्सवक, प्रेम-अनुरागक बात कर' लगला। हुनकर साहित्य खास क' कविता मे जीवन-सौन्दर्य और आस्थाक बात आब' लागल। एहि विन्दु पर कवि नारायण जीक संग भेंट-वार्ता मे ओ कहलनि जे-'जीवन एक कैलिडोस्कोप (बहुरूपदर्शी) होइत अछि। ओकरा जत्ते बेर घुमायब, नब आकार और नव सौन्दर्य देखाइ दैत अछि। हम चौंतीस वर्ष सँ सक्रिय लेखन क' रहल छी। लगातार विचार करबाक लेल जीवन के केलिडोस्कोप के घुमा-घुमा क' देख' पड़ैत छै। एहि सँ ऊब खतम होइ छै।' ओ इहो कहलनि जे-'जीवन मे बहुत रास सौन्दर्य आ उल्लास बचल अछि। ओकरा ताक' पड़ैत छै। हमरा ई ताकब नीक लगैत अछि। यैह हमर प्राणशक्तिक श्रोत थिक।' जीवकान्तक वर्ष 1990क बादक कविता सभ के पढ़ैत ई लगैत छैक जे ओ मनुक्खक जीवनक गरिमा के प्रकृति संग जोड़ि क' देख' लगला अछि। जीवनक एही गरिमा के कवि जीवनक सौन्दर्य कहैत छथि। हुनका एहि बातक दुख हुअ' लागल रहनि जे जीवनक आपाधापी मे जीबैत आजुक मनुक्ख एहि सौन्दर्य के नष्ट करबा मे लागल अछि। ओ मानैत छला कि ई मनुक्खक मर्यादाक विपरीत थिक। अपन कविता सभ मे जीवकान्त पोथी-पतरा, कविता, अखबार सभ के बढ़ैत जेबाक संग गाछ-वृक्ष, चिड़ै-चुनमुनी सभ के घटैत जेबाक विडम्बना दिस संकेत करैत छथि। जीवकान्तक कविता अपन भाषा, शैली, भाव-भंगिमाक संग जीवनक उल्लास के प्रकट करैत अछि।

पचास बरख धरि लगातार सृजनरत् जीवकान्त नब-नब तरहक कथा-कविता लिखैत रहला। जँ ओ कथा मे सीड़क, फसरी आ नानी सन कथा लिखलनि त' तेल आ नेपकिन सन कथा सेहो लिखलनि। जंगल मे चिड़ै, शहर जरि रहल अछि, प्रसन्नताक बात, गृहणी, ई कनटिरबी सन कविता लिखलनि त' बच्चा सभ लेल बउआ आ हमर अठन्नी खसलइ बन मे सेहो लिखलनि। पाँचटा उपन्यास लिखलनि। करीब दू सय कथा लिखलनि। कविता सभक संख्या हजार सँ कम नहि हैत। हुनकर बहुतो

रचना पोथीक रूप मे संग्रहीत नहि भेल अछि। जखन सभ संग्रहीत भ' समक्ष आओत तखन जीवकान्त के चिन्हबा मे बेसी सुगमता होयत।

तत्काल हमरा लेल ई अकानब जरूरी लगैत अछि जे जीवकान्त कें लगातार सृजनरत रहबाक जड़ि मे कोन तत्व रहय? एहि क्रम मे प्रथमतः हमरा लगैत अछि जे जीवकान्त के ई सम्पूर्ण जगत अद्भुत रूपें चकविदोर लगबैत रहलनि। हुनका भीतरक शिशु सभ दिन जागरूक आ जिज्ञासु बनल रहल। ओ शिशु एक-एक वस्तु के छूबि क' चीखि क' देख' चाहैत छल। एहि क्रम मे ओ कखनो पाकि जाइत छल। कखनो झरकि जाइत छल। कखनो ओकर मोन मधुर भ' जाइत छलैक त' कखनो अकत तीत। जीवकान्तक रचना हुनकर एही अनुभव ओ अनुभूतिक सुच्चा दस्तावेज थिक। संगहि अनुभव ओ अनुभूतिक सामंजस्य सँ निर्मित चेतना जीवकान्त के लगातार सृजनधर्मी बनौने रहल। हुनका सृजनरत् रखलक।

अप्रकाशित, 2014

■

आइ-काल्हि चमक-दमक आ भव्यता-दिव्यता जेना सभक आँखि मे बसि गेल अछि से बस्तु के देखबाक नजरिये बदलि देलक अछि। प्रत्येक बस्तु के अपन खास गुण होइत छैक, स्वभाव होइत छैक। बस्तु के ओकर खासियत मे देखबाक बदला ओहि मे चमक-दमक नीक लागब बस्तुक निजत्वक अनादर थिक।

धर्म, जाति, कुल आदि सँ मनुक्खक मान नहि बढ़ैत छैक। मान बढ़ैत छैक गुन सँ। मैथिली साहित्य मे मनुक्खक गुन के मान देवाक बात, मान्यता देबाक बात लोकधाराक उपजा थिक।

– एहि पोथी सँ



मैलोरंग प्रकाशन
मैथिली लोक रंग
651, चारिम तल, अग्रवाल चैम्बर-III
26, वीर सावरकर ब्लॉक
विकास मार्ग, शकरपुर, दिल्ली-92

मुद्रक : सरस्वती प्रेस, बोरिंग केनाल रोड, पटना
मो. 9304625963, 8002347276

ISBN : 978-93-82828-10-5



₹ 150/-